सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
You Tube

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 01, नई दिल्ली । बुधवार, 12 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं

03 दिल्ली में गंगा आरती की तरह भव्य होगी यमुना आरती....
06 कार्यबल में बढ़ती महिला शक्ति
08 आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: फॉरेंसिक साइंस और साइबर सुरक्षा में क्रांति

होली को लेकर डीएमआरसी ने जारी किए दिशानिर्देश

एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन सहित सभी लाइनों पर सुबह से दोपहर 230 बजे तक मेट्रो नहीं चलेगी

संजय बाटला

दिल्लीवासियों को होली पर घर से बाहर निकलने से पहले मेट्रो की गाइडलाइन जरूर पढ़नी चाहिए। दिल्ली मेट्रो ने होली के लिए दिशानिर्देश जारी किए हैं। 14 मार्च को दोपहर 230 बजे से ही मेट्रो सेवाएं शुरू होंगी। एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन सहित सभी लाइनों पर सुबह से दोपहर 230 बजे तक मेट्रो नहीं चलेगी। इसके बाद सभी लाइनों पर सामान्य रूप से मेट्रो सेवाएं जारी रहेंगी।

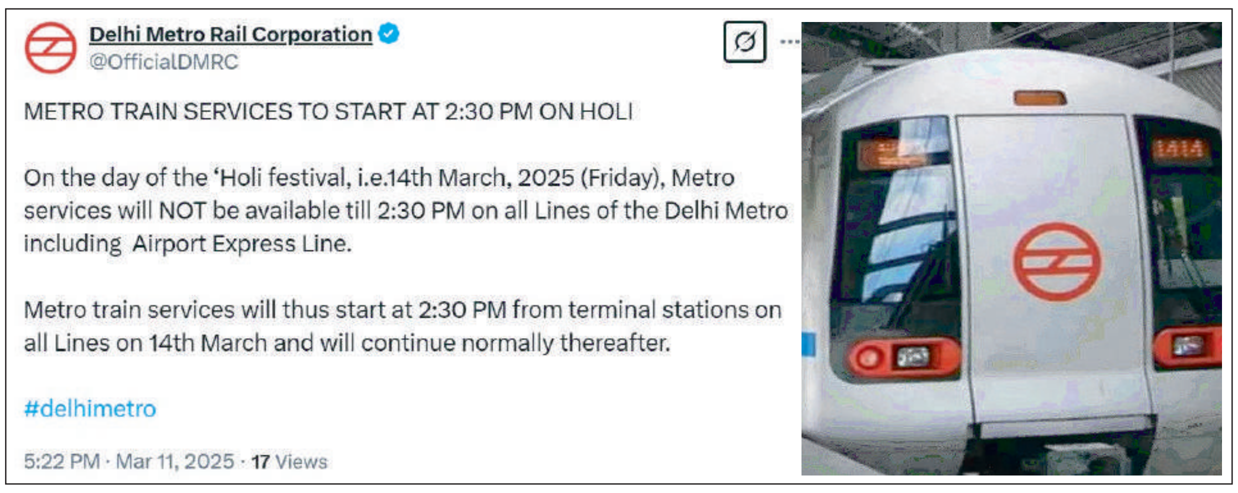
Delhi Metro Rail Corporation
@OfficialDMRC

METRO TRAIN SERVICES TO START AT 2:30 PM ON HOLI

On the day of the 'Holi festival, i.e.14th March, 2025 (Friday), Metro services will NOT be available till 2:30 PM on all Lines of the Delhi Metro including Airport Express Line.

Metro train services will thus start at 2:30 PM from terminal stations on all Lines on 14th March and will continue normally thereafter.

#delhimetro

5:22 PM · Mar 11, 2025 · 17 Views

नई दिल्ली। होली के दिन दोपहर 2:30 बजे से मेट्रो ट्रेन सेवाएं शुरू होंगी। होली के त्यौहार के दिन यानी 14 मार्च को एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन सहित दिल्ली मेट्रो की सभी लाइनों पर दोपहर 2:30 बजे तक मेट्रो सेवाएं उपलब्ध नहीं होंगी।

इस प्रकार 14 मार्च को सभी लाइनों पर टर्मिनल स्टेशनों से मेट्रो ट्रेन सेवाएं दोपहर 2:30 बजे शुरू होंगी और उसके बाद सामान्य रूप से जारी रहेंगी।

बता दें कि दिल्ली मेट्रो की गोल्डन लाइन ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। टनल बोरिंग मशीन (टीबीएम) ने किशनगढ़ से वसंत कुंज मेट्रो स्टेशन तक 1.55 किलोमीटर लंबी भूमिगत सुरंग का काम सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। यह सफलता मेट्रो विस्तार के चौथे चरण के तहत एरोसिटी को तुगलकाबाद से जोड़ने वाले 19.34 किलोमीटर लंबे भूमिगत कॉरिडोर के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कदम है।

केंद्रीय आवास एवं शहरी मामलों और बिजली मंत्री मनोहर लाल और आवास एवं शहरी मामलों के राज्य मंत्री तोखन साहू की मौजूदगी में वसंत कुंज स्टेशन साइट पर यह सफलता हासिल की गई।

इस सेक्शन के लिए 91 मीटर लंबी टीबीएम का इस्तेमाल किया गया, जिससे सुरंग की औसत गहराई 23 मीटर हो गई, जिसमें न्यूनतम गहराई 15.7 मीटर और अधिकतम गहराई 30.2 मीटर है। सुरंग का आंतरिक व्यास 5.8 मीटर है और अब तक करीब 1,107 सुरंग रिंग लगाई जा चुकी हैं। ऊपर और नीचे की आवाजाही के लिए एक समानांतर सुरंग भी निर्माणाधीन है और इसके जून 2025 तक पूरा होने की उम्मीद है।

2025 तक न्यूयॉर्क मेट्रो लाइन तोड़ देगी रिकॉर्ड

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने दिल्ली मेट्रो के तेजी से हो रहे विस्तार पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान में न्यूयॉर्क के पास 399 किलोमीटर के साथ एक ही शहर में सबसे लंबे मेट्रो नेटवर्क का रिकॉर्ड है। उन्होंने कहा कि दिसंबर 2025 में उद्घाटन की जाने वाली आगामी 12 किलोमीटर लाइन के साथ, दिल्ली मेट्रो जल्द ही इस रिकॉर्ड को पार कर जाएगी और दुनिया का सबसे बड़ा शहरी मेट्रो नेटवर्क बन जाएगी।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए **प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है** और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "**परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र**" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद– विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद– विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

गर्मियों में कैसे रखे अपने वाहन को सुरक्षित और ठंडा, जाने परिवहन विशेषज्ञ अनिल छिकारा से

गर्मी का मौसम आ गया है और अब सड़कें होगी गर्म। सड़क पर सुरक्षित रहते हुए कैसे सुखद सफ़र का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए जाने परिवहन विशेषज्ञ अनिल छिक्कारा से कुछ स्मार्ट तरीके :-

कार को ठंडा रखने, माइलेज बढ़ाने, टायरों की सुरक्षा और इलेक्ट्रिक वाहनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं यह टिप्स

चिलचिलाती धूप में गाड़ी चलाना किसी अग्नि परीक्षा से कम नहीं है। जब तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है, तो कार में प्रवेश करना भट्टी पर बैठने जैसा लगता है। जब सड़कें गर्म हो जाती हैं और कार का इंटीरियर ओवन की तरह जलने लगता है, एसी गर्म हवा उड़ाता है, सीटें बर्दाश्त से बाहर हो जाती हैं, स्टीयरिंग पर हाथ रखने से जलन होती है, और डैशबोर्ड पिघला हुआ लावा लगता है तो आप क्या करते हैं ? गर्मी के मौसम में इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) की बैटरी गर्म होकर जल्दी खत्म हो जाती है। पेट्रोल या डीजल वाहनों के ईंधन दक्षता काफी कम हो जाती है।

1. ऐसे में क्या आपने कभी सोचा है कि कुछ वाहन अंदर से जल्दी गर्म और कुछ अंदर से अपेक्षाकृत ठंडे होते हैं, आखिर क्यों ?

2. क्या आप जानते हैं कि ए.सी. के उचित उपयोग से माइलेज 5 से 10 प्रतिशत तक बढ़ सकती है ?

3. क्या इलेक्ट्रिक कारें गर्मी के प्रति अधिक संवेदनशील हैं या यह एक मिथक है ?

ग्रीष्मकालीन वाहन रखरखाव और ईवी प्रदर्शन:– दिल्ली परिवहन विभाग से सेवानिवृत उपायुक्त एवम्परिवहन विशेषज्ञ अनिल छिकारा ने सीएनजी और ईवी वाहनों से जुड़े इन सवालों के लिए अपने एक्सपर्ट विचार जनता की सुरक्षा और सुखद सफ़र के लिए साझा किए अपने विचार। उन्होंने बताया की जब वाहनों के फ्यूल मोड को डीज़ल से सीएनजी पर परिवर्तित किया गया था तब लोग सीएनजी के खिलाफ़ थे। जनता का कहना था कि यह कैंसर कारी है और इसके छोटे कण हमारे फेफड़ों को नुकसान पहुँचा सकते हैं। अब भारत देश में इलेक्ट्रिक वाहन आ गए हैं और इन वाहनों की बैटरियाँ भी काफ़ी अच्छी हैं। भारत सरकार द्वारा ई- कचरे से निबटने के लिए अक्षय ऊर्जा योजनाए चल रही हैं जिसके अंतर्गत ई-कचरा प्रबंधन के लिए अध्ययन चल रहे हैं। अनुमान है की भारत में 2030 तक इलेक्ट्रिक कारें अन्य सभी फ्यूल मोड की कारों की कीमत की तुलना में सस्ती होगी। उन्होने कहा सरकार को जनहित में हर फ्यूल स्टेशन पर चार्जिंग पॉइंट बनाने की ज़रूरत है और साथ ही ई वाहन निर्माताओं द्वारा ई वाहन के लिए रखरखाव अनुबंध सौंपे जाने अति आवश्यक हैं क्योंकि आज आपूर्तिकर्ता ज़िम्मेदारी नहीं ले रहे हैं जिससे खुद वाहन मालिकों को रखरखाव करना पड़ता हैं जो मानक के मुताबिक नहीं है। उन्होंने कहा सरकार को केवल उन लोगों को ही ईवी खरीदने की अनुमति दी जानी चाहिए जो रोज़ाना गाड़ी चलाते हैं, ना की उन लोगों को जो हफ़्ते या महीने में अपनी गाड़ी बाहर निकालते हैं। ईवी वाहन को 20 प्रतिशत पर चार्ज करना भी काफी खतरनाक हो सकता है। ईवी वाहन में चार्जिंग 40 प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए और साथ ही इसे गर्म मौसम/ गर्म स्थान पर खड़ा करके चार्जिंग नहीं किया जाना चाहिए। दिल्ली में जहाँ तापमान 45 डिग्री सेल्सियस पार कर जाता है वहाँ सख्त सावधानियाँ बरतने की ज़रूरत है, क्योंकि ईवी बैटरी में एयर कंडीशनिंग होती है। चार्जिंग के दौरान बैटरी ज़्यादा गर्म हो गई तो यह क्षतिग्रस्त हो जाएगी और साथ ही पूरी तरह से चार्ज की गई ईवी वाहन को गर्म मौसम या गर्म स्थान में पार्क करना भी खतरनाक है। अगर ईवी में आग लग जाती है तो इस पर कंट्रोल करना भी अन्य फ्यूल मोड के वाहनों से मुश्किल होता है।

ईवी वाहन में आग की घटनाएं: छिकारा ने कहा, ₹पिछले साल पूर्वी दिल्ली के कृष्णा नगर में

एक चार मंजिला इमारत में आग लगने से तीन लोगों की जान चली गई थी और दस लोग घायल हो गए थे। आग स्टिल्ट पार्किंग सेक्शन में लगी थी और संभवतः शॉर्ट सर्किट के कारण लगी थी। पता चला कि इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन के मालिक ने वाहन को प्लग इन करके छोड़ दिया था। दोपहिया वाहन जलकर खाक हो गया और आग बिजली के मीटर तक फैल गई और पूरे परिसर को अपनी चपेट में ले लिया। ऐसी कई घटनाएं हो चुकी हैं।

अपनी कार को अत्यधिक गर्मी से कैसे बचाएं वाहनों पर ग्रीनहाउस प्रभाव को जानना मददगार होता है। यदि परिवेश का तापमान 45-50 डिग्री सेल्सियस है तो अंदर का तापमान 60-75 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाता है। इसका मुख्य कारण ग्रीनहाउस प्रभाव है। सूर्य की अवरक्त किरणें कार के शीशे से प्रवेश करती हैं और अंदर ही फंस जाती हैं। इंटीरियर में लगभग 60 प्रतिशत सिंथेटिक्स प्रयोग किया जाता हैं जो गर्मी को फंसाते हैं जिससे कार एक मिनी ग्रीनहाउस में बदल जाती है।

अपनी कार को कैसे ठंडा रखें

1. कार हमेशा छाया में पार्क करें: हमेशा छायादार स्थान चुनें - यह सबसे आसान और प्रभावी तरीका है।
2. परावर्तक विंडशील्ड सनशेड का प्रयोग करें, जिससे कार के अंदर का तापमान 10-15 डिग्री सेल्सियस तक कम हो सकता है।
3. हल्के रंग के सीट कवर और डैशबोर्ड कवर का उपयोग करें: गहरे रंग अधिक गर्मी को रोकते हैं, जिससे कार का तापमान बढ़ जाता है।
4. खिड़कियां थोड़ी खुली रखें: अत्यधिक तापमान संचय से बचने के लिए गर्म हवा को बाहर निकलने दें।
5. क्रॉस-वेंटिलेशन का इस्तेमाल करें: यात्री की तरफ वाली एक खिड़की को पूरी तरह से नीचे कर दें। विपरीत दरवाज़े को जल्दी-जल्दी कई बार खोलें और बंद करें। इससे फंसी हुई गर्म हवा बाहर निकल जाएगी और ए.सी. जल्दी ठंडा हो जाएगा।

माइलेज बढ़ाने के लिए ए.सी. का उचित उपयोग पहले दो मिनट के लिए, सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खोलें ताकि गर्म हवा निकल सके। ए.सी. को तुरंत अधिकतम पर नही चलाएँ, इसे दोगुना समय तक काम करना होगा। अगले पाँच मिनट के लिए ए.सी. को अधिकतम पर और रीसर्कुलेशन मोड पर स्विच करें ताकि तेज़ी से ठंडा हो सके। इष्टतम ईंधन अर्थव्यवस्था और यात्री आराम के लिए तापमान को 24 डिग्री सेल्सियस पर बनाए रखें। सड़क पर रीसर्कुलेशन मोड का उपयोग करें, लेकिन इसे लंबे समय तक उपयोग न करें क्योंकि यह ऑक्सीजन के स्तर को कम कर सकता है। गर्मियों से पहले अपने ए.सी. की सर्विस करवा लें, कूलिंग कॉइल और कंडेनसर की सफाई पर विशेष ध्यान दें। एयर फ़िल्टर को नियमित रूप से साफ़ करने से दक्षता में सुधार होगा।

गर्मियों की गर्मी से टायरों की सुरक्षा

1. सही दबाव बनाए रखें.
2. अधिक हवा भरने से बचें, क्योंकि गर्मी से फंसी हुई हवा फैल सकती है।
3. सुबह जब टायर ठण्डे हों तो प्रेशर की जांच करें।
4. दरारें, उभार या असमान घिसाव पर नजर रखें।
5. यदि टायर का ट्रेड घिसाव 1.6 मिमी से कम हो तो उसे बदल दें।
6. गर्म सड़को पर तेज गति से वाहन चलाने से बचें, क्योंकि तेज गति पर गर्मी अधिक तेजी से एकत्रित होती है, तथा इससे वाहन के टायर के फटने की संभावना बढ़ जाती है।
7. प्रत्येक 5,000-8,000 किमी पर टायरों को बदलें, जिससे टायरों का घिसाव एक समान रहे और उनकी आयु बढ़े।
8. हवा के स्थान पर नाइट्रोजन का प्रयोग करें क्योंकि यह तापमान के प्रति असंवेदनशील है, जिससे टायर का दबाव स्थिर बना रहे।

क्या वाहन का रंग ऊष्मा अवशोषण को प्रभावित करता है ? गहरे रंग के वाहन सूर्य की 80-90 प्रतिशत विकिरण को अवशोषित कर लेते हैं, जिससे अंदरूनी भाग 10-15 डिग्री सेल्सियस तक गर्म हो जाता है। हल्के वाहन अधिक विकिरण को परावर्तित करते हैं, जिससे अंदरूनी भाग 5-10 डिग्री सेल्सियस ठंडा रहता है।

परिवहन विशेषज्ञ द्वारा बताए गए छोटे छोटे टिप्स की मदद से आप गर्मी के मौसम में भी सुखद और सुरक्षित सफ़र का आनंद प्राप्त कर सकते हैं और कार की माईलेज भी बड़ा सकते हैं।

होली के दौरान भीड़ से बचने के लिए ईस्ट कोस्ट रेलवे चलाएगा विशेष ट्रेनें

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : महत्वपूर्ण रेल मार्गों पर चलने वाली नियमित ट्रेनों में यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को कम करने तथा उच्च मांग को ध्यान में रखते हुए पूर्वतट रेलवे ने होली त्योहार के दौरान विशेष ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया है। ईस्ट कोस्ट रेलवे सीमा से चेरलापल्ली (हैदराबाद), कोलकाता और बेंगलुरु तक तीन जोड़ी होली स्पेशल ट्रेनें चलाने की योजना है। पूर्वी तटीय रेलवे मार्ग पर पहले से चल रही कुछ विशेष रेलगाड़ियों की सेवाओं में भी वृद्धि की गई है।

भारतीय रेलवे में त्यौहारी सीजन के दौरान टिकट बुकिंग की संख्या में भारी वृद्धि देखी जा रही है। परिणामस्वरूप, नियमित ट्रेनों में टिकटों की लंबी प्रतीक्षा सूची देखी जा रही है। भारतीय रेलवे की यात्री प्रोफाइल प्रबंधन इकाई यात्रियों की यात्रा संबंधी असुविधाओं को दूर करने के लिए यात्रियों की बढ़ती मांग पर नजर रख रही है। उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, भारतीय रेलवे नियमित ट्रेनों में अतिरिक्त कोच जोड़ने के अलावा, लोकप्रिय गंतव्यों को जोड़ने वाले व्यस्त मार्गों पर कई विशेष ट्रेनें भी चला रही है। कर रहे हैं। ए. भुवनेश्वर-चेरलापल्ली (हैदराबाद) होली स्पेशल ट्रेन।

बी. पुरी-कोलकाता होली स्पेशल ट्रेन। सी. विशाखापत्तनम - एसएमवीटी बेंगलुरु होली स्पेशल ट्रेन। डी. विशेष ट्रेन सेवाएं जैसेः खुर्दा रोड से उधना (सूरत); पुरी से कोलकाता/संतरागाछी/शालीमार और भंजपुर (बारीपदा) तक; विशाखापत्तनम से तिरुपति/सलीमार; संबलपुर से इरोड (तमिलनाडु) और भुवनेश्वर से यशवंतपुर (बेंगलुरु) और भुवनेश्वर से धनबाद तक विशेष ट्रेनों के परिचालन दिनों में वृद्धि की गई। उपलब्ध बर्थ कैसे खोजें - विशेष रेलगाड़ियां। यदि इस सीजन के दौरान यात्रियों को नियमित ट्रेनों में प्रतीक्षा सूची का सामना करना पड़ रहा है, तो वे ईस्ट कोस्ट रेलवे जोन से चलने वाली विशेष ट्रेनों में ट्रेन टिकट बुक कर सकते हैं। विशेष रेलगाड़ी के नंबर ₹0₹ (शून्य) से शुरू होते हैं और यात्री IRCTC वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन टिकट बुक कर सकते हैं या ओवर-द-काउंटर टिकट के लिए PRS काउंटर पर जा सकते हैं और ट्रेन के बारे में जानने के लिए आसानी से राष्ट्रीय रेलगाड़ी सूचना प्रणाली (NTES) का उपयोग कर सकते हैं।विशेष रेलगाड़ियों में बर्थ उपलब्ध हैं। इस मौसम के दौरान, ईस्ट कोस्ट रेलवे विशेष ट्रेनें चलाकर और नियमित ट्रेनों में अतिरिक्त कोच जोड़कर अतिरिक्त बर्थ उपलब्ध करा रहा है। यात्री आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर जाकर या मोबाइल ऐप के माध्यम से या पीआरएस काउंटर से टिकट बुक करके ऑनलाइन टिकट बुक कर सकते हैं। ईस्ट कोस्ट रेलवे ने भी हाल ही में विशेष ट्रेनें चलाने की घोषणा की है। यात्री ईस्ट कोस्ट रेलवे के फेसबुक पेज @EASTCOSTRailway और ट्विटर अकाउंट @EastCoastRail पर जाकर विशेष ट्रेनों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

चंचल लेकिन साफ दिल के कर्क राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी)

हमारे नक्षत्र मंडल में पुनर्वसु नक्षत्र से लेकर अश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण तक चंद्रमा का गोचर कर्क राशि में माना गया है। कर्क एक स्त्री जाति की कफ प्रकृति वाली,जल तत्व वाली,रात्रि बली, उत्तर दिशा की स्वामी,समोदय राशि है। कर्क राशि के जातक पर चंद्रमा,गुरु तथा बुध तथा मंगल ग्रह का प्रभाव देखने मिलता है। काल पुरुष की कुंडली में पेट, वक्ष स्थल और गुर्दे का विचार कर्क राशि से किया जाता है।

गुण और स्वभाव : कर्क राशि के लोग गोरे रंग के माध्यम कद काठी के होते हैं। इनका चेहरा लंबा तथा भरा हुआ ,नाक नीची तथा हाथ लंबे होते हैं। कर्क राशि के जातक दयालु,स ंवेदनशील,कल्पनाशील, आध्यात्मिक प्रकृति के होते हैं। यह चंचल मन के अशांत तथा स्वार्थी हो सकते हैं। कर्क राशि के जातक संगीत के काफी शौकीन होते हैं।

इन्हे शास्त्रीय संगीत में रुचि होती है। कर्क के लोग स्त्री या पुरुष के वश में होते हैं। यह कभी कभी चिड़चिड़े,लापरवाह तथा जिद्दी स्वभाव के हो जाते है।

कैरियर : कर्क राशि के लोग कुशल व्यापारी,नौ सेना, हस्तकला, संगीतज्ञ,जल परिवहन,नेतागिरी, सांसद, शास्त्री, मोती, दूध, रासायनिक खाद आदि के व्यापारी, खेलविभाग,रेलवे ,मेडिकल आदि में सफलता प्राप्त करते हैं।

रोग : कर्क राशि के लोगो को गैस,कब्ज,हृदय रोग,कमजोरी, टीबी, कैंसर,फेफड़ों के रोग,ब्लड प्रेशर आदि रोगों से जूझना पड़ सकता है।

भाग्यशाली दिन : सोम,बुध और गुरु

भाग्यशाली रंग : लाल,पीला और सफेद

भाग्यशाली अंक : 1,4,6,8

शुभ रत्न : मोती

उपाय : कर्क राशि के जातक को सोमवार का व्रत तथा शिव और हनुमान जी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक सोमवार शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करना अच्छा होता है।

मौन होने और चुप होने में गुणात्मक अन्तर

किन्हीं मजबूरियों/कारणों/दासत्व/परिस्थितियों के कारण हो सकता है हम बाहर कुछ कह न पायें, लेकिन भीतर आक्रोश/विरोध/तर्क-वितर्क चलता रहता है तो समझें कि हम चुप हो गये। चुप होना किसी परिस्थिति को सम्भालने का एक तरीका हो सकता है जैसे कहावत है कि ₹एक चुप सौ सुख₹। यानि अपने भविष्य की सुख/शांति के लिए हथियार डाल देना, चुप हो जाना। इसमें बाहर हम जितना चुप होते हैं भीतर उतने ही ज्यादा विरोधों/ विचारों/ हिसाब-किताबों के झंझावात उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं। मौन होना बिल्कुल अलग बात हैं। जब बाहर और भीतर दोनों ही क्षेत्र में बोलने/कहने की व्याकुलता ही व्यर्थ हो जाती है। जब अपने भीतर के केन्द्र से हम जुड़ जाते हैं और पाते हैं कि यही केन्द्र समस्त अस्तित्व/ब्रह्माण्ड का भी केन्द्र है तो एकाएक सभी तर्क-वितर्क/वैर-विरोध स्वतः ही गिर जाते हैं। इसी अवस्था में मौन का आविर्भाव होता है। आश्चर्य होगा यह जानकार कि

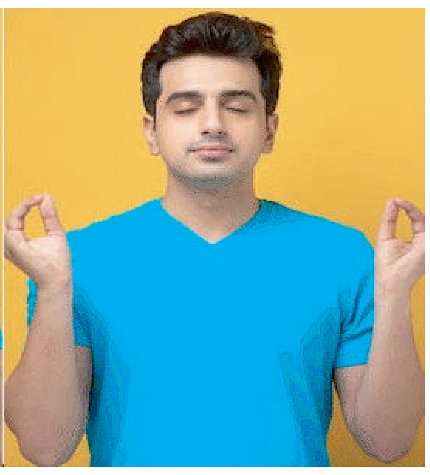

जिसने भी मौन रहने की कला सीख ली, वही बोलने का पूर्ण हकदार/पात्र/अधिकारी बन जाता है, यह परम सौभाग्य की बात है। सभी बुद्ध मौन हो जाते हैं, लेकिन जिसने कुछ अनुभव किया हो, उसे कैसे चुप रह जाने दिया जा सकता है? अभी जो इतनी बातचीत/ चर्चायें हो रही हैं, वह सब हमारे अज्ञान से निकल रहीं हैं, बस बोलने के लिए बोल रहें हैं, चुप हो जाना मात्र परिस्थिति को सम्भालने का अस्त्र है। मौन, बाहर-भीतर की तारतम्यता/तरंगों/रस/रंग के प्रति पूर्ण होशपूर्ण हो जाना है। साधारण आदमी वासना से/कुछ पाने के लिए बोलता है, बुद्ध पुरुष/मौनसिद्ध करुणा से/बांटने के लिए बोलते हैं ताकि अन्य लोग भी उनके परम अनुभव के साझीदार हो जायें। यद्यपि वह जब/जिस अवस्था से बोलते हैं, वह साधारण समझ/पकड़ से बाहर है, तब भी उसकी कुछ पहचान/रस-रंग की छूवन, हमारे लिए मार्ग-दर्शक बन जाती है। जो बुद्ध न बोलने/मौन/शून्यता की क्षमता को पा जाते हैं, केवल उनके बोलने से ही अंधेरे में भटकते लोगों को प्रकाश की किरणें मिल सकती हैं और तब पूरा अस्तित्व ही आनंदित होकर, उनको बोलने के लिए राजी/विवश करने लगता है।

जम्बूद्विप के भक्त और उसके 9 खण्डों की जानकारी

सब द्विपो के मध्य का जो जम्बूद्वीप है, उसके 9 खण्ड है।उसमें जो निवास करते है, वे हमारे राजा है,और हम उनकी प्रजा है।

1. इलावर्तखण्ड :- स्वामी भगवान संकर्षण है। और उनके मुख्य सेवक शंकर जी है।
2. रमणकखण्ड:- के अधिश्वर श्री मत्स्य भगवान है उनके सेवक मनूजी है।
3. हिरण्यखण्ड:- मे भगवान श्री कूर्मजी आराध्य है और अर्यमा उनके पुजारी है।
4. कुरूखण्ड के अधीश श्री वाराहा भगवान है और उनकी सेवा करने वाली पृथ्वी देवी है।
5. हरिवर्षखण्ड में श्रीनृसिह भगवान विराजते है और उनके सेवक प्रहलाद जी है।
6. किम्पुरूषखण्ड:- के स्वामी श्री रामचंद्र जी है, और उनकी सेवामे हनुमानजी तत्पर रहते है।
7. भरतगण्ड:- मे भगवान श्री नरनारायण आराध्य देव है,अनकी पूजा करने वाले नारदजी है।
8. भद्राश्वखण्ड:- मे हयग्रीव भगवान आराध्य है, और भद्रश्रवाजी उनके पुजारी है।
9. केतुमालखण्ड:- के अधिपति भगवान कामदेव है, और कमला देवी उनकी सेविका है।

घुटने के दर्द से परेशान हैं? आयुर्वेद अपनाएँ

क्या आप जानते हैं कि भारत में 10 मिलियन से ज़्यादा लोग ऑस्टियोआर्थराइटिस से पीड़ित हैं, जिसका सबसे आम रूप घुटनों का ऑस्टियोआर्थराइटिस है? वैसे, ऑस्टियोआर्थराइटिस घुटनों के दर्द का एकमात्र कारण नहीं है, लेकिन यह निश्चित रूप से सबसे आम है।

घुटने का दर्द इतना आम क्यों है? हम मनुष्य जानवरों के साम्राज्य के अधिकांश जानवरों के विपरीत द्विपाद के रूप में विकसित हुए हैं। हालाँकि, यह हमें घुटने के दर्द, पीठ दर्द और बवासीर जैसी अनोखी समस्याएँ भी देता है। हमारे घुटने पूरे शरीर का भार उठाते हैं, और इस प्रकार, वे घिसने और फटने के लिए कमज़ोर होते हैं। घुटने के दर्द के सामान्य कारणों में ऑस्टियोआर्थराइटिस, रुमेटीइड गठिया और जोड़ों की अन्य सूजन संबंधी स्थितियाँ जैसे कि सिस्टमिक ल्यूपस एरिथेमेटोसस शामिल हैं

घुटने के दर्द के प्रकार

यांत्रिकः मोच या खिंचाव, मेनिस्कस टियर, और लिगामेंट की चोट (जिनमें से सबसे आम है एंटीरियर क्रूसिएट लिगामेंट इंजरी (एसीएल टियर), फ्रैक्चर और पेटेलर डिस्लोकेशन।

गैर-यांत्रिकः संक्रमण जैसे कि तपेदिक, ऑस्टियोआर्थराइटिस या रुमेटीइड गठिया आदि।

आयुर्वेद कैसे मदद कर सकता है? आयुर्वेद भारतीय चिकित्सा की एक समग्र प्रणाली है, जिसे भारत में कई सहस्राब्दियों से आजमाया और परखा गया है। घुटने के दर्द के प्रबंधन में आयुर्वेद का दायरा निश्चित रूप से ओवर-द-काउंटर दर्द निवारक, बाम और तेल तक सीमित नहीं है। आयुर्वेदिक दवाएँ सावधानीपूर्वक इतिहास लेने और नैदानिक परीक्षणों के बाद निर्धारित की जाती हैं। उन्हें रोगी की प्रकृति के अनुसार व्यक्तिगत किया जाता है। आयुर्वेद के सिद्धांतों में शरीर के तीन महत्वपूर्ण द्रव्यों वात, पित्त और कफ के बीच संतुलन बनाना शामिल है। माना जाता है कि वात द्रव्य घुटने के जोड़ों की दर्दनाक स्थिति का कारण बनता है। उम्र के पचासवें पडाव्र पर, धीरे धीरे शरीर के जोडो मे से लुब्रीकेन्टस एवं कैल्शियम बनना कम हो जाता है जिसके कारण जोड़ो का दर्द, गैप, कैल्शियम की कमी, जैसी समस्याएं सामने आती है। जिसके चलते आधुनिक चिकित्सा आपको जोइन्ट रिप्लेस करने का परामर्श देते है, क्या आपको पता है जो चीज प्रकृति ने हम को दी है उन्हें आधुनिक विज्ञान नही बना सकता है। बबूल की फली जोइन्ट रीप्लेस का तोड़₹:- बबूल (देशी कीकर) नाम के वृक्ष को आपने जरुर देखा होगा। यह भारत में, हर स्थान पर बिना उपजाए अपने आप ऊग जाता है। इसका प्रयोग इस प्रकार करेः- बबूल के पेड़ पर ' फली ' लगती है उसको तोड़कर लाएँ और उसको सुखाकर चूर्ण बना लें। 1चम्मच सुबह गुनगुने पानी से 2-3 महीने सेवन करने से आपके घुटने का दर्द बिल्कुल ठीक हो जाएंगे। आपको घुटने बदलने की जरुरत नहीं पड़ेगी।

अगर आप घुटनो का ऑपरेशन करवाने की सोच रहे है ऑपरेशन से पहले इस सुझाव का प्रयोग अवश्य कर के देखें।

घुटने दर्द के घटक द्रव्य

1. बबूल की फली
2. पूनर्नवा
3. शुद्ध कुचला
4. गिलोय
5. गोडान्ति भस्म
6. शंख भस्म
7. अजवाइन
8. सोंठ
9. मेथी
10. हड़जोड़

यह आजमायां हुआ सफल इलाज है। इससे घुटने की चिकनाहट और केल्शियम बनने लगतां है, वायुदोष शांत होता है, जोडो का दर्द, आमवात, संधिवात मे लाभदायी है। इसलिए अपने घुटनों को बचाने के लिए आयुर्वेदिक चूर्ण का प्रयोग करें

आयुर्वेद अपनाएं, स्वस्थ जीवन पाएं।

कैसे उड़े अबीर॥

फागुन बैठा देखता, खाली है चौपाल।
उतरे-उतरे रंग है, फीके सभी गुलाल॥

सजनी तेरे सँग रचूँ, ऐसा एक धमाल।
तुझमे खुद को घोल दूँ, जैसे रंग गुलाल॥

बदले-बदले रंग है, सूना-सूना फाग।
ढपली भी गाने लगी, अब तो बदले राग॥

मन को ऐसे रंग लें, भर दें ऐसा प्यार।
हर पल हर दिन ही रहे, होली का त्यौहार॥

फौजी साजन से करे, सजनी एक सवाल।
भीगी सारी गोरियाँ, मेरे सूने गाल॥

आओ सजनी मैं रंगूँ, तेरे गोरे गाल।
अनायास होने लगा, मनवा आज गुलाल॥

बढ़ती जाए कालिमा, मन-मन में हर साल।
रंगों से कैसे मलें, इक दूजे के गाल॥

स्वार्थ रंगी जब भावना, रही मनों को चीर।
बोलो 'सौरभ' फाग में, कैसे उड़े अबीर॥

सूनी-सूनी होलिका, फीका-फीका फाग।
रहा मनों में हैं नहीं, इक दूजे से राग॥

-डॉ.सत्यवान 'सौरभ'

फागुन में यूं प्यार से...

होली के त्यौहार में, ऐसी उठे तरंग।
तन-मन में जो प्यार की, भर दे ख़ूब उमंग॥

आँगन-आँगन रंग हो, हो रंगीला फाग।
बैर-भाव को छोड़कर, मिलें सभी के राग॥

झूम उठे उल्लास से, क्या बूढ़े क्या बाल।
उड़े ख़ूब इस फाग में, सौरभ रंग गुलाल॥

सड़क-गली हर चौक पर, मचे फाग की धूम।
रार बैर की छोड़कर, राग प्रीत ले चूम॥

होली के त्यौहार में, इतनी तो हो बात।
सबके गालों को मिले, रंगों की सौगात॥

आते होली फाग यूं, देते हैं सन्देश।
प्रेम परस्पर दे सदा, मिटे हृदय से क्लेश॥

फागुन में यूं प्यार से, गा होली के गीत।
पुष्प खिले बस चाह के, होकर के मनमीत॥

-प्रियंका सौरभ

नेशनल गर्ल स्काउट दिवस

राष्ट्रीय गर्ल स्काउट दिवस, जूलियट गॉर्डन लो द्वारा विश्व भर में लाखों लड़कियों के लिए किए गए कार्यों को श्रद्धांजलि देने का एक आदर्श दिन है। यह देखते हुए कि लो का लक्ष्य लड़कियों को अधिक स्वतंत्र बनने में मदद करना था, यह एक महत्वपूर्ण छोटी लड़की को कुछ महत्वपूर्ण और उपयोगी सिखाने का अवसर लेने का सही दिन है, कुछ ऐसा जो उसे दूसरों पर कम निर्भर होने में मदद करेगा और उसे खुद पर, अपने कौशल और क्षमताओं पर अधिक विश्वास दिलाएगा। गर्ल स्काउट्स आधुनिक समय की नायिकाएं हैं जो लड़कियों को अपने रोजमर्रा के कौशल विकसित करने और आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। जब आप गर्ल स्काउट्स में शामिल होते हैं, तो आप कई तरह के कौशल सीखते हैं जिन्हें केवल करके ही अनुभव किया जा सकता है। यह एक सक्रिय शिक्षण और प्रशिक्षण पद्धति है जो लाखों लड़कियों और महिलाओं को अपना वास्तविक व्यक्तित्व विकसित करने और अधिक स्वतंत्र बनने में मदद करती है।

हर छोटी लड़की के लिए बैज जीतने की चुनौती, बेशक, उत्साह का हिस्सा होती है। लेकिन, हर नए बैज के साथ, वह छोटी लड़की नया ज्ञान प्राप्त करती है और खुद को समाज का एक प्रेरक सदस्य बनाती है।

जब से यह पहली बार अस्तित्व में आया है, राष्ट्रीय गर्ल स्काउट दिवस ने लड़कियों के लिए व्यावहारिक कौशल, गतिविधियों और सामुदायिक सेवाओं के माध्यम से साहस, आत्मविश्वास, नेतृत्व, उद्यमशीलता और सक्रिय नागरिकता को शामिल किया है।

राष्ट्रीय गर्ल स्काउट दिवस मनाकर उनकी पहल का समर्थन करना सबसे अच्छी बात है जो हर माता-पिता और महिला अगली पीढ़ी की मदद के लिए कर सकते हैं।

राष्ट्रीय गर्ल स्काउट दिवस का इतिहास गर्ल स्काउट्स 1912 में अस्तित्व में आई, जब जूलियट "डेज़ी" गॉर्डन लो नामक एक महिला ने आसपास के क्षेत्र की सिर्फ 18 लड़कियों के साथ जॉर्जिया के सवाना में पहली गर्ल स्काउट बैठक आयोजित की।

लो ने इस बात पर विचार करने में काफी समय बिताया कि युवा महिलाओं को बाहर

निकलने और अधिक स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और साधन संपन्न बनाने में मदद करने के लिए क्या किया जा सकता है, ताकि वे भविष्य में बेहतर नागरिक बन सकें।

शुरू से ही, गर्ल स्काउट्स महिलाओं द्वारा, महिलाओं के लिए संचालित एक संगठन रहा है, और अपनी स्थापना के सौ वर्षों के बाद, दुनिया भर में इसके सदस्यों की संख्या 3.7 मिलियन तक पहुंच गई है। अनुमान है कि इसकी स्थापना के बाद से 50 मिलियन लड़कियाँ और महिलाएँ इस संगठन की सदस्य रही हैं। सदस्यता आयु के अनुसार व्यवस्थित की जाती है, और प्रत्येक स्तर पर अलग-अलग गतिविधियाँ उपलब्ध हैं, जो प्रत्येक आयु वर्ग की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुकूल हैं। गर्ल स्काउट्स अमेरिकी लड़कियों और विदेशों में रहने वाली अमेरिकी लड़कियों के लिए एक संगठन है, जिनकी उम्र पारंपरिक रूप से 5 से 18 वर्ष होती है। गर्ल स्काउट्स आमतौर पर एक समूह में मिलते हैं जिसे एक टुकड़ी कहा जाता है, और टुकड़ियों को स्वयंसेवकों द्वारा चलाया जाता है, जो अक्सर टुकड़ी के सदस्यों के माता-पिता होते हैं। यह गर्ल स्काउट्स को एक बहुत ही घनिष्ठ संगठन बनाता है। राष्ट्रीय गर्ल स्काउट दिवस उस दिन मनाया जाता है जिस दिन लो ने पहली गर्ल स्काउट मीटिंग आयोजित की थी, यानी 12 मार्च।

राष्ट्रीय गर्ल स्काउट दिवस कैसे मनाएं अपने जीवन में किसी छोटी लड़की या युवती को कुछ उपयोगी सिखाएँ। उसे कोई ऐसा कौशल सिखाएँ जो उसे आत्मनिर्भर बनने में मदद करे। आप उसे प्रोजेक्ट प्लानिंग, समय प्रबंधन, सीपीआर और प्राथमिक चिकित्सा या खुद के लिए खड़े होने के बारे में सिखा सकते हैं। गर्ल स्काउट कुकीज़ खरीदें। यह उनके लिए अपने कार्यक्रम में सीखी गई बातों का अभ्यास करने का एक अच्छा मौका है।

क्या हर रोज़ गर्म पानी पीने से शरीर को नुकसान पहुँचता है?

गर्म पानी क्यों नुकसानदायक है-जानेः- आयुर्वेद चंद्रोदय ग्रन्थ के मुताबिक गर्म पानी सदैव खाने के एक घण्टे बाद पीने पर अत्यन्त लाभकारी है। सुबह उठते ही खाली पेट गर्म पानी पीने का मतलब है जहर पीना। आयुर्वेदक शास्त्रों के अनुसार सुबह उदर में गर्माहट रहने से जठराग्नि तेज रहती है इसलिए सुबह सादा जल बिना कुछ मिलाकर पीने से रात भर में फुला हुआ गला मल लैट्रिन के द्वारा बाहर निकल जाता है। जो लोग सुबह उठते ही गर्म पानी पीते हैं, उन्हें हर्निया की शिकायत हो सकती है। यकृत शिथिल होने लगता है। महिलाओं में तेजी से बढ़ती पीसीओडी या सोमरोग की परेशानी की मुख्य वजह सुबह गर्म पानी लेना ही। वर्तमान में युवतियां लिकोरिया, श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर व्हाइट डिस्चार्ज से बहुत पीड़ित हैं। इन सबका कारण सुबह खाली पेट गर्म पानी का उपयोग ही है। आयुर्वेद के लगभग 80 से ज्यादा 5000 वर्ष पुराने ग्रन्थों में

प्रातःकाल गर्म पानी पीने का विधान नहीं लिखा। अगर 30–40 साल पुरानी पध्दति को देखें तो लोग सुबह उठते ही मटके या ताँबें का सादा जल ही पीते थे। हमारे भारत में कभी सुबह गर्म पानी पीने की परंपरा नहीं रही। आप चाहें, तो किसी बुजुर्ग से भी जानकारी ले सकते हैं। बद्रीनाथ, मणिमहेश आदि हिमेश, उत्तराखंड के तीर्थों में गर्म पानी के झरने हैं, क्योंकि वहां के मौसम मुताबिक गर्म पानी लेने से शरीर में गर्माहट बनी रहती है। हो सकता है कि एलोपैथी कम्पनियों द्वारा फैलाया गया षडयंत्र हो ताकि लोग अधिक से अधिक बीमार होकर अंग्रेजी दवाओं का सेवन करें। अमृतम पत्रिका का आग्रह है कि कभी किसी की सुनी-सुनाई या बिना सन्दर्भ के लेख पढ़कर बातों में न आएं। अपनी अक्ल भी लगाएं।विगत 8 साल से लोगों ने गर्म पानी का प्रयोग करना शुरू किया और लिवर, बबासीर, डाईविटीज, दांतो का दर्द, कैंसर, ढ़ीलापन, शिथिलता, आलस्य, सुस्ती, कमजोर इम्युनिटी की विकराल समस्या उभरने लगी। हमें प्रकृति ने जैसा जल, जो कुछ दिया है, उसे वैसा ही इस्तेमाल करें। खाने के बाद गर्म पानी जरूर पियें। यह चर्बी को गलायेगा। सुंदरता बढ़ाएगा।

गर्मियों में बच्चों को पिलाएं नैचुरल जूस, गर्मी में बच्चों की सेहत सेहत का रखें ध्यान डॉ हृदयेश कुमार

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट एक ट्रस्ट ही नहीं बल्कि लोगों को स्वास्थ्य संबंधी जागरूक करते हुए हर बार किसी ना किसी तरह से सेवा में समर्पित रहते हैं ट्रस्ट के संस्थापक डॉ हृदयेश कुमार अभी गर्मी के दिन आ रहे हैं तो डॉ हृदयेश कुमार ने अभी से लोगों को जागरूक करना शुरू कर दिया है कि अब मौसम बदल रहा है तो मौसम के साथ आपको और अपने परिवार सहित बच्चों को भी विशेष रूप से खाने पीने पर ध्यान देना चाहिए इस लिए गर्मियों में कोल्ड ड्रिंक की जगह बच्चों को पिलाएं नैचुरल जूस, कोल्ड ड्रिंक बच्चों की सेहत के लिए बिल्कुल भी ठीक नहीं है। ऐसे में कोल्ड ड्रिंक की जगह बच्चों को आप जूस देना शुरु कर दें। जूस पीने से आपके बच्चों की सेहत भी बनेगी और वह पूरे दिन तरोताजा भी महसूस करेंगे। जबकि कोल्ड ड्रिंक की लत बच्चों को बीमार करती है। ऐसे में इससे बच्चों को दूर ही रखना चाहिए।

जूस पीने से बच्चों का शारीरिक विकास तेजी से होता है।

लाइफस्टाइल डेस्क, नई दिल्ली। गर्मियों में बच्चों को हाइड्रेटेड रखना बहुत जरूरी है। अगर बच्चों को आप हाइड्रेटेड नहीं रखते हैं तो गर्मियों में उनकी सेहत बिगड़ सकती है। बच्चों के लिए जूस एक बेहतर ऑप्शन है।

इसलिए बच्चों की सेहत का अगर ध्यान रखना है तो आप उन्हें गर्मियों में कोल्ड ड्रिंक से बेहतर यह घर के बने जूस दीजिए। इससे बच्चों की सेहत तो बनेगी ही साथ ही वह पूरे दिन तरोताजा महसूस करेंगे। कोल्ड ड्रिंक से बेहतर जूस एक अच्छा विकल्प हो सकता है। यहां 4 खास तरह के जूस हैं जो गर्मियों में बच्चों को पिलाने के लिए उपयुक्त हैं।

पपीता का जूस गर्मियों में बेहतरीन है। पपीता में पपैन नामक एंजाइम होता है, जो पाचन में मदद करता है। इसके अलावा, पपीता का जूस विटामिन सी और पोटैशियम से भरपूर होता है, जो बच्चों की सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं।

तरबूज का जूस गर्मियों में बच्चों के लिए एक अच्छा विकल्प है। तरबूज में पानी की मात्रा अधिक होती है, जो बच्चों को हाइड्रेटेड रखने में मदद

करता है। इसके अलावा, तरबूज का जूस विटामिन सी और लाइकोपीन से भरपूर होता है, जो बच्चों की सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं। तरबूज का जूस बच्चों के पेट को ठंडा रखता है। पूरे दिन बच्चे खुद को तरोताजा महसूस करते हैं।

नारंगी का जूस विटामिन सी से भरपूर होता है, जो बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने में मदद करता है। इसके अलावा, नारंगी का जूस हाइड्रेटेड रखने में भी मदद करता है। आप बच्चों को इन गर्मियों में नारंगी का जूस पिलाएं। यह पूरे दिन आपके बच्चे को तरोताजा रखेगा।

अंगूर का जूस बच्चों को बहुत पसंद आता है। आप कोलड्रिंक की जगह बच्चों को अंगूर का जूस दे सकते हैं। बता दें कि अंगूर में पोटैशियम और विटामिन सी होता है, जो बच्चों की सेहत के लिए फायदेमंद होते हैं। इसके अलावा, अंगूर का जूस हाइड्रेटेड रखने में भी मदद करता है। यह ध्यान रखें कि बच्चों को जूस पिलाने से पहले उनके डॉक्टर से परामर्श करना चाहिए। इसके अलावा, जूस को हमेशा ताज़ा और स्वच्छ तरीके से बनाना चाहिए।

इस लेख में उल्लेखित सलाह और सुझाव सिर्फ सामान्य सूचना के उद्देश्य के लिए हैं और इन्हें पेशेवर चिकित्सा सलाह के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। कोई भी सवाल या परेशानी हो, तो हमेशा अपने डॉक्टर से सलाह जरूर लें बिना डॉक्टर के कुछ ना करें आप की सेहत का खुद को ही ख्याल रखना होगा।

विधानसभा नियमों और संसदीय परंपराओं की गरिमा दिल्ली में फिर से हुई बहाल - विजेंद्र गुप्ता

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली :दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने कहा कि माननीय उपराज्यपाल द्वारा दिल्ली की 8वीं विधानसभा के पहले सत्र को समाप्त करने और दूसरे सत्र को 24.03.2025 से 28.03.2025 तक बुलाने के आदेश से संविधान, विधानसभा नियमों और संसदीय परंपराओं की गरिमा दिल्ली में फिर से बहाल हो गई है। पिछली आप सरकार ने संवैधानिक प्रावधानों, विधायी प्रक्रियाओं और संसदीय परंपराओं की खुली अवहेलना करते हुए दिल्ली विधानसभा को एक दिखावटी मंच बना दिया था। आमतौर पर, भारत की संसद और सभी राज्य विधानसभाओं में हर साल तीन सत्र होते हैं - बजट सत्र, मानसून सत्र और शीतकालीन सत्र। इसके अतिरिक्त, विशेष परिस्थितियों में कभी-कभी विशेष सत्र भी बुलाए जाते हैं। लेकिन 2020 से 2025 तक के पांच साल के कार्यकाल में सातवीं दिल्ली विधानसभा ने केवल चार सत्र आयोजित किए, और कुछ मामलों में बिना विधानसभा को औपचारिक रूप से समाप्त किए ही सत्र बुलाए गए, जिनका उपयोग संवैधानिक संस्थाओं और अन्य राज्य सरकारों की आलोचना के लिए किया गया।

अब नई सरकार के सत्ता में आने के बाद, विधानसभा की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ी है। पहले सत्र को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया गया है और अब दूसरा सत्र, यानी बजट सत्र, बुलाया जा रहा है।

अब से, विधानसभा हर साल निर्धारित तीन सत्रों का पालन करेगी, जिसमें प्रश्नकाल, निजी विधेयकों पर चर्चा और अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर बहस होगी ताकि दिल्ली की जनता की आवाज़ सुनी जा सके। विशेष सत्र केवल असाधारण परिस्थितियों में ही बुलाए जाएंगे।

दिल्ली में गंगा आरती की तरह भव्य होगी यमुना आरती....

दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान यमुना प्रदूषण पर खूब चर्चा हुई थी। 27 साल बाद जब राजधानी में भाजपा की सरकार बनी तो इस दिशा में काम भी शुरू हुआ। मशीनों के जरिए नदी से कूड़ा-कचरा निकाला जाने लगा। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने तीन साल में यमुना को साफ रखने का लक्ष्य रखा है। यमुना सफाई को लेकर दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता ने मंगलवार को बयान जारी किया है।

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान यमुना प्रदूषण पर खूब चर्चा हुई थी। 27 साल बाद जब राजधानी में भाजपा की सरकार बनी तो इस दिशा में काम भी शुरू हुआ। मशीनों के जरिए नदी से कूड़ा-कचरा निकाला जाने लगा।

उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने तीन साल में यमुना को साफ रखने का लक्ष्य रखा है। यमुना सफाई को लेकर दिल्ली की सीएम रेखा गुप्ता ने मंगलवार को बयान जारी किया है।

गंगा आरती जैसी भव्य यमुना आरती

एएनआई न्यूज एजेंसी के हवाले की सीएम रेखा गुप्ता ने कहा, ₹यमुना की सफाई का काम अब रुकने वाला नहीं है। इस पर काम करने वाली बड़ी टीम रोजाना काम करेगी। हम यमुना नदी की सफाई में एक सेकंड भी बर्बाद नहीं कर रहे हैं। जल्द ही दिल्ली के लोग यमुना के किनारे बैठकर बनारस की गंगा आरती जैसी भव्य यमुना आरती देखेंगे।₹

विशेषज्ञों का मानना है कि तीन साल में यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। बशर्ते सही दिशा में प्रयास किए जाएं। इन प्रयासों में तालाब, झील जैसे स्थानीय जल स्रोतों को वर्षा जल से भरने के साथ ही भूजल को बढ़ाना भी शामिल है।

ये उपाय हों तो साफ हो सकती है यमुना

सफाई के जो भी नियम बनाए जाएं, उनका सख्ती से पालन हो

राजधानी के भूजल स्तर को भी बढ़ाने के प्रयास किए जाएं

अपशिष्ट जल का सामुदायिक स्तर पर उपचार और पुनः उपयोग किया जाए

तालाब, पोखर और झील आदि को वर्षा जल से भरा जाए

नालों में भी प्रदूषण का भार बढ़ने लगा है, इसे रोकना होगा

घरों में पानी के उपयोग को कम करने की तकनीक को प्रोत्साहित किया जाए

पिछले पांच वर्षों में भाजपा के राज्यों में 70 से अधिक पेपर लीक की घटनाएं हुई, इससे 1.70 करोड़ बेरोजगार युवा प्रभावित हुए हैं- संजय सिंह

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली :आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने मंगलवार को संसद में सरकारी स्कूलों को लेकर मोदी सरकार द्वारा किए जा रहे झूठे दावों की पोल खोलकर रख दी। उन्होंने कहा कि 2022-23 और 2023-24 में देश भर में करीब 54.77 लाख बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया। इसमें उत्तर प्रदेश, गुजरात व असम समेत अन्य भाजपा शासित राज्यों में सबसे अधिक बच्चों ने सरकारी स्कूल छोड़ा है। उन्होंने पेपर लीक की घटनाओं पर भी भाजपा सरकारों पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि पिछले पांच वर्षों में भाजपा के राज्यों में 70 से अधिक पेपर लीक की घटनाएं हुई और इससे 1.70 करोड़ बेरोजगार युवा प्रभावित हुए हैं। शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को सिर्फ किताबी ज्ञान देना नहीं है, बल्कि देश के असली इतिहास व सांस्कृतिक धरोहरों से भी परिचित कराना होना चाहिए।

इसके अलावा, संजय सिंह ने पिछले 5 वर्षों में पेपर लीक की घटनाओं पर भी गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने बताया कि पिछले 5 वर्षों में 70 से अधिक पेपर लीक की घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें नीट, कांस्टेबल और क्लर्क जैसी परीक्षाएं भी शामिल हैं। लगभग 1 करोड़ 70 लाख बेरोजगार छात्र और युवा इन पेपर लीक की घटनाओं से प्रभावित हुए हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश का उदाहरण देते हुए कहा कि यूपी में 69,000 कांस्टेबल पदों के लिए परीक्षा आयोजित करने का ठेका एडुटेस्ट कंपनी को दिया गया। जिसकी जांच में गड़बड़ी पाई गई थी। यह कंपनी भाजपा से जुड़े एक व्यक्ति विनीत आर्य द्वारा संचालित थी, जिसका संबंध भाजपा के बड़े नेताओं से था। इतने बड़े घोटाले में कंपनी को ब्लैकलिस्ट किए जाने के बाद भी बिहार में परीक्षा संचालित करने का ठेका दिया गया। यह दर्शाता है कि भाजपा कैसे अपने कारोबारी मित्रों को जनता के धन से लाभ पहुंचाती है।

उन्होंने भाजपा सरकार पर आरोप लगाया कि वे भारतीय इतिहास में बदलाव कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आप स्कूली शिक्षा में मुग़ल साम्राज्य की क्रूरता को पढ़ाए और साथ ही अंग्रेजों द्वारा 200 वर्षों तक भारत में किए गए शोषण को भी पढ़ाए। मैं यह चाहता हूं कि जो लोग जलियांवाला बाग कांड के जिम्मेदार हैं, उन्हें भी बताया जाए। उन्होंने मांग की कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों जैसे भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, अशफाक उल्ला खान, खुदीराम बोस, राजेंद्र लाहिड़ी और रामप्रसाद बिस्मिल को फांसी पर चढ़ाने के जिम्मेदार अंग्रेजों के क्रूरता को भी पढ़ाया जाए।

उन्होंने आरएसएस और भाजपा के इतिहास पर तंज कसते हुए कहा कि आप जब अंग्रेजी क्रूरता को पढ़ाएंगे, तब आपको यह भी पढ़ाना पड़ेगा कि वह कौन सी संस्था थी जिसने तिरंगे का विरोध किया, वह कौन सी संस्था थी जिन्होंने अंग्रेजी की गुलामी और दलाली की और आपको ये भी पढ़ाना पड़ेगा कि वह कौन सी संस्था थी जिसके नेता ने अंग्रेज गवर्नर को चिट्ठी लिखकर कहा कि 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन को दबाया जाए और वह कौन सी संस्था थी जिसने क्रांतिकारियों का विरोध करके मुस्लिम लीग के साथ 3 राज्यों में सरकार बनाने का अपराध किया था।

संजय सिंह ने स्पष्ट किया कि शिक्षा का सही उद्देश्य बच्चों को न केवल किताबी ज्ञान से, बल्कि देश के असली इतिहास और सांस्कृतिक धरोहर से भी परिचित कराना होना चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि सरकारी शिक्षा व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ियां सही और समृद्ध शिक्षा प्राप्त कर सकें।

बैंकॉक में हुई ग्लोबल वुमेन समिट 2025 में सम्मानित होने वाली इस आईएएस अधिकारी की क्यों हो रही है चर्चा

अपने भाषण में IAS सोनल गोयल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार द्वारा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए बनाई गई योजनाओं जैसे लखपति दीदी ड्रोन दीदी आदि के बारे में बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार 'महिलाओं के विकास' से ऊपर उठकर 'महिलाओं के नेतृत्व में विकास' की दिशा में आगे बढ़ रही है।

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के अवसर पर प्रतिष्ठित 'एम्पावरमेंट एंड डेवलपमेंट वुमन अवार्ड' से सम्मानित किया गया। "नारी का सम्मान, समाज और देश के विकास की पहली सीढ़ी होती है। इसलिए विकसित भारत बनाने के लिए..., आज भारत विमेन लेड डेवलपमेंट की राह पर चल पड़ा है।", अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन जब गुजरात के नवसारी में बोलते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ये बातें कह रहे थे, लगभग उसी समय गुजरात से हज़ारों किलोमीटर दूर एक भारतीय महिला प्रशासनिक अधिकारी को एक अंतर्राष्ट्रीय मंच पर सम्मानित किया जा रहा था। त्रिपुरा सरकार में सचिव के पद पर काम कर रही इस वरिष्ठ आईएएस अधिकारी का नाम है सोनल गोयल जिन्हें बैंकॉक, थाईलैंड में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2025 के अवसर पर प्रतिष्ठित 'एम्पावरमेंट एंड डेवलपमेंट वुमन अवार्ड' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें अपनी अब तक की लगभग डेढ़ दशक की सर्विस के दौरान वुमेन एंपावरमेंट के क्षेत्र में शानदार काम करने के लिए दिया गया।

यूनाइटेड पीसकीपर्स फेडरल काउंसिल (UNPKFC) और यूनाइटेड नेशंस एसोसिएशंस ऑफ कोचेला वैली, यूएसए (UNA-USA) द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विश्व भर के कई वीआईपी और वीवीआईपी लोगों ने भाग लिया, जिनमें UNPKFC की ग्लोबल प्रेसिडेंट डॉ. अफिनिता चाइचाना, UNA-USA की अध्यक्ष कैरेन कैंट्रेल, प्रिंसेस इसाबेल, आदि समेत कई अन्य पॉलिसी मेकर्स, कॉर्पोरेट लीडर्स जैसे मिरिन फ्रोमनोच और पपचसॉर्न मीपा आदि शामिल रहीं।

तीन दिन बाद होली है, दिल्ली की महिलाएं बेसब्री से इंतजार कर रही हैं कि उनके घर में मुफ्त सिलेंडर कब आएगा? - नेता विपख आतिशी

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली :आम आदमी पार्टी ने भाजपा पर होली-दिवाली पर मुफ्त सिलेंडर मुफ्त देने के चुनावी वादे को पूरा करने का दबाव बना दिया है। मंगलवार को पूर्व मुख्यमंत्री और नेता विपक्ष आतिशी ने दिल्ली के अलग-अलग इलाके आईं महिलाओं के साथ '2500 रुपए तो जुमला निकला, क्या फ्री सिलेंडर मिलेगा?' लिखा पोस्टर दिखाकर भाजपा और पीएम नरेंद्र मोदी को उनके चुनावी वादे को याद दिलाया। आतिशी ने कहा कि महिलाओं को 2500 रुपए देने का वादा तो जुमला साबित हो गया, क्या होली पर महिलाओं को मुफ्त सिलेंडर मिलेगा? तीन दिन बाद ही होली है। महिलाएं बेसब्री से इंतजार कर रही हैं कि उनके घर में मुफ्त सिलेंडर कब आएगा? अगर 2500 रुपए की तरह यह वादा भी झूठा निकलता है तो देश के लोग मान लेंगे कि पीएम मोदी की चुनावी गारंटी सिर्फ जुमला होता है।

नेता विपक्ष आतिशी ने मंगलवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर कहा कि भाजपा ने दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले दिल्ली की महिलाओं से कई वादे किए। दिल्ली की महिलाओं ने भाजपा व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर भरोसा किया और चुनाव में वोट देकर भाजपा की सरकार बनाई। भाजपा और पीएम मोदी का सबसे बड़ा वादा था कि 8 मार्च तक दिल्ली की हर महिला के खाते में 2500 रुपए की पहली किश्त आ जाएगी।

आतिशी ने कहा कि 8 मार्च आकर चला गया, 2500 रुपए की पहली किश्त तो छोड़िए, अभी तक इसके लिए रजिस्ट्रेशन भी शुरू नहीं हुआ है। अब यह साबित हो गया है कि दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए देने की पीएम मोदी की जो गारंटी थी, वह जुमला निकली। इसलिए, शायद अब देश भर में कोई भी पीएम मोदी की चुनावी गारंटी पर भरोसा नहीं करेगा।

आतिशी ने कहा कि भाजपा ने चुनाव के दौरान दिल्ली की महिलाओं को 2500 रुपए देने के अलावा होली-दिवाली पर मुफ्त एक सिलेंडर देने का भी वादा किया था। तीन दिन बाद 14 मार्च को होली का त्योहार है। दिल्ली की महिलाएं इंतजार कर रही हैं कि उनके घर में फ्री सिलेंडर कब आएगा? दिल्ली के अलग-अलग हिस्सों से महिलाएं आम आदमी पार्टी के विधायकों के कार्यालय में आ रही हैं और पूछ रही हैं कि होली में तीन दिन बाकी हैं, हमारा फ्री का सिलेंडर कब आएगा? दिल्ली की महिलाएं भाजपा से पूछना चाहती हैं कि क्या 14 मार्च को होली के दिन दिल्ली की सारी महिलाओं को फ्री सिलेंडर मिलने वाला है?

आतिशी ने कहा कि दिल्ली की महिलाएं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और दिल्ली सरकार से यह जानना चाहती हैं कि क्या जैसे 2500 रुपए का वादा जुमला निकला, वैसे ही मुफ्त सिलेंडर का वादा भी जुमला निकलने वाला हैं? क्या दिल्ली की महिलाओं को होली के दिन मुफ्त सिलेंडर मिलेगा या फिर से महिलाओं को धोखा मिलेगा? उन्होंने कहा कि ''आप'' मुख्यालय पर दिल्ली के अलग-अलग कोने से महिलाएं भाजपा, सीएम रेखा गुप्ता और देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से यह पूछने के लिए इकट्ठा हुई हैं कि क्या होली पर हम सभी को मुफ्त का सिलेंडर मिलेगा या नहीं मिलेगा?

आतिशी ने कहा कि आज दिल्ली समेत पूरे देश के लोग भाजपा की ओर बड़ी उम्मीद से देख रहे हैं। देश के लोग जानना चाहते हैं कि क्या पीएम मोदी की गारंटी, वास्तव में गारंटी है या पीएम मोदी की गारंटी झूठ और धोखा है? महिलाओं को खाते में 2500 रुपए देने की पीएम मोदी की पहली गारंटी झूठी और धोखा साबित हो चुकी है। अब देश भर के लोग दिल्ली की भाजपा सरकार की ओर देख रहे हैं कि क्या होली-दिवाली पर दिल्ली की हर महिला को फ्री सिलेंडर देने का पीएम मोदी का वादा भी क्या एक जुमला और धोखा साबित होगा। मुफ्त सिलेंडर देने का वादा भी झूठा साबित होता है और दिल्ली की महिलाओं को फ्री सिलेंडर नहीं मिलता है तो देश के लोगों को यह समझ में आ जाएगा कि पीएम मोदी की चुनावी गारंटी पूरी तरह झूठी होती है।

दिल्ली की महिलाओं ने भाजपा से पूछा, कब मिलेगा फ्री सिलेंडर?

दिल्ली की अलग-अलग इलाकों से आम आदमी पार्टी मुख्यालय पर इकट्ठा हुई महिलाएं अपने साथ सिलेंडर बना पोस्टर भी लेकर पहुंची थीं। पोस्टर पर '2500 रुपए तो जुमला निकला, क्या फ्री सिलेंडर मिलेगा?' लिखा था। महिलाओं ने पूर्व सीएम आतिशी के साथ इस पोस्टर को दिखाकर भाजपा और पीएम नरेंद्र मोदी से पूछा कि होली का त्यौहार तीन दिन बाद ही है। सभी महिलाएं फ्री सिलेंडर मिलने का इंतजार कर रही हैं तो क्या भाजपा फ्री सिलेंडर देने का अपना दूसरा वादा पूरा करेगी या यह भी जुमला साबित होगा।

वैश्विक गेहूं और चावल उत्पादन में वृद्धि एक अच्छा संकेत !(एफएओ रिपोर्ट)

इस साल यानी कि वर्ष 2025 में वैश्विक गेहूं और चावल उत्पादन में मामूली वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। हाल ही में एफएओ ने फसलों की सम्भावना और खाद्य स्थिति पर रिपोर्ट जारी की है।पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 2025 में वैश्विक गेहूं उत्पादन 79.6 करोड़ टन रहने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष यानी कि वर्ष 2024 की तुलना में लगभग 1 प्रतिशत अधिक होगा, जो मामूली वृद्धि है। गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) का यह पूर्वानुमान मुख्य रूप से यूरोपीय संघ, विशेष रूप से फ्रांस और जर्मनी में उत्पादन बढ़ने की उम्मीद पर आधारित है। दरअसल,एफएओ ने इन क्षेत्रों(फ्रांस और जर्मनी) में अधिक गेहूं के बोए जाने का अनुमान जताया है।हालांकि, यह भी कहा गया है कि पूर्वी यूरोप में शुष्क परिस्थितियों और पश्चिमी क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा जैसी चुनौतियां पैदावार को प्रभावित कर सकती हैं। वहीं दूसरी ओर अमेरिका में गेहूं का रकबा बढ़ने की संभावना है, हालांकि, यह बात भी कही गई है कि सर्दियों की फसल पर सूखे के प्रभाव के कारण पैदावार में मामूली गिरावट भी आ सकती है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि हाल ही में एफएओ की गेहूं और धान (चावल) उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जो संभावनाएं जताई गई हैं, वे वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिहाज से बहुत ही महत्वपूर्ण और अहम इसलिए है, क्यों कि आज बदलती जलवायु परिस्थितियों, मौसमी बदलाव, रूस-यूक्रेन युद्ध, हमास इजरायल युद्ध के बीच वैश्विक खाद्य सुरक्षा पर कहीं न कहीं व्यापक असर पड़ा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा विश्व के देशों पर टैरिफ की घोषणा से भी अनाज महंगा होगा।कहना चाहूंगा कि आज वैश्विक युद्धों के कारण अनाज की वैश्विक आपूर्ति पर असर पड़ा है। ऐसे समय में अनाज की प्रचुरता मानवजाति के लिए अच्छा संकेत कही जा सकती है। आज भी विश्व में अनेक देश ऐसे हैं जो भुखमरी का सामना कर रहे हैं। ऐसे में अनाज उत्पादन में बढ़ोत्तरी एक सुखद खबर कहीं जा सकती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि गेहूं और चावल भारत जैसे देश में तो बुनियादी आवश्यकताएं हैं। अनाज उत्पादन में वृद्धि से अनाज की बाजार में आपूर्ति सही बनी रहेगी और आपूर्ति सही होने से अनाज की कीमतों में बढ़ोत्तरी नहीं होगी। कहना चाहूंगा कि अनाज की कीमतें स्थिर बनीं रहेंगी, जिससे आम आदमी को काफी राहत मिलेगी। आज कमोबेश पूरे विश्व में संघर्ष और असुरक्षा का दौर है। ऐसे दौर में विश्व में खाद्य असुरक्षा की स्थितियां भी गंभीर हैं। ऐसे में यह सुनिश्चित किया जाना बेहद जरूरी है कि इस अनाज उत्पादन का लाभ विशेषकर उन 45 देशों तक सही ढंग से पहुंचे। वास्तव में इन 45 देशों को खाद्य सहायता की आवश्यकता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इनमें अफ्रीका के 33, एशिया के नौ, दक्षिण अमेरिका और कैरिबियन के 2 और यूरोप का एक देश शामिल है। हाल ही में जारी इस रिपोर्ट के मुताबिक चल रहे संघर्ष और असुरक्षा, गंभीर खाद्य असुरक्षा को जन्म दे रही है। गौरतलब है कि एफएओ ने इस बात की भी पुष्टि की है कि गाजा (फिलिस्तीन) और सूडान में लोग सबसे बड़े खाद्य संकट (आईपीसी चरण 5) का सामना कर रहे हैं।वास्तव में,संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) की हालिया रिपोर्ट कुछ समय पहले ही जारी वर्ल्ड बैंक व अमेरिका के इहाडो यूनिवर्सिटी की उस रिपोर्ट की भी पुष्टि करती है, जिसके अनुसार 1960 के दशक से ही दुनिया भर में कृषि उपज में लगभग समान दर से वृद्धि जारी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इससे पिछले कुछ दशकों से जताई जा रहीं उन चिंताओं पर भी विराम लगेगा, जिसके अनुसार दुनिया की बढ़ती आबादी की जरूरतों के मद्देनजर दुनिया भर में फसलों के उत्पादन(अनाज उत्पादन) में कमी या स्थिरता आने के आसार हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारत का खाद्यान्न उत्पादन फसल वर्ष 2023-24 में रिकॉर्ड 33.22 करोड़ टन पर पहुंच गया था। भारत में गेहूं और चावल की बंपर फसल की वजह से कुल खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा। कृषि मंत्रालय द्वारा जारी एक बयान के अनुसार फसल वर्ष 2023-24 के लिए अंतिम अनुमान इससे पिछले वर्ष के 32.96 करोड़ टन से 26.1 लाख टन की वृद्धि को दर्शाया। गौरतलब है कि इस दौरान चावल उत्पादन रिकार्ड 13.78 करोड़ टन पर पहुंच गया, जो वर्ष 2022-23 में 13.57 करोड़ टन था। गेहूं का उत्पादन भी 2022-23 के 11.05 करोड़ टन की तुलना में बढ़कर 11.32 करोड़ टन के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। गौरतलब है कि चावल उत्पादन वर्ष 2024-25 में 54.3 करोड़ टन के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने का अनुमान है, जो भारत में बेहतर फसल की संभावनाओं और कंबोडिया व म्यांमार में अनुकूल मौसम परिस्थितियों के कारण है। सच तो यह है कि देश-दुनिया में धान की पैदावार को लेकर भी सकारात्मक रुख बना हुआ है। गौरतलब है कि फरवरी की तुलना में एफएओ ने वर्ष 2024-25 में वैश्विक चावल उत्पादन के पूर्वानुमान को 36 लाख टन बढ़ा दिया है। उल्लेखनीय है कि मार्च में 2024 के लिए वैश्विक अनाज उत्पादन का अनुमान मामूली रूप से बढ़ाकर 284.2 करोड़ टन किया गया है, जिससे वर्ष 2023 और वर्ष 2024 के उत्पादन के बीच का अंतर 144 लाख टन रह गया है। वास्तव में, वर्ष 2024 के उत्पादन में किए गए संशोधन मुख्य रूप से गेहूं के कारण हैं। जानकारी के अनुसार ईरान में गेहूं की फसल काफी अच्छी रही है। विपणन वर्ष 2024-25 में वैश्विक अनाज खपत 286.7 करोड़ टन रहने का अनुमान है, जो पिछले वर्ष की तुलना में एक प्रतिशत अधिक है। इसका मुख्य कारण रिकॉर्ड चावल खपत की उम्मीद है। वहीं दूसरी ओर गेहूं की खपत स्थिर रहने की संभावना है। अनुमान है कि खाद्य के रूप में इसकी खपत में मामूली गिरावट आएगी, लेकिन चीन में इसके औद्योगिक उपयोग में वृद्धि होगी। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि एफएओ ने अपनी नई क्रॉप प्रॉस्पेक्ट्स एंड फूड सिचुएशन रिपोर्ट में बताया है कि उत्तर अफ्रीका में लंबे समय तक शुष्क मौसम ने अनाज उत्पादन की संभावनाओं को प्रभावित किया है। दक्षिणी अफ्रीका में अनुकूल वर्षा से वर्ष 2024 की भारी गिरावट के बाद फसल पैदावार में सुधार होने की उम्मीद है। इतना ही नहीं,सुदूर पूर्व एशिया में 2025 में गेहूं उत्पादन में वृद्धि जारी रहने की संभावना है। वास्तव में फसल का रकबा बढ़ने और अनुकूल मौसम परिस्थितियों के कारण ऐसा होगा। एशिया के अन्य क्षेत्रों में वर्ष 2024 के अंत से कम वर्षा के कारण उपज की संभावनाएं प्रभावित हुई हैं, जिससे गेहूं की पैदावार पांच साल के औसत से नीचे गिर सकती हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दक्षिण अमेरिका में मिश्रित मौसम परिस्थिति मक्का उत्पादन को प्रभावित कर रही है, जबकि अर्जेंटीना में स्टंट रोग के प्रकोप का खतरा बना हुआ है। हालांकि, ब्राजील में बेहतर उत्पादन संभावनाओं के कारण कुल उत्पादन औसत से ऊपर रहने की संभावना है। मेक्सिको में भी लगातार शुष्क मौसम के कारण बुवाई में कमी आई है, जबकि अन्य क्षेत्रों में अनुकूल मौसम से पैदावार में वृद्धि की उम्मीद है।बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत, जो दुनिया के अग्रणी गेहूं और धान उत्पादकों में से एक है, के लिए भी ये आंकड़े बहुत ही महत्वपूर्ण व अहम हैं। पाठकों को बताता चलूं कि जब कभी भी किसी देश में अनाज उत्पादन में वृद्धि होती है तो उसका असर देश के निर्यात, वहां के किसानों की आय और सरकारी खरीद नीतियों पर भी पड़ता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इससे देश के किसानों को कहीं न कहीं लाभ होगा और निर्यात से देश को आर्थिक रूप से फायदा भी। लेकिन यहां यह भी उल्लेखनीय है कि भारत को 'मानसून का जुआ' कहा जाता है, क्यों कि यहां वर्षा का पैटर्न समान नहीं है और कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि और ओलावृष्टि देखने को मिलती है। पिछले कुछ समय से ग्लोबल वार्मिंग में भी बढ़ोतरी हुई है। बढ़ती जनसंख्या के बीच जल संकट की समस्या भी एक बड़ी समस्या है और जल संकट से अनाज उत्पादन भी कहीं न कहीं प्रभावित होता ही है। ऐसे में ये सभी फैक्टर(कारक) गेहूं व धान उत्पादन को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे में जरुरत इस बात की है कि सरकार देश में समुचित जल प्रबंधन, उच्च गुणवत्ता वाले बीज और आधुनिक कृषि तकनीकों, नवाचारों को बढ़ावा दे। भारत जैसे विकासशील देश में अनाज भंडारण की समस्या भी एक बड़ी समस्या है। आंकड़े बताते हैं कि भारत में वार्षिक भंडारण हानि 7000 करोड़ रूपए कीमत के लगभग 14 मिलियन टन खाद्यान्न हैं, जिसमें अकेले कीटों से हानि लगभग 1300 करोड़ रूपए है। हमारे यहां अवैज्ञानिक भंडारण, कीट, चूहे, सूक्ष्म जीवाणु आदि के कारण कुल उत्पादित खाद्यान्नों के लगभग 10 प्रतिशत की फसल कटाई उपरान्त हानि होती है। अनाज भंडारण ही नहीं हमें आज अनाज वितरण प्रणाली पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हमारे देश में हर साल लाखों टन अनाज विभिन्न व्यवस्थागत खामियों के चलते बर्बाद हो जाता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार

पानी की बरबादी को रोक सकते हैं। जल ही जीवन है।

जल हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह हमारे शरीर को हाइड्रेटड रखने, हमारे खाने को पचाने, और हमारे शरीर को साफ रखने में मदद करता है। लेकिन जल की बरबादी एक बड़ी समस्या है जो हमारे भविष्य के लिए खतरनाक हो सकती है।

जल की बरबादी को रोकने के लिए हमें कुछ उपाय करने होंगे।

यहाँ कुछ और बिंदु हैं जो जल की बचत और संरक्षण के संबंध में महत्वपूर्ण हैं।

जल की बचत के लिए घरेलू उपाय।

पानी की टंकी को बंद करने के लिए ऑटोमैटिक शटऑफ वाल्व का उपयोग करें।

नहाने के लिए शॉवर का उपयोग करने के बजाय बाल्टी का उपयोग करें।टॉयलेट में जल की बचत करने के लिए डुअल-फ्लश टॉयलेट का उपयोग करें।पानी के नलों को बंद करने के लिए ऑटोमैटिक शटऑफ वाल्व का उपयोग करें।वर्षा जल संचयन प्रणाली लगाएं।जल के प्रदूषण को रोकने के लिए।नदियों और तालाबों को साफ रखें।जल प्रदूषण को रोकने के लिए औद्योगिक इकाइयों को नियंत्रित करें।

कृषि में जल प्रदूषण को रोकने के लिए सुरक्षित और टिकाऊ कृषि पद्धतियों का उपयोग करें।

जल प्रदूषण को रोकने के लिए घरेलू और औद्योगिक अपशिष्ट को सुरक्षित तरीके से निपटाएं।जल के संरक्षण के लिए शिक्षा और जागरूकता की आवश्यकता है।

सिंचाई के लिए ड्रिप इरिगेशन सिस्टम का उपयोग करें।

उद्योगों में जल की बचत करने के लिए जल संचयन प्रणाली लगाएं।कृषि में जल की बचत करने के लिए सुरक्षित और टिकाऊ कृषि पद्धतियों का उपयोग करें।

जल प्रदूषण को रोकने के लिए नदियों और तालाबों को साफ रखें।जल की बचत करने के लिए समुदाय को शामिल करें।

जल की बचत करने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करें।

इन तरीकों को अपनाकर हम पानी की बरबादी को रोक सकते हैं।और जल के संरक्षण में योगदान कर सकते हैं।

जल के महत्व और जल की बचत के तरीकों के बारे में शिक्षा प्रदान करें।

जल के संरक्षण के लिए जागरूकता अभियान चलाएं।

जल के संरक्षण के लिए समुदाय को शामिल करे।

जल के संरक्षण के लिए सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करें।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह
हरदा मध्य प्रदेश

पावन होली का त्यौहार: शक्ति पर भक्ति और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक

"होली का त्यौहार सभी अच्छे से मनाएं, स्वस्थ और खुश रहें"

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा, संजय सागर सिंह। पावन होली के पर्व पर समाजसेवीयों ने सभी को एक प्रेरणादायक संदेश दिया। उन्होंने होली के इस विशेष अवसर पर जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को छुआ और कहा कि यह पर्व न केवल रंगों और उमंगों से भरा होता है, बल्कि हमें अपने आचरण पर ध्यान देने की प्रेरणा भी देता है।

इस पावन अवसर पर ,वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने कहा, ₹होली का त्यौहार शक्ति पर भक्ति और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। अच्छाई की जीत सदैव होती है और आगे भी होती रहेगी। शर्त सिर्फ इतनी है कि हम अपना काम पूरी लगन और ईमानदारी से करें।₹ उन्होंने सभी को यह याद दिलाया कि हमें अपने कर्मों में ईमानदारी और सकारात्मक दृष्टिकोण से विश्वास रखना चाहिए। जीवन की असली सफलता सच्चाई, मेहनत गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा में है। इसी विचार के साथ होली के खूबसूरत रंगों की तरह, आपको और आपके पूरे परिवार को रंगों और उमंगों भरी शुभकामनाएं। होली का त्यौहार सभी अच्छे से मनाएं, स्वस्थ रहें और खुश रहें।"

वरिष्ठ समाजसेवी उपेंद्र सिंह ने कहा,₹ शक्ति पर भक्ति की विजय के पावन पर्व पर ने कहा, होली के इस पर्व पर रंगों और उमंगों से भरपूर शुभकामनाएं! ₹रंगों और उमंगों से भरा यह त्योहार सभी के लिए विशेष है, और हमें इसे खुशी और स्वास्थ्य के साथ मनाना चाहिए। होली का त्यौहार जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। यह हमारे मन और शरीर को फिर से सक्रिय करता है, जिससे हम नई चुनौतियों के लिए तैयार होते हैं। यह पर्व मौसम की बोरियत की जंजीरों को उड़ाता है और हमारे शरीर में नई ऊर्जा का संचार करता है।"

अरविन्द पुष्कर एडवोकेट इस अवसर पर सभी को होली की हार्दिक शुभकामनायें व्यक्त की और बताया कि हमें अपने शब्दों और बोलचाल पर पूरी तरह से नियंत्रण रखना चाहिए, क्योंकि यही हमारे जीवन की दिशा तय करते हैं। ₹दुनिया के बड़े से बड़े और टॉप समृद्ध पैसेवाले लोग साधारण जीवन जीते हैं, वे बेमतलब के दिखावें और खामखा के प्रदर्शन एवं फिजूल खर्चा में बिल्कुल रुचि नहीं रखते हैं।₹जीभ' और 'शब्द' की युगलबंदी मनुष्य के जीवन का वह अनमोल तोहफा है ! किसी ने इनसे बहुत सारा सुकून कमाया है, तो किसी ने इन्हीं के कारण सब कुछ गंवा दिया ! अपनी ताकत का, अपने पैसे का, अपने काम काज और लग़जरी लाइफ का, अपने ज्ञान का घमण्ड फिजूल है, क्युकी पूरी दुनियां में बड़े से बड़े टॉप खरवों अरवों पति बहुत ही सरल जीवन जीते हैं, वो ज्यादा बेमतलब और खामखा का दिखाबा ज़रा भी पसंद नहीं करते और वो सारा जीवन मालिक की भक्ति में और ग़रीब, जरूरतमंदों एवं लाचारों की सेवा में लगा कर इसे सफल करते है।

समाजसेवी पंकज जैन ने कहा, ₹यह होली, आप सभी को ढेर सारी खुशियाँ और सफलता मिले, यही मेरी कामना है। हम परमपिता परमात्मा से आपके और आपके परिवार के लिए हार्दिक कामना करते हैं कि यह होली पर्व आपके जीवन में अनेकों सफलताएं, अपार खुशियां, वैभव, ऐश्वर्य, यश, उन्नति, प्रगति, आदर्श, स्वास्थ्य, प्रसिद्धि और समृद्धि लाए।₹उन्होंने यह भी कहा, "होली का त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रमाण है। हंसी-खुशी का यह त्योहार सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

इस संदेश के साथ, सभी समाजसेवीयों ने होली की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और इसे जीवन के सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाने का अवसर बताया।

कानपुर में पाइप लाइन से डीजल चुराने वाले गिरोह के तीन गिरफ्तार, सरगना फरार

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां पाइप लाइन से अब तक लाखों रुपए कीमत का हजारों लीटर डीजल चुरा कर बेंच चुके शातिर गिरोह का भंडाफोड़ किया गया है। इस गिरोह के पकड़े गए तीन अपराधियों के पास से भारी मात्रा में डीजल भी बरामद हुआ है। इस दौरान सरगना भाग जाने में सफल रहा। पुलिस उसकी तलाश कर रही है। इस गिरोह के भंडाफोड़ के लिए पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार ने टीम का गठन किया था। इसके बाद पुलिस इस गिरोह की तलाश लगातार कर रही थी। पुलिस को यह सफलता नरवल थाना क्षेत्र में मिली। इंडियल ऑयल की लाइन में सेंधमारी करके डीजल चोरी करके बेंचा जा रहा था।

एडीसीपी ईस्ट मनोज कुमार पांडेय ने बताया कि इंडियन ऑयल पाइप लाइन डिवीजन पनकी के सहायक प्रबंधक नीरज रस्तोगी ने नरवल थाने में 6 मार्च को रिपोर्ट दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया था कि इंडिया से नेपाल तक जाने वाली इंडियन ऑयल की लाइन में शातिरों ने नरवल के थेरेपा गांव में सेंधमारी करके पूरा सेटअप लगा दिया था।

जानकारी के मुताबिक यहांपर रोजाना पाइप लाइन से हजारों लीटर तेल चोरी किया जा रहा था। पाइप लाइन में लगातार प्रेशर कम होने पर पूरी लाइन का सर्वे कराया गया तो सामने आया कि तेल चोरों के सिंडीकेट ने नरवल में तेल चोरी करने के लिए पाइप लाइन में छेद करके वॉल्व लगा दिया है। रोजाना लाइन से हजारों लीटर डीजल चोरी किया जा रहा है।

तेल चोरी करने वाले गैंग का खुलासा करने के लिए पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार ने नरवल थाने की पुलिस के साथ ही डीसीपी ईस्ट और क्राइम ब्रांच को भी लगाया था। इसके बाद ही पुलिस को गिरोह का भांडा फोड़ करने में सफलता मिली। अब उसके सरगना की तलाश की जा रही है।

जोगीरा सा रा रा रा!

पढ़ने वाले हो गए बेकार
सत्ता के रंग में शिक्षा है बीमार!₹

रंग-बिरंगी होली आई, चौक पड़े सब यार,
राजनीति की चाल निराली, जनता लाचार॥

कभी राम के नाम पे भागें, कभी रहे मगरुर,
हाथी, साइकिल, फूल बदलते, जनता जाए भूल॥

ग़रीब यहाँ पर खेल न पाए, सोचे पेट की आग,
नेता खेले फाग सियासी, जनता रंग बिन फाग॥

व्यापमं जैसा घोटाला, शिक्षा बनी बाज़ार,
डिग्रियां लटकी हैं ऐसे, जैसे लटके तार॥

जनता ठगी खड़ी देखे, विकास गया है सो,
सड़कों पर गड्ढे बसते, बिजली जाती रोज़॥

किसानों को ऋण माफी का, सपना खूब दिखाया,
मौसम मारा, भाव गिराकर msp लुटाया॥

युवाओं से वादे कितने, रोज़गार के जाल,
हर परीक्षा के पहले उड़ते, पर्चों के सवाल॥

नेता बदले, रंग बदलते, सत्ता खेल अनोखा,
जनता देखे नाटक सारा, हर चेहरा बेमौका॥

ज्ञान धरोहर को भी देखो, बना रहे हैं ग्रास,
सदन शारदा या नालंदा,समझते हैं बस घास॥

किताबों के मंदिर मिटा कहे, बना रहे बाजार,
शिक्षा की नींव हिला रहे, कहें खुद को सरकार॥

बुद्धिजीवियों की आवाज़, दबती हर दिन देख,
सभ्यता के रंग उतारे, अंधकार से नेक?

संविधान की लाज बचाने निकले थे जो लोग,
सत्ता के हाथों बिके, हुए कुछ नेता भोग॥

अब के होली नई तरह से, मत डालो यह रंग,
नेता नहीं, नीति बदलो, मिटे झूठ का ढंग॥

होली में अब संकल्प करें, सच्चे पथ को थाम,
नफरत-झूठ मिटा के लिखें, भारत का नया नाम॥

प्रेषक लेखिका - स्वाति सिंह साहिबा इन्दौर
दुरदर्शन कवयित्री
संस्थापिका
अनुरनन प्रतिध्वनि साहित्यिक मंच

सूचना का अधिकार अधिनियम नाममात्र का कानून :- नरेश गुणपाल

परिवहन विशेष न्यूज

हिसार, हरियाणा। आरटीआई एक्टिविस्ट नरेश गुणपाल ने सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम-2005 में संशोधन करने को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की है कि केंद्र सरकार ने आरटीआई अधिनियम को पहले 2019 में और फिर 2023 में संशोधित करके कमजोर कर दिया था, जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही गंभीर रूप से सीमित हो गई थी। सरकार ने 2023 में डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट (डीपीडीपी एक्ट) कानून बनाया, जो सूचना के अधिकार (आरटीआई) अधिनियम, 2005 में महत्वपूर्ण संशोधन पेश करता है। व्यक्तिगत जानकारी अब आरटीआई अधिनियम के तहत प्रकटीकरण से पूरी तरह मुक्त है, जिसमें सार्वजनिक हित के लिए कोई प्रावधान नहीं है। सरकार अब सार्वजनिक अधिकारियों की योग्यता, संपत्ति या वित्तीय अनियमितताओं में संलिप्तता के बारे में विवरण के अनुरोधों को रोक सकती है, आरटीआई अधिनियम के तहत पहले प्राप्त की जा सकने वाली जानकारी यदि सार्वजनिक हित में समझी जाती है।

उन्होंने कहा डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट (डीपीडीपी एक्ट) -2023 के तहत आरटीआई की धारा 8(1)(J) में संशोधन करने से आरटीआई निरर्थक निष्प्रभावी हो गया, जिससे तो सूचना का अधिकार सूचना देने के बजाय लापरवाह गैर जिम्मेदार अधिकारियों के लिए सूचना ना देने का हथियार बन सकता हैं संभव है कि अब आपको सरकार से चाही गई जानकारी भी कभी ना मिल सके। बदले हुए नियम के अनुसार आरटीआई के तहत कोई भी व्यक्तिगत जानकारी नहीं दी जा सकती।

उन्होंने कहा कि यह गोपनीयता की आड़ में सूचना ना देने के अलावा और कुछ नहीं है, अगर केंद्र सरकार सबकी चिंताओं को नज़रअंदाज़ करके नियमों को अधिसूचित करती है तो आरटीआई एक शक्तिहीन अधिकार बनकर रह जाएगा, जिसका देश के नागरिकों को कोई फायदा नहीं होगा। आरटीआई को कमजोर करना पारदर्शिता और जवाबदेही दोनों पर सीधा हमला है जो सूचना के मौलिक अधिकार को भी खतरे में डालता है।

उन्होंने कहा कि आरटीआई का मूल उद्देश्य नागरिकों को सशक्त बनाना, सरकार के कामकाज में पारदर्शिता, जवाबदेही को बढ़ावा देना, भ्रष्टाचार को रोकना और लोकतंत्र को वास्तविक अर्थों में लोगों के लिए काम करने योग्य बनाना था। एक जागरूक नागरिक सरकार के साधनों पर आवश्यक निगरानी रखने, सरकार को शासितों के प्रति अधिक जवाबदेह बनाने के लिए , देश के नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों के नियंत्रण में सूचना तक पहुँच बनाने के लिए लागू किया गया था। आरटीआई ने बार-बार बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार या नीतियों में खामियों को उजागर किया है।

उन्होंने कहा कि यह गोपनीयता की आड़ में सूचना ना देने के अलावा और कुछ नहीं है, अगर केंद्र सरकार सबकी चिंताओं को नज़रअंदाज़ करके नियमों को अधिसूचित करती है तो आरटीआई एक शक्तिहीन अधिकार बनकर रह जाएगा, जिसका देश के नागरिकों को कोई फायदा नहीं होगा। आरटीआई को कमजोर करना पारदर्शिता और जवाबदेही दोनों पर सीधा हमला है जो सूचना के मौलिक अधिकार को भी खतरे में डालता है।

नरेश गुणपाल आरटीआई एक्टिविस्ट

2025 की होली पर रमजान के दूसरे सप्ताह के शुक्रवार का दिन-सौहार्द, भाईचारा, प्रेम, सामाजिक समरस्ता का संकल्प लें

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर त्योहारों के प्रतीक भारत में आदि अनादि काल, हजारों वर्षों से सभी त्यौहारों को बड़े ही आत्मीयता, उत्साह सौहार्द से मनाने की प्रथा रही है जो आज भी उसी लगन, उत्सव, आनंद से शुरू है।हर साल होली का त्योहार चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि को मनाया जाता है. रंगों के त्योहार को होली के नाम से जाना जाता है. इस बार होली का त्योहार 14 मार्च, शुक्रवार को मनाया जाएगा. होली से एक दिन पहले होलिका दहन करने की परंपरा है यानी 13 मार्च को होलिका दहन होगा।

साथियों बात अगर हम 13- 14 मार्च 2025 दो दिवसीय होलीका पर्व उत्सव की करें तो हर भारतीय त्योहार की तरह होली मनाने का भी अपना एक कारण है जिसको जानना आधुनिक युवाओं के लिए ख़ास महत्वपूर्ण है। पौराणिक कथाओं के अनुसार प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नामक राक्षस राजा का पुत्र प्रहलाद, भगवान विष्णु का परम भक्त था जो उसके राक्षस पिता को पसंद नहीं था और भक्ति से विमुक्ति करने उसने अपनी बहन होलिका को यह जिम्मेदारी सौंपी, जिसे वरदान प्राप्त था कि अग्नि भी उसकी देह को जला नहीं सकती, इसलिए होलिका ने भगत प्रह्लाद को मारने उसे गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश हो गई परंतु वह खुद जल गई पर भगत प्रल्हाद का बाल भी बांका नहीं हुआ दूसरी ओर रंग वाली होली पर्व उत्सव राधा-कृष्ण के पावन प्रेम के प्रतीक के रूप में भी मनाई जाती है। समय के बदलते परिपेक्ष में वर्तमान समय में मीडिया में इसे मनाने को लेकर अनेक पर्यावरणीय योग उपचार, स्वास्थ्य संबंधी वैज्ञानिक कारण भी बताए गए हैं। वर्तमान समय में परिस्थितियों बदल गई है, अभी 2025 की होली में रमजान के दूसरे सप्ताह में शुक्रवार के दिन होली भी मनाई जाए जा रही है इसीलिए शासन प्रशासन नागरिकों को विशेष ध्यान रखना होगा। होली के रंग में सराबोर हो आपसी सौहार्द, भाईचारा, प्रेम, सामाजिक समरस्ता का संकल्प लेना होगा शासन प्रशासन मुस्लिम कमेटीयों द्वारा भी प्रशासन द्वारा जारी की गई गाइडलाइन का पालन करने पर जोर दिया। यह कदम दोनों त्योहारों के शांतिपूर्ण आयोजन को सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया है। रमजान उल मुबारक दूसरे जुमा की नमाज होली को देखते हुए कमेटी द्वारा गाइडलाइन जारी की गई है।

(1)- रमजान का पाक महीना चल रहा है। 14 मार्च को जुमा भी है और हमारे हम वतनी भाइयों का होली का त्योहार भी है। इस दिन हिंदू भाई रंग खेलेंगे। मुस्लिम बड़ी तादात में मस्जिदों की तरफ जुम्मे की नमाज अदा करने जाएंगे। ऐसे में अपने घर से करीब मस्जिदों में नमाज अदा करें। (2)- जिन रास्तों पर होली का रंग चल रहा हो,ऐसे रास्तों से न गुजरे। बल्कि दूसरे रास्तों का चयन करके मस्जिद पहुंचे। अपनी नमाज अदा करें और अपने घरों को आए। (3)- ये मिश्रित आबादी वाली मस्जिदों पर विशेष ख्याल रखा जाए। दो शिफ्ट में नमाज अदा करें। मस्जिद की जिम्मेदार कमेटी के लोग हालात के मद्देनजर टाइमिंग को सेट कर लें। ताकि नमाज भी मुकम्मल हो जाए और नमाजियों को मस्जिदों तक आने और जाने में किसी तरह की परेशानियां ना हों।(4)- सड़कों पर नमाज न अदा करें। बल्कि मस्जिदों के अंदर से सफ्वंदी करें। तादाद ज्यादा हो तो दो शिफ्ट में नमाज अदा करें।(5)- किसी भी तरह की अफवाहों पर ध्यान ना दिया जाए। आपसी भाईचारा बनाए रखें। सद्भावना का संदेश देते हुए दोनों त्योहार को सकुशल संपन्न कराएं। धोखे से या गलती से रंग पड़ जाए तो बहस न करें। मानवता का संदेश देने वाले पैगंबरे इस्लाम हजरत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के किरदार को बहैसियते मुसलमान आम करें।(6)- रमजान मुबारक का बरकत वाला महीना चल रहा है ज्यादा से ज्यादा। इबादत में वक्त गुजरे गरीबों, बेव यत्तीम, बीमारो, पड़ोसियों की मदद करें इंसानियत का पैगाम दें। (7)- देश की तरक्की के लिए दुआ करें, मुल्क में अमन चैन कायम रहे। इसके लिए अपनी दुआओं में विशेष ख्याल रखें। इबादत का महीना है। आपकी तरफ से किसी को तकलीफ ना हो। इसका ख्याल रखें। रातों को सड़कों पर नहीं घूमें। बल्कि मस्जिदों और घरों में इबादत करें। अल्लाह और उसके रसूल को राजी करें।

साथियों बात अगर हम भारतीय रेलवे प्रशासन द्वारा रेलवे परिसर में होली हुड़दंग पर नजर रखने की करें तो, होली के त्योहार के दौरान रेलवे में यात्रियों को सुरक्षित यात्रा प्रदान करने के लिए रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) और राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) ने सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी है, ताकि ट्रेनों के साथ-साथ स्टेशनों पर भी गुंडागर्दी पर नजर रखी जा सके। रेलवे अधिकारियों के अनुसार सुरक्षाकर्मी पटरियों, प्लेटफार्मों और ट्रेनों की निगरानी कर रहे हैं. वे त्योहार के दौरान किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए रेलवे पटरियों के पास रहने वाले ग्रामीणों को शामिल करने की कोशिश कर रहे हैं।अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षाकर्मियों ने ग्रामीणों को जागरूक किया है और उनसे कहा है कि अगर उन्हें पटरियों के पास कोई संदिग्ध गतिविधि दिखे तो वे इसकी सूचना दें। सुरक्षाकर्मियों ने एंट्री और एग्जिट गेट, प्लेटफार्मों, पार्किंग, ट्रेनों और पटरियों पर गहन जांच और पैदल गश्त शुरू कर दिया है। आपराधिक घटनाओं की रोकथाम और सुरक्षा व्यवस्था के लिए जीआरपी विभिन्न रेलवे स्टेशनों के बाहरी और रेलवे ट्रैक पर गश्त कर रही है और संदिग्ध व्यक्तियों की जांच और निगरानी कर रही है। आगामी त्योहारों के मद्देनजर केंद्रीय रेल मंत्री ने हाल ही में स्टेशनों पर भीड़ नियंत्रण को लेकर एक उच्च स्तरीय बैठक की और कई निर्देश जारी किए थे।

साथियों बात अगर हम रंगों के महोत्सव होली पर क्या करें और क्या नहीं करें को समझने की करें तो (अ) होली पर क्या करें? (1) इस मौके पर होली खेलने के लिए, गुलाल फूल, व साफ पानी का उपयोग करें। (2) सबसे पहले अपने ईष्ट को रंग लगाएं। (3) इस दिन राधा-कृष्ण और शिव-पार्वती की विधिवत पूजा करें। (4) फिर अपने घर के बड़ों को सम्मान के साथ गुलाल लगाएं और उन्हें मिठाई खिलाएं। (5) इसके साथ ही इस मौके पर भगवान विष्णु और धन, प्रचुरता-समृद्धि की देवी लक्ष्मी की पूजा करें। (6) इस दिन ज्यादा से ज्यादा दान-पुण्य करें, क्योंकि इस दिन यह बहुत लाभकारी माना गया है। (7)अपने प्रियजनों के साथ होले खेलें। (8) इस मौके पर सात्विक भोजन करें। (9) इस मौके पर अपने शत्रुओं को भी माफ कर उन्हें प्यार और होली के रंग में रंग दें।(बी)होली पर क्या न करें? (1) इस दिन किसी के साथ विवाद न करें (2) इस दिन बड़ों का अपमान न करें। (3) दूसरों के बारे में बुरा बोलने से बचें। (5) इस शुभ दिन पर तामसिक भोजन खाने से बचें। (6) इस दिन ब्रह्मचर्य का पालन करें।

साथियों बात अगर हम उपरोक्त पौराणिक और वैज्ञानिक कारणों को मानकर होली मनाने के उद्देश्य समझने की करें तो बुराई में चाहे कितनी भी ताकत हो किंतु अच्छाई की तपिश में खाक हो जाती है। इसलिए हम पिछले दो साल के कोरोनाकाल के दुखदाई क्षणों से उबर रहें हैं तो होलिका दहन के साथ हम अपनी नकारात्मकता और बुराइयों को दहन कर भाईचारे को मजबूत रंगों में रंगेआओ सब मिलकर होली के रंग में सराबोर हो आपसी सौहार्द, भाईचारा, प्रेम सामाजिक समरसता का संकल्प लेकर एक नए मज़बूत भारत में प्रवेश कर अपने विज़न 2047 और 5 ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने की ओर आगे क़दम बढ़ाएं।

साथियों बात अगर हम होली पर्व उत्सव से प्रेरणा की करें तो, अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक, असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक यह त्यौहार हमें बताता है कि अधर्म असत्य कितना भी बलशाही क्यों न हो, हमारी ताकत, संकल्प, जुनून, जांबाज़ी, ज़ज़्बे की ताकत उसे ध्वस्त कर देगी। यह ताकत हमें आपसी भाईचारे, सद्भाव, सौहार्द और मानवीय सामाजिक समरसता से ही मिलेगी जिसकी प्रेरणा हमें होली पर्व महोत्सव से लेने की जरूरत है। यह त्यौहार हमें भीतरी विकारों को त्यागने वह नष्ट करने की प्रेरणा सदियों से देता आया है और इस होलिका दहन पर हम सभी के विकारों का इस पवित्र अग्नि के साथ समूल नाश करें।

साथियों बात अगर हम होली पर्व उत्सव को वर्तमान आधुनिक परिपेक्ष में दूषित करने से बचाने की करें तो,होली का त्यौहार भारतीय त्यौहारों में एक महत्व रखता है ,खासकर के पूर्वोत्तर क्षेत्र में। होली का त्यौहार यूं तो आज पूरे विश्व में मनाया जाता है।भारतीय त्योहारों को मनाने के पीछे उसका उद्देश्य छिपा रहता है। यह त्यौहार प्रकृति तथा व्यक्ति के जीवन पर आधारित होता है।इसको मनाने के पीछे वैज्ञानिक तर्क भी कार्य करते हैं। होली के त्यौहार को भारत के विद्वान तथा बुद्धिजीवी लोग तो जानते हैं ,किंतु कुछ असामाजिक तत्व इसकी मर्यादा को भंग करते हैं। मर्यादा से तात्पर्य यह है कि इसके उद्देश्य को क्षति पहुंचाते हैं। यह त्यौहार खुशियां मनाने का है, एक दूसरे के सुख में शामिल होने का है, अपने दुखों को भूल जाने का है। वहीं कुछ लोग इस त्यौहार को दूषित करते हैं अर्थात दारू, मदिरा, भांग, मांस आदि खाकर इस त्यौहार की मर्यादा को तोड़ते है साथ ही वह अपने परिवार तथा समाज के मर्यादाओं को भी क्षति पहुंचाते हैं। और त्योहार की गरिमा को भंग करते हैं? हालांकि यह उनके विवेक पर निर्भर करता है। हमारा उद्देश्य है समाज में त्यौहार की मर्यादा को बनाए रखना तथा उसके प्रति समाज को जागरूक करना। जो व्यक्ति इस मर्यादा को तोड़ता है अथवा भंग करता है उसे हम एक सच्चे समाज के व्यक्ति होने के नाते रोक सकते हैं। इसकी गरिमा को बचाए रखने के लिए इसके वैज्ञानिक तथ्य को उसके समक्ष रख सकते हैं। हम सबसे आशा करते हैं तोहार को त्यौहार के रूप में मनाते रहे इससे दारू, मदिरा तथा मांस आदि का सेवन करके समाज को दूषित ना करें।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि,2025 की होली पर रमजान के दूसरे सप्ताह के शुक्रवार का दिन-सौहार्द भाईचारा, प्रेम, सामाजिक समरस्ता का संकल्प लें होलिका दहन के साथ हम अपनी नकारात्मकता और बुराइयों का दहन कर भाईचारेको मजबूत रंगोंमें रंगे अधर्म पर धर्म की विजय हमें आपसी भाईचारे,सद्भाव,सौहार्द और मानवीय सामाजिक समरसता से ही मिलेगी।

किआ केरेन फेसलिफ्ट अप्रैल में हो सकती है लॉन्च

टेस्टिंग के दौरान दिखी गाड़ी से मिली एव सटीरियर की जानकारी

परिवहन विशेष न्यूज

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Kia की ओर से भारतीय बाजार में कई वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से जल्द ही बजट एमपीवी सेगमेंट में आने वाली Kia Carens के Facelift को लाया जा सकता है। इसमें किस तरह के बदलाव किए जा सकते हैं। कब तक इसके फेसलिफ्ट को कब तक भारत में लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में किआ की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक साउथ कोरियाई वाहन निर्माता की ओर से Budget MPV के तौर पर ऑफर की जाने वाली Kia Carens के Facelift वर्जन को भारतीय बाजार में लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। इसमें किस तरह के बदलाव किए जा सकते हैं। इसे कब तक लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक किआ की ओर से कैरेंस के फेसलिफ्ट वर्जन को लाने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से अभी इस बारे में कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी है, लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसे जल्द ही भारत में लॉन्च किया जा सकता है।

टेस्टिंग के दौरान देखी गई एमपीवी

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में ही इस गाड़ी के फेसलिफ्ट वर्जन को टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक गाड़ी के डिजाइन में कॉस्मैटिक बदलाव किए जाएंगे। इसके अलावा इसमें कई नए फीचर्स को भी ऑफर किया जा सकता है। फेसलिफ्ट वर्जन में सिंगल पेन सनरूफ की जगह पैनोरमिक सनरूफ को दिया जा सकता है। इसके साथ ही इसमें 360 डिग्री कैमरा, ADAS जैसे सेफ्टी फीचर को भी जोड़ा जा सकता है। गाड़ी में ज्यादा आराम के लिए सेकेंड रो सीट्स में भी वेंटिलेटिड का फीचर दिया जा सकता है। इसके साथ ही इसमें भी 30 इंच ट्रिनिटी डिस्प्ले को दिया जा सकता है, जिसमें 12.3 इंच की दो स्क्रीन के साथ ही पांच इंच की स्क्रीन में एसी से जुड़ी सेटिंग को दिया जाएगा। एमपीवी में कनेक्टिड टेल लाइट्स के साथ ही फ्रंट में नए डिजाइन वाली हेडलाइट दी जा सकती हैं।

इंजन में नहीं होगा बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से इसके इंजन में किसी भी तरह के बदलााव की उम्मीद काफी कम है। इसमें मौजूदा पेट्रोल और डीजल इंजन के विकल्प के साथ मैनुअल, ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन को ही दिया जाएगा। ऐसे में एमपीवी को सिर्फ कॉस्मैटिक बदलावों के साथ ही लाया जा सकता है।

कब होगी लॉन्च

Kia Carens Facelift को भारत में औपचारिक तौर पर अप्रैल 2025 तक पेश किया जा सकता है। हालांकि कंपनी की ओर से अभी इस बारे में कोई भी जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है।

कितनी होगी कीमत

फेसलिफ्ट वर्जन में कई नए फीचर्स को जोड़ा जाएगा। इसके साथ ही डिजाइन में मामूली बदलाव किए जाएंगे। जिसके बाद इसकी कीमत में भी मामूली बढ़ोतरी की जा सकती है।

किनसे होगा मुकाबला

किआ की ओर से कैरेंस को बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Ertiga और Renault Triber जैसी एमपीवी के साथ होता है।

टोयोटा हाइलक्स के ब्लैक एडिशन में क्या है खास, सामान्य वर्जन से कितनी है अलग

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी वाहन निर्माता Toyota की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से हाल में ही Hilux के Black Edition को लॉन्च किया गया है। इस एडिशन में किस तरह की खासियतों को दिया गया है। यह सामान्य वर्जन से कितना अलग है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में कई कंपनियों की ओर से अपनी कारों और एसयूवी को सामान्य वर्जन के साथ ही ब्लैक एडिशन के साथ भी पेश किया जाता है। टोयोटा की ओर से भी हाल में ही Toyota Hilux के Black Edition को लॉन्च किया गया है। नए एडिशन में किस तरह की खासियतों को दिया गया है। सामान्य वर्जन के मुकाबले नया एडिशन कितना अलग है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Toyota Hilux का Black Edition हुआ लॉन्च

टोयोटा की ओर से हाइलक्स के ब्लैक एडिशन को भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया है। जिसमें सामान्य वर्जन के मुकाबले कई बदलाव किए गए हैं। यह बदलाव इसके एक्सटीरियर से लेकर इंटीरियर तक में देखे जा सकते हैं।

ब्लैक एडिशन में क्या है खास

टोयोटा हाइलक्स के ब्लैक एडिशन में कंपनी की ओर से ग्लॉस ब्लैक फ्रंट ग्रिल, ब्लैक एलईडी हेडलाइट और टेल लाइट्स, ब्लैक एलईडी फॉग लैंप, ब्लैक अलॉय व्हील्स, ब्लैक डोर हैंडल को एक्सटीरियर में दिया गया है। वहीं इंटीरियर में कुछ बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

ब्लैक एडिशन टोयोटा हाइलक्स में कंपनी की ओर से ड्यूल जोन फुली ऑटो एसी, स्मार्ट एंट्री, ऑटो हेडलैंप, आठ इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, क्रूज कंट्रोल, 8वे पावर्ड ड्राइवर सीट, इलेक्ट्रोक्रोमिक आईआरवीएम, रिवर्स पार्किंग कैमरा, पुश बटन स्टार्ट/स्टॉप, इलेक्ट्रिक एडजस्ट ओआरवीएम जैसे फीचर्स को दिया है।

कितनी है सुरक्षित

हाइलक्स के ब्लैक एडिशन में कंपनी की ओर से 7 एयरबैग, वीएससी, ट्रैक्शन कंट्रोल, ईडीएल, एचएसी, डीएसी, एएलएसडी, फ्रंट पार्किंग सेंसर जैसे सेफ्टी फीचर्स को ऑफर किया है।

कितना दमदार इंजन

नए एडिशन में भी 2.8 लीटर की क्षमता के टर्बो डीजल इंजन को दिया गया है। जिसके साथ ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन को ऑफर किया गया है। इस इंजन से हाइलक्स को 204 पीएस की पावर और 500 न्यूटन मीटर तक का टॉर्क मिलता है। इसमें 4X4 क्षमता को भी दिया गया है। साथ ही पिक-अप ट्रक की वाटर वेडिंग क्षमता 700 एमएम तक है। सामान्य वर्जन के मुकाबले ब्लैक एडिशन में सिर्फ ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन को ही दिया गया है।

कितनी है कीमत

टोयोटा हाइलक्स के सामान्य वर्जन की एक्स शोरूम कीमत 30.40 लाख रुपये से 37.90 लाख रुपये के बीच है जबकि ब्लैक एडिशन को 37.90 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है।

किनसे है मुकाबला

टोयोटा की ओर से हाइलक्स को पिक-अप ट्रक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Izusu V-Cross के साथ होता है।

यामाहा ने लॉन्च की 150 सीसी की पहली हाइब्रिड मोटरसाइकिल, FZ-S Fi हाइब्रिड में क्या है खासियत

परिवहन विशेष न्यूज

यामाहा 2025 FZ-S Fi Hybrid जापानी दो पहिया निर्माता Yamaha की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। कंपनी की ओर से 11 March 2025 को 150 सीसी सेगमेंट में पहली हाइब्रिड मोटरसाइकिल को लॉन्च कर दिया है। इस बाइक में किस तरह की खासियत दी गई हैं। किस कीमत पर बाइक को लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापानी वाहन निर्माता यामाहा की ओर से कई सेगमेंट में स्कूटर और मोटरसाइकिल की बिक्री भारतीय बाजार में की जाती है। कंपनी की ओर से 11 March 2025 को 150 सीसी सेगमेंट में देश की पहली हाइब्रिड बाइक को लॉन्च किया है। इसमें किस तरह की खासियत दी गई हैं। किस कीमत पर मोटरसाइकिल को लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई Yamaha FZ-S FI Hybrid मोटरसाइकिल

यामाहा की ओर से भारतीय बाजार में देश की पहली 150 सीसी मोटरसाइकिल को हाइब्रिड तकनीक के साथ लॉन्च कर दिया है। कंपनी की ओर से Yamaha FZ-S FI Hybrid मोटरसाइकिल को लॉन्च किया गया है।

क्या है खासियत

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक इसके डिजाइन में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। लेकिन टर्न इंडीकेटर को बेहतर किया गया है। इसके अलावा इसमें एयर इनटेक एरिया में बदलाव किया गया है। साथ ही ज्यादा अग्रेसिव और डायनैमिक लुक के साथ बाइक को लॉन्च किया गया है। बाइक में हैंडलबार की पोजिशन को भी बदला गया है जिससे लंबी यात्रा के दौरान ज्याादा आराम मिले। फ्यूल टैंक को एयरप्लेन स्टाइल फ्यूल कैप की तरह बनाया गया है।

कितना दमदार इंजन

यामाहा की ओर से इसमें भी 149 सीसी की क्षमता का ब्लू कोर इंजन दिया गया है। जिसे स्मार्ट मोटर जेनरेटर और स्टॉप एंड स्टार्ट सिस्टम के साथ ऑफर किया गया है। इस तकनीक के कारण बाइक को जल्दी स्टार्ट किया जा सकता है। साथ ही बेहतर माइलेज भी मिलेगी।

कैसे हैं फीचर्स

नई मोटरसाइकिल में यामाहा की ओर से 4.2 इंच फुल कलर्ड इंस्ट्रमेंट क्लस्टर दिया गया है। जिसे स्मार्टफोन और Y Connect एप के जरिए कनेक्ट किया जा सकता है। इसके साथ ही इसमें टर्न बाय टर्न नेविगेशन, गूगल मैप, रियल टाइम डायरेक्शन, नेविगेशन इंडेक्स, इंटरसेक्शन डिटेल जैसे फीचर्स (Yamaha Hybrid Motorcycle Features) को दिया गया है।

अधिकारियों ने कही यह बात

यामाहा इंडिया के चेयरमैन ईटारू ओटानी ने कहा कि FZ ब्रांड ने भारत में यामाहा की यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो हमारे ग्राहकों की बदलती अपेक्षाओं और व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हर पीढ़ी के साथ विकसित हो रहा है। इस सेगमेंट में हाइब्रिड तकनीक पेश करके, हम प्रदर्शन को बढ़ा रहे हैं।

कितनी है कीमत

यामाहा की ओर से FZ-S FI Hybrid मोटरसाइकिल को 1.44 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। इसमें Racing Blue और Cyan Metallic Grey जैसे रंगों के विकल्प दिए गए हैं।

किनसे है मुकाबला

यामाहा की ओर से FZ-S FI Hybrid को 150 सीसी सेगमेंट में लॉन्च किया गया है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला TVS Apache, Hero Xtreme, Honda Unicorn, Bajaj Pulsar जैसी मोटरसाइकिल के साथ होता है।

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक समापन, ।।श्रेष्ठ शोध पत्र पढ़ने वाले हुए सम्मानित।।

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। संगम विश्वविद्यालय भीलवाड़ा में आयोजित दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक समापन दिनांक 11 मार्च 2025 को हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय सत्र का प्रारंभ अटल इनक्यूबेशन सेंटर वनस्थली विद्यापीठ निवाई के सीईओ प्रोफेसर अभिषेक पारीक के उद्बोधन के साथ हुआ। प्रोफेसर पारीक द्वारा ट्रांसलेशनल रिसर्च, एमएसएमई, स्टार्टअप्स तथा इन्नोवेशंस इन रिसर्च पर अपने विचार प्रकट किए गए तथा शोधार्थियों से सीधा संवाद किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में मुख्य अतिथि जिंदल सॉ लिमिटेड भीलवाड़ा के सीनियर जनरल मैनेजर श्री अंशुमन बंदोपाध्याय थे। यूनिवर्सिटी ऑफ़ शारजाह के प्रोफेसर रमेश बंसल समापन सत्र में विशिष्ट अतिथि थे।

श्री अंशुमन बंदोपाध्याय ने अपने उद्बोधन में बताया की पहल करने वाला ही विश्व पर शासन करता है। उन्होंने वर्तमान जीवन पर इंटरनेट के प्रभाव को लेकर अपने विचार प्रकट किए। श्री बंदोपाध्याय के अनुसार छात्रों के जीवन में अवसरों की कहीं कोई कमी नहीं है, आवश्यकता है उन अवसरों को पहचानने की।

संगम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना द्वारा अपने जीवन वृत्तांतों के जरिए शिक्षाविदों एवं शोधार्थियों के साथ अपने अनुभव साझा किए गए। प्रोफेसर सक्सेना ने आईटी और एआई का शिक्षा के सभी क्षेत्रों में भरपूर इस्तेमाल किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। कुल सचिव प्रोफेसर राजीव मेहता द्वारा इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी को ज्ञान, शिक्षा और बुद्धिमत्ता के महाकुंभ की संज्ञा दी गई।

प्रो वाइस चांसलर तथा संगोष्ठी समन्वयक प्रोफेसर मानस रंजन पाणिग्रही ने कहा कि हम कहां हैं ? और हमें कहां जाना है ? इन दोनों ही प्रश्नों पर विचार किए जाने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी के समापन सत्र में आयोजन सचिव प्रोफेसर राकेश भंडारी द्वारा सार रिपोर्ट का वाचन किया गया जिसमें उन्होंने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल 220 शोध पत्रों का वाचन आठ चरणों में किया गया।

संगोष्ठी सहायक पार्टनर यमुना मशीन मुंबई, प्रीमियर एवॉलविक्स कोयंबटूर, डिजी हब उदयपुर, केडी लैब इंफ्रा, संगम आई टीबीआई, ए यू बैंक, राजस्थान प्रिंटर्स के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंत में शोधार्थियों, अविनाश कुमार, रितु राठौड़, अजिता गुप्ता, सुमन लता, अभिलाषा भट्ट, जयश्री, भव्या, भाविका, शशांक शेखर, सुमनालंग को बेस्ट रिसर्च पेपर अवाड्र्स से सम्मानित किया गया। संगोष्ठी की आयोजन उप समन्वयक प्रो विनेश अग्रवाल, सह सचिव प्रोफेसर अर्चना अग्रवाल द्वारा शोधार्थियों, अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं का हृदय से आभार व्यक्त किया गया।

संविदा पर तैनात योग्य विशेष शिक्षकों को भी स्थायी जैसा वेतन दें

परिवहन विशेष न्यूज

1. 21 दिन में राज्य नियुक्ति की अधिसूचना जारी करेंगे,
2. 28 मार्च तक नियुक्ति के लिया विज्ञापन जारी करना होगा,
3. विशेष छात्रों की संख्या के अनुसार शिक्षकों की भर्ती होगी,
4. 1:10 के अनुपात में प्राथमिक विद्यालयों में नियुक्ति के आदेश

सुप्रीम कोर्ट ने वर्षों से विशेष जरूरत वाले बच्चों को संविदा या दैनिक आधार पर पढ़ा रहे विशेष शिक्षकों को अधिसूचित पद के अनुसार वेतन-भत्ता देने का आदेश दिया। साथ ही राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों को विशेष शिक्षकों के पद सृजित करने और नियुक्ति करने का आदेश दिया है। शीर्ष कोर्ट ने आदेश में विशेष जरूरत वाले बच्चों की संख्या के आधार पर विशेष शिक्षकों के पद सृजित करने का निर्देश दिया है। न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति के. विनोद चंद्रन की पीठ ने आदेश में कहा, सभी राज्य और केंद्रशासित प्रदेश तीन हफ्ते के भीतर विशेष जरूरत वाले बच्चों को समुचित शिक्षा देने के लिए स्वीकृत पदों की संख्या के साथ अधिसूचना जारी करेंगे। अदालत ने पदों को स्वीकृत और अधिसूचित किए जाने के बाद 28 मार्च, 2025 तक शिक्षकों की नियुक्ति के लिए विज्ञापन जारी करने का आदेश दिया है। इसके अलावा, शीर्ष अदालत ने प्राथमिक विद्यालय के लिए 1:10 और मध्य एवं माध्यमिक विद्यालय के लिए 1:15 शिक्षक-छात्र के अनुपात में विशेष शिक्षकों के पद सृजित करने और नियुक्ति प्रक्रिया शुरू करने का आदेश दिया। राज्यों को फटकार : शीर्ष अदालत ने राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को फटकार लगाई। पीठ ने कहा कि इस अदालत के 2021 को पारित फैसले और समय-समय पर दिए गए निर्देशों के बाद भी सरकारों ने समुचित कदम नहीं उठाया। जब राज्यों को विशेष जरूरत वाले बच्चों की संख्या के बारे में जानकारी है, तो उसे पहले ही इस पर काम कर लेना चाहिए था।

बिहार समेत कई राज्यों के शिक्षकों को राहत सुप्रीम कोर्ट के विशेष शिक्षकों के पद सृजित करने और नियुक्ति करने का आदेश देने से बिहार सहित कई राज्यों में वर्षों से विशेष बच्चों को पढ़ा रहे विशेष शिक्षकों को बड़ी राहत मिली है। शीर्ष अदालत ने आदेश में पहले से संविदा पर कार्यरत शिक्षकों को विशेष शिक्षक के लिए अधिसूचित पद के अनुसार वेतन व भत्ता सहित सभी लाभ देने का निर्देश दिया। हालांकि, यह लाभ तभी मिलेगा, जब संबंधित संविदा कर्मियों के पास विशेष शिक्षक पद के लिए समुचित और तय योग्यता होगी। पीठ ने कहा, कई राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में अनुबंध के आधार पर तदर्थ शिक्षक वर्तमान में शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और विशेष जरूरतों वाले बच्चों की कक्षाएं ले रहे हैं। हमें यह भी बताया गया कि कुछ राज्यों में ये शिक्षक पिछले लगभग 20 वर्षों से कार्यरत हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को तत्काल स्क्रीनिंग कमेटी का गठन करने का आदेश दिया है।

12 सप्ताह में कवायद पूरी हो सुप्रीम कोर्ट ने स्क्रीनिंग कमेटी को संविदा और दैनिक वेतन के आधार पर विशेष जरूरत वाले बच्चों को पढ़ा रहे शिक्षकों के योग्यता की जांच करने का आदेश दिया है

ताकि सृजित पद के अनुसार वेतन-भत्ता दिया जाए। हालांकि, शीर्ष अदालत ने यह साफ कर दिया कि इस आदेश का लाभ सिर्फ उन संविदा शिक्षकों को मिलेगा, जिनके पास आरसीआई द्वारा निर्धारित योग्यता वाला प्रमाणपत्र होगा। सुप्रीम कोर्ट ने कमेटी के इन शिक्षकों के अनुभव को ध्यान में रखने का निर्देश देने के साथ ही, उचित मामलों में आयु सीमा में छूट पर विचार करने के लिए भी अधिकृत किया है। कमेटी को इसके लिए 12 हफ्ते का समय दिया है। स्वीकृत पदों पर चयन प्रक्रिया तुरंत शुरू हो। प्रमुख राज्यों में कहां कितने हैं विशेष बच्चे

बिहार- 85,344
उत्तर प्रदेश- 3,01,718
दिल्ली- 32,398
झारखंड- 45,598
उत्तराखंड- 4,575
पश्चिम बंगाल- 1,35,796
राजस्थान- 71,929
हरियाणा- 21,111
मध्य प्रदेश- 1,20,764

आरसीआई को मिले तरजीह सुप्रीम कोर्ट ने अक्तूबर, 2021 के फैसले का हवाला दिया। विशेष शिक्षकों की नियुक्ति भारतीय पुनर्वास परिषद (आरसीआई) द्वारा तय योग्यता प्रमाण पत्र की आवश्यकता को भी ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। वहीं जिनके पास आरसीआई प्रमाण पत्र नहीं है, उन्हें अयोग्य मानें।

विजय गर्ग

दरअसल, अस्पताल की फार्मेसी या खास मेडिकल स्टोरों से दवाइयां खरीदना तिमारदारों की मजबूरी बन जाती है। उन्हें खास ब्रांड की दवा व उपकरण खरीदने के निर्देश होते हैं। दरअसल, खुले बाजार में उनकी उपलब्धता और गुणवत्ता को लेकर आशंका होती है। असल में, यह नीति-नियंताओं की जवाबदेही है कि वे मरीजों और उनके परिवारों को शोषण से बचाने के लिये दिशा-निर्देश तैयार करें। हालांकि, यह इतना भी आसान नहीं है क्योंकि विभिन्न हितधारकों के दबाव अकसर सामने आते हैं...

जेबों की सर्जरी

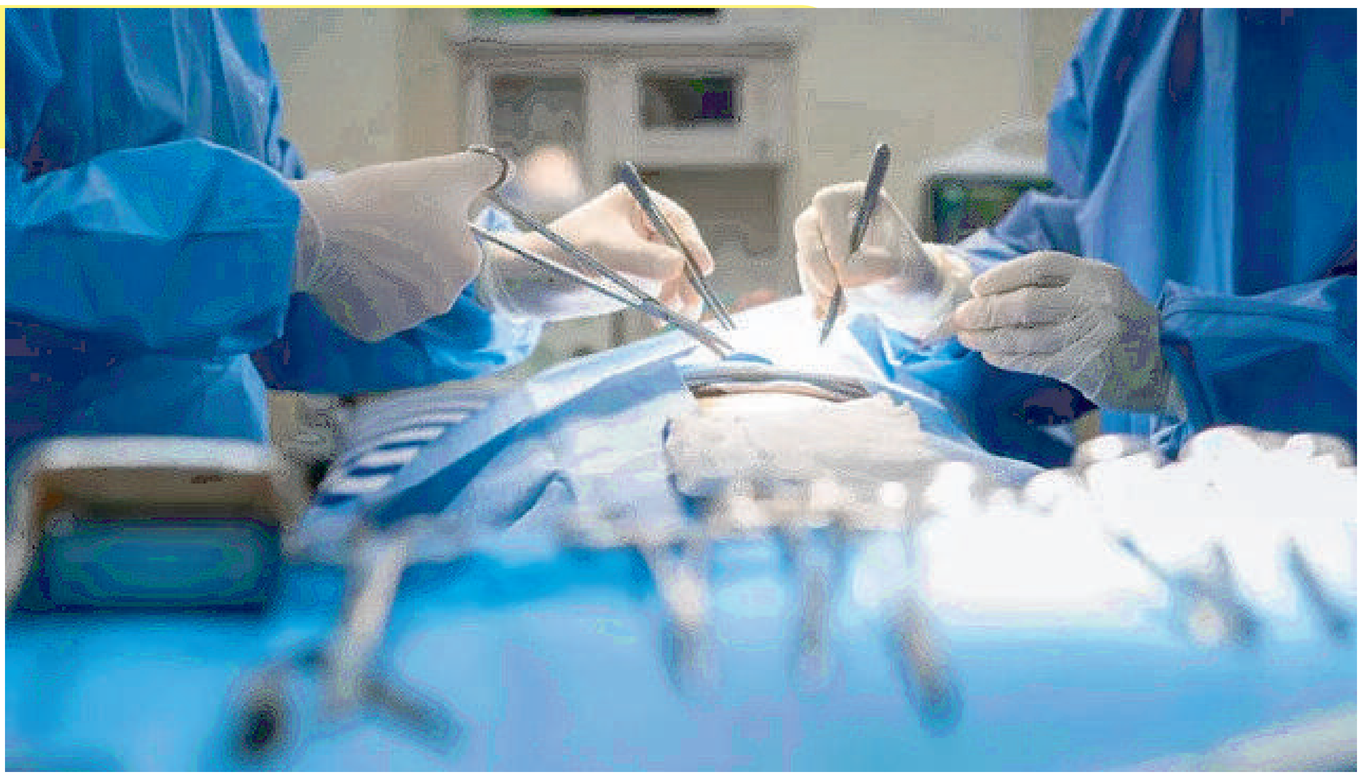

यह खबर परेशान करती है कि देश के करोड़ों मरीज पहुंच से बाहर के महंगे इलाज के कारण गरीबी की दलदल में फंस जाते हैं। वे कथित रुप से दूसरे भगवान कहे जाने वाले शख्स के आगे बेबस नजर आते हैं। खासकर बड़े आप्रेशनों व उपकरणों से लेकर महंगी दवाओं को लेकर। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने मरीजों की दुखती रग को समझते हुए केंद्र व राज्य सरकारों से निजी अस्पतालों में मरीजों का शोषण रोकने के लिये नीतिगत फैसला लेने को कहा है। एक जनहित याचिका पर सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने कहा कि देशवासियों को चिकित्सा का बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराना राज्यों का कर्तव्य है। निर्विवाद रूप से राज्य सरकारें ऐसा करने में विफल रही हैं। इसके बावजूद कि उन्होंने बड़े अस्पतालों को जमीन आदि तमाम सुविधाएं रियायती दरों पर दी हैं। ऐसे में वे गरीब मरीजों को राहतकारी इलाज देने के लिये बड़े अस्पतालों को बाध्य कर सकती थीं। वैसे चुनावों के दौरान तमाम तरह के सब्जबाग दिखाने वाले राजनीतिक दलों के एजेंडे में चिकित्सा सुविधा सुधार कभी प्राथमिकता नहीं रही। यदि सार्वजनिक चिकित्सा का बेहतर ढांचा उपलब्ध होता तो लोग निजी अस्पतालों में जाने को मजबूर न होते। यदि निगरानी तंत्र मजबूत होता और प्रभावी कानून होते तो मरीजों को दोहन का शिकार न होना पड़ता। यदि मरीजों से निजी अस्पतालों में मनमानी रकम वसूली जाती है तो यह राज्य सरकारों की छवि पर आंच है कि वे मरीजों को किफायती उपचार उपलब्ध कराने में विफल रही हैं। यही वजह है कि शीर्ष अदालत को कहना पड़ा कि मरीजों को उचित मूल्य वाली दवाइयां न मिल पाना राज्य सरकारों की नाकामी को ही दर्शाता है। इतना ही नहीं राज्य सरकारें निजी अस्पतालों को न केवल सुविधाएं प्रदान करती हैं बल्कि उन्हें प्रोत्साहन भी देती हैं। सरकारों का यह दावा अतार्किक है कि मरीजों के तिमारदारों के लिये निजी अस्पताल के मेडिकल स्टोरों से दवा खरीदने की बाध्यता नहीं है।

दरअसल, अस्पताल की फार्मेसी या खास मेडिकल स्टोरों से दवाइयां खरीदना तिमारदारों की मजबूरी बन जाती है। उन्हें खास ब्रांड की दवा व उपकरण खरीदने के निर्देश होते हैं। दरअसल, खुले बाजार में उनकी उपलब्धता और गुणवत्ता को लेकर आशंका होती है। असल में, यह नीति-नियंताओं की जवाबदेही है कि वे मरीजों और उनके परिवारों को शोषण से बचाने के लिये दिशा-निर्देश तैयार करें। हालांकि, यह इतना भी आसान नहीं है क्योंकि विभिन्न हितधारकों के दबाव अकसर सामने आते हैं। जैसा कि वर्ष 2023 में राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग को उस समय कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा था जब उसने डॉक्टरों से कहा था कि वे ब्रांडेड दवाएं न लिखें। उसके स्थान पर जेनेरिक दवाएं लिखें, ऐसा न करने पर उनके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। चिकित्सा बिरादरी ने तब दबाव बनाते हुए कहा था कि दवाओं की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जाना चाहिए। जिसके बाद यह आदेश जल्दी ही वापस लेना पड़ा था। इसके अलावा ब्रांडेड दवाओं के निर्माताओं ने भी दबाव बनाया था, जो कि जन-कल्याण के बजाय बड़े पैमाने पर मुनाफे को प्राथमिकता देते रहते हैं। वैसे निजी अस्पतालों द्वारा दवाओं के जरिये पैसा कमाने की वजह यह भी है कि सरकारी जन-औषधि केंद्रों का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं रहा है। ये केंद्र, जिनकी देश में संख्या पंद्रह हजार के करीब है, देश के सभी जिलों को कवर करते हैं। ये केंद्र नागरिकों को सस्ती कीमत पर गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराने के लिये बनाये गए थे। लेकिन, ये केंद्र दवाओं की कमी, गुणवत्ता के नियंत्रण के अभाव और ब्रांडेड दवाओं की अनधिकृत बिक्री की समस्याओं से ग्रसित रहे हैं। निश्चित रूप से औषधि विनियामक प्रणाली में सुधार करने से तमाम असहाय रोगियों की परेशानियों को कम करने में मदद मिल सकती है। एक रिपोर्ट बताती है कि सरकारी अस्पतालों की तुलना में निजी अस्पतालों का खर्च सात गुना होता है। खासकर कोरोना काल के बाद चिकित्सा खर्च में खासी बढ़ोतरी हुई है। निस्संदेह, राज्य सरकारों को इस मुद्दे पर व्यापक दृष्टिकोण से विचार कर उचित गाइडलाइंस बनानी चाहिए। निजी अस्पतालों व मरीजों के हितों के मद्देनजर राज्य सरकारों के संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।

कार्यबल में बढ़ती महिला शक्ति

विजय गर्ग

हमारे सामाजिक पारिवारिक परिवेश में दिखता है कि कार्यबल में आधी आबादी की भागीदारी बढ़ ही रही है। इस बदलाव को पुख्ता करने वाले आंकड़े सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा रोजगार से जुड़ी गतिविधियों में महिलाओं की हिस्सेदारी से जुड़े सर्वेक्षण में सामने आए हैं। सर्वे के अनुसार वर्ष 2019 में आजीविका संबंधित गतिविधियों में स्त्रियों की भागीदारी 21.8 प्रतिशत थी, जो वर्ष 2024 में 25 प्रतिशत हो गई है।

भारतीय महिलाएं सदा से ही श्रमशील भूमिका में रही हैं। खेती-किसानी से लेकर घरेलू कामकाज के किसी न किसी मोर्चे पर डटी रही हैं। स्त्रियों की यह भागीदारी व्यावसायिक गतिविधियों के बजाय अवैतनिक कार्यों में अधिक रही है । सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अनुसार, 2019-2014 के दौरान महिलाओं द्वारा घरेलू काम में निवेश किया गया समय घटा है। मंत्रालय का 'टाइम यूज सर्वे' नामक अध्ययन बताता है कि अवैतनिक घरेलू कार्यों में महिलाओं की भागीदारी पांच साल पहले लगभग 315 मिनट देने की थी। बदलते परिवेश में आधी आबादी द्वारा घरेलू कामकाज को दिया जा रहा वक्त कम हुआ है। वर्ष 2024 में यह अवधि घटकर 305 मिनट रह गई है। आंकड़ों के दिखते सकारात्मक रुझान अहम बदलाव को सामने रखते हैं। आमदनी वाले क्रिया-कलापों में स्त्रियों की भागीदारी बढ़ना आर्थिक आत्मनिर्भरता से जुड़ा अहम पक्ष है। देश के विकास में महिलाओं की मजबूत होती स्थिति की बानगी है। आय देने वाली गतिविधियों में महिलाओं के रुचि लेने संबंधित बदलाव व्यक्तिगत चुनाव और पारिवारिक सहयोग के वैचारिक मोर्चे पर भी रेखांकित करने योग्य पक्ष है। हमारे परंपरागत ढांचे में पुरुषों की तुलना में सशुल्क क्रिया-कलापों में महिलाओं की भागीदारी कम रही है। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के इस सर्वे में भी यह अंतर सामने आया है। आंकड़े बताते हैं कि 41 प्रतिशत महिलाओं ने घर के सदस्यों की देखभाल को समय दिया, वहीं पुरुषों के लिए यह हिस्सा 21.4 फीसद था । स्त्रियां घर के सदस्यों की देखभाल संबंधित कार्यों में हर दिन 140 मिनट बिताती हैं तो पुरुष हर दिन 74 मिनट का वक्त इन गतिविधियों को दे रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट भी बताती है कि वैश्विक स्तर पर महिलाएं अवैतनिक घरेलू कार्यों के लिए कुल घंटों का 76 फीसद समय देती हैं। भारत सहित अन्य एशियाई देशों में यह आंकड़ा 80 फीसद से भी ज्यादा है। वहीं आक्सफैम की 'टाइम टू केयर' की रिपोर्ट कहती है कि वैश्विक स्तर पर महिलाएं सालभर में करीब 10 हजार अरब डालर के अवैतनिक घरेल कार्य करती हैं। ऐसे में वैतनिक कार्यों में महिलाओं की हिस्सेदारी का बढ़ना रोजगार के मोर्चे पर सकारात्मक बदलाव है। यह रुझान बेहतर भविष्य की उम्मीद जगाता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

बैक्टीरिया से एंटीवायोटिक की तरह लड़ती है प्रोटीन रीसाइक्लिंग प्रणाली

विजय गर्ग

एक नए शोध में पाया गया है कि मानव शरीर की प्रोटीन रीसाइक्लिंग प्रणाली एंटीबायोटिक दवाओं की तरह बैक्टीरिया से लड़ती है। शोधकर्ताओं ने प्रोटीन के विघटन और रीसाइक्लिंग के लिए जानी जाने वाली एक कोशिकीय संरचना प्रोटीसोम की एक आश्चर्यजनक रोगाणु प्रतिरक्षा भूमिका की खोज की है।

नेचर जर्नल जर्नल में प्रकाशित इजरायली शोधकर्ताओं का निष्कर्ष एंटीबायोटिक प्रतिरोध संक्रमण के विरुद्ध रणनीति के लिए प्रेरक हो सकता है। वीजमैन इंस्टीट्यूट आफ साइंस (डब्ल्यूआइएस) के नेतृत्व में शोध दल ने पाया कि पुराने प्रोटीन को तोड़ने के दौरान प्रोटीसोम नियमित रूप से लगातार रोगाणुरोधी पेप्टीसाइड जारी करता है। इन पेप्टीसाइड को मानव शरीर की प्रथम रक्षापंक्ति के रूप में महत्पूर्ण घटक माना जाता है, जो बैक्टीरिया पर हमला करते हैं और उन्हें मारते हैं। सक्रिय प्रोटीसोम बैक्टीरिया के विकास को प्रभावी रूप से नियंत्रित करते हैं। शोध दल ने 92 प्रतिशत मानव प्रोटीन में छिपे 2.70.000 से अधिक संभावित जीवाणुरोधी पेप्टाइड्स की पहचान की। डब्ल्यूआइएस के प्रोफेसर विफात मेरबल्स ने कहा कि ये निष्कर्ष उच्च जोखिम वाले कैंसर, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली वाले मरीजों में अनुकूलित उपचार विकसित करने के लिए नया आयाम खोल सकते हैं।

शोध दल ने कहा कि क्लीनिकल उपयोग के दौरान सबसे बड़ा रोमांच एक मौलिक कोशिकीय तंत्र की खोज थी, जो प्रोटीसोम द्वारा नियमित होता है और जो पहले ज्ञात किसी भी चीज से अलग है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी: शून्य से शिखर तक

विजय गर्ग

बेटा अपने पिता को अग्नि दो । धर्मेंद्र के मामा जब यह कह रहे थे वह चिता के सामने अग्नि की मशाल लेकर चुपचाप खड़ा था और मन ही मन बड़बड़ रहा था । मामा जो उसके पास खड़े थे कुछ सुनाई दे रहा था ।

रविंद्र अपने पिता से कह रहा था - परिस्थिति कितनी विकेट हो भविष्य कितना भी कठिन हो मेरे जीवन में कितनी भी रुकावटें आए मेरा आपसे, मैं आपको वचन देता हूं कि आपने सब कि मैं इंजीनियर बंद कर पूर्ण करूंगा। अपने पिता को अग्नि के स्वाधीन कर दिया और वह असहज हो गया था । उसके मामा ने ही उसको सहारा दिया यदि ना देते तो शायद वह पिता की चिता पर गिर पड़ता. देवेंद्र, उसके पिता बिजली विभाग में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी था स्वभाव से शालीन और अपनी कार्यशैली से अपने अधिकारियों को खुश रखता था उसका कार्य था ट्रांसफार्मर में आई खराबी - बिजली के खंभे पर आने वाली खराबी को दूर करना उसके कार्य क्षेत्र में था । एक दिन वह खंभे पर चढ़ा था और अचानक वह गिर पड़ा उसी घटना के चार घंटे के बाद अधिक खून बहने के कारण उसकी मौत हो गई उसके सभी साथी अधिकारी इस घटना से काफी दुखी थे कारण भी था 21 वर्ष की नौकरी में उसने कभी किसी से झगड़ा नहीं किया था किसी भी कम से इनकार नहीं किया था । उसकी अंतिम यात्रा में इतनी भीड़ थी जो शहर का रिकॉर्ड था । इसका कारण था देवेंद्र का स्वभाव ।

पिता की मृत्यु के आठ दिन बाद ही रविंद्र का रिजल्ट आया था 11वीं की परीक्षा अच्छे मार्क्स से प्रथम श्रेणी में उतीर्ण की थी । बिजली विभाग में जिसमें उसके पिता कार्यरत थे और विभाग का कार्य करते हुए उनकी मृत्यु हुई थी अनुकंपा नियुक्ति पानी का वह अधिकारी भी था आश्वासन भी प्राप्त हो रहे थे । मध्यमवर्गीय परिवार मेंजैसे होता हैघर की माली हालात बिगड़ने लगे थे । हालात की नाजुक्ता को समझते हुए - फिदा के क्रिया कर्म से निवृत होते ही वह काम पर लग गया । सुबह पेपर वर्तमान पत्र बांटना उसके बाद सब्जी का ठेला लगाना ।वास्तविकता कुमारसमझ रहा था और पिता की सीखकोई भी काम छोटा नहीं होता। घर का खर्चा और दो मां- बाप स्कूल खुलेंगे तो अपनी और छोटे भाई की फीस एक कारण था स्कूल भी खुल गए और 3 माह बाद ही उसे विभाग में अनुकंपा नियुक्ति भी मिल गई थी

स्कूल पढ़ाई और नौकरी । उसने अपनी समस्या, बाबा का स्वप्न श्रीवास्तव सर जो बाबा के अधिकारी थे, उनके साथ 8 वर्ष बाबा कम कर रहे थे को अपनी समस्या बतलाई । श्रीवास्तव जी ने अपने अधिकारियों से बात करके अपने अधीन ले लिया था । एक चतुर्थ श्रेणी उनको नियमानुसार प्राप्त था । रविंद्र कोआश्चर्य भी कर दियाकि तुम्हारे संकल्प और तुम्हारे बाबा के स्वप्न को पूरा करने में पूर्ण सहयोग दूंगा और अब तक दिया । रविंद्र भी उनके प्रत्येक काम को पूर्ण तन्मयता से करता था । उसका परिश्रम मां का आशीर्वाद और उसके देवता तुल्य श्रीवास्तव के सहयोग का परिणाम 12वीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अब उसे विभाग में पदोन्नति उसके अपने व्यवहार श्रीवास्तव जी के आशीर्वाद से मिल गई थी। पी. इ.टी. की परीक्षामें सम्मिलित हुआ उत्तीर्ण्य भी हुआ किंतु इंजीनियरिंग कॉलेज दूसरे शहर दूर था। प्रवेश लेने का मतलब नौकरी छोड़नी पड़ती जो व्यावहारिक नहीं था। अपने साथियों और श्रीवास्तव जी के सलाह अनुसार उसने टेक्निकल स्कूल में इलेक्ट्रकल डिप्लोमा हेतु प्रवेश लिया और 3 साल में डिप्लोमा प्राप्त कर लिया और अब उसे विभाग द्वारा जे ई के पद पर प्रमोशन भी हो गया । टेक्निकल स्कूल में थातब उसकी और उसकी क्लासमेट यशोदा में प्रेम हो गया - उसने स्पष्ट एवं शब्दों में उससे कह दिया जब तक छोटे भाई कामेडिकल में प्रवेश नहीं होता विवाह करने में असमर्थ है । ईश्वर भी सबकी सुनता है 1 वर्ष में हीछोटे भाई सुरेंद्र का मेडिकल में प्रवेश हो गया । अपने वचन के अनुसार यशोदा से विवाह हो गया । नौकरी के साथ- साथरविंद्र ने प्राइवेट कोलकाता के विश्वविद्यालय से बी.ई. की डिग्री अपने विभाग की अनुमति से प्राप्त कर ली । पदोन्नति का सिलसिला नियम अनुसारचला रहा । रविंद्र डिविजनल इंजीनियरहो गया था। श्रीवास्तवसर के रिक्वायरमेंट के बाद मैं उनके की मेंउनकी सीट पर बैठता था । अपने पिता को दिए हुए वचन को रविंद्र ने पूर्ण किया - उनकी आत्मा संतुष्ट होगी इसका उसे पूर्ण विश्वास था- मां जिनका आशीर्वाद उसके सिर पर हैऔरउसके गॉडफादरश्रीवास्तव जीसंतुष्ट और प्रसन्नथे - छोटा भाई भी डॉक्टर हो गया था और वह भी दो बच्चों के पिताका स्थान प्राप्त कर लिया था ।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

महिला पुरस्कारों की गरिमा और निष्पक्षता पर उठते प्रश्न

हमारे तेज़ी से बदलते सामाजिक और राजनीतिक माहौल में, महिला पुरस्कारों का महत्त्व और आवश्यकता जांच के दायरे में आ रही है। हाल ही हरियाणा में महिला दिवस पर विवादित महिला का मुख्यमंत्री से सम्मान मामले ने गहरे प्रश्न सबके सामने रख दिए है। आज के सांस्कृतिक परिवेश में, जहाँ प्रतिनिधित्व को अक्सर प्राथमिकता दी जाती है, कुछ पुरस्कारों ने सच्ची उपलब्धियों से ध्यान हटाकर केवल दिखावे पर ध्यान केंद्रित किया है। महिला पुरस्कारों को पुराने प्रतीक या दिखावटीपन के उपकरण नहीं बनने चाहिए। उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की विशिष्ट चुनौतियों और सफलताओं पर प्रकाश डालना जारी रखना चाहिए। महिलाओं के पुरस्कारों के लिए, संस्थानों को इन विशिष्ट सम्मानों की प्रतिष्ठा बढ़ाने का लक्ष्य रखना चाहिए। महिलाओं की उपलब्धियाँ समर्पित स्वीकृति की हकदार हैं–एक बाद की सोच के रूप में नहीं, बल्कि उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए एक उचित श्रद्धांजलि के रूप में।

प्रियंका सौरभ

हाल ही हरियाणा में महिला दिवस पर विवादित महिला का मुख्यमंत्री से सम्मान मामले ने गहरे प्रश्न सबके सामने रख दिए है। कई वर्षों से, महिला पुरस्कार मान्यता के चमकदार प्रतीक के रूप में खड़े हैं, जो उन क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों को उजागर करते हैं जहाँ उन्हें अक्सर दरकिनार कर दिया जाता है। ये सम्मान सिर्फ़ समावेशन के लिए एक प्रेरणा से कहीं ज़्यादा है; इनका उद्देश्य ऐसे समाज में उत्कृष्ट उपलब्धियों को सम्मानित करना है जो अक्सर महिलाओं के योगदान को अनदेखा करता था। हालाँकि, राजनीतिक प्रभावों और बदलते सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से चुनौती के कारण इन पुरस्कारों की अखंडता अब जोखिम में है। महिला पुरस्कारों का भविष्य समाज की निष्पक्षता, मान्यता और समावेशिता के बीच संतुलन खोजने की क्षमता पर निर्भर करता है। ऐसे में ये महत्त्वपूर्ण है कि हम आगे चलकर महिला उपलब्धियों का सम्मान कैसे करते हैं।

महिला पुरस्कारों ने ऐतिहासिक रूप से विभिन्न क्षेत्रों में महिला उपलब्धियों को स्वीकार करने और सम्मानित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे साहित्य, विज्ञान, खेल या फ़िल्म हो, इन पुरस्कारों ने उन क्षेत्रों में आवश्यक मान्यता प्रदान की है जहाँ महिलाओं को अक्सर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि, हमारे तेज़ी से बदलते सामाजिक और राजनीतिक माहौल में, इन पुरस्कारों का महत्त्व और आवश्यकता जांच के दायरे में आ रही है। अतीत में, महिला पुरस्कार उन क्षेत्रों में उत्कृष्टता की कड़ी मेहनत से स्वीकारोक्ति का प्रतिनिधित्व करते थे, जहाँ अक्सर महिला प्रतिभा को अनदेखा किया जाता था। वे सिर्फ़ समावेश के प्रतीक नहीं थे, बल्कि लचीलेपन, दृढ़ संकल्प और अग्रणी सफलता के प्रतीक थे। हालाँकि, आज, इन पुरस्कारों की अखंडता खोने का जोखिम है-महिलाओं की उपलब्धियों में गिरावट के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि उनकी मान्यता का मूल अर्थ धुंधला, राजनीतिकरण या पूरी तरह से खारिज हो रहा है।

ऐसे समय में जब समावेशिता को अपनाने का दावा किया जाता है, महिला पुरस्कारों का अनूठा उद्देश्य उल्टा जोखिम में है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि समानता के उद्देश्य वाले समाज में लिंग-विशिष्ट पुरस्कार अब मौजूद नहीं होने चाहिए। लेकिन क्या सच्ची समानता उन मंचों को ख़त्म करने से आती है जो कभी महिलाओं की आवाज़ को बुलंद करते थे? समान अवसर बनाने के बजाय, हम एक चिंताजनक प्रवृत्ति देख रहे हैं: महिलाओं के योगदान को सम्मानित करने के लिए डिज़ाइन किए गए पुरस्कारों का मिश्रण, पुनर्उद्देश्य या पूर्ण रूप से हटाना। आज के सांस्कृतिक परिवेश में, जहाँ प्रतिनिधित्व को अक्सर प्राथमिकता दी जाती है, कुछ पुरस्कारों ने सच्ची उपलब्धियों से ध्यान हटाकर केवल दिखावे पर ध्यान केंद्रित किया है। वास्तविक योग्यता का जश्न मनाने के बजाय, चयन समितियाँ राजनीतिक शुद्धता के साथ संरेखित विकल्प चुनने के लिए बाध्य महसूस कर रही हैं, जो पुरस्कारों की अखंडता से समझौता कर सकती हैं।

यदि किसी महिला को उसकी असाधारण क्षमताओं के लिए नहीं बल्कि इसलिए सम्मानित किया जाता है क्योंकि वह किसी विशिष्ट कथा में फिट बैठती है, तो क्या वह मान्यता वास्तव में समान महत्त्व रखती है? महिला पुरस्कारों को पुराने प्रतीक या दिखावटीपन के उपकरण नहीं बनने चाहिए। उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की विशिष्ट चुनौतियों और सफलताओं पर प्रकाश डालना जारी रखना चाहिए। इसका उत्तर इन पुरस्कारों के महत्त्व को बढ़ाने में है-यह सुनिश्चित करना कि वे केवल एक प्रतीकात्मक इशारे के बजाय सच्ची उत्कृष्टता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि हम वास्तव में महिलाओं का जश्न मनाना चाहते हैं, तो उनके पुरस्कार केवल औपचारिकता नहीं होने चाहिए। उन्हें प्रतिभा, लचीलेपन और महत्त्वपूर्ण योगदान की सही स्वीकृति के रूप में काम करना चाहिए। इसके अलावा, पुरस्कारों के बढ़ते राजनीतिकरण ने योग्यता-आधारित मान्यता की स्पष्टता को धुंधला कर दिया है।

कुछ पुरस्कार वास्तविक उत्कृष्टता पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय प्रतिनिधित्व, विविधता कोटा और प्रदर्शनकारी सक्रियता के बारे में चर्चाओं में फंस गए हैं। जब विजेताओं का चयन मुख्य रूप से उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के बजाय अन्य कारकों के आधार पर किया जाता है, तो इससे पुरस्कारों की विश्वसनीयता कम हो जाती है। महिलाओं को ऐसे सम्मान की आवश्यकता है जो उनके कौशल और प्रभाव को दर्शाता हो, न कि केवल सांकेतिक इशारे। इन पुरस्कारों को प्रासंगिक और सम्मानित बनाए रखने के लिए, यह आवश्यक है कि वे सख्त चयन मानदंडों का पालन करें जो केवल प्रतीकात्मक कार्यों के बजाय सच्ची उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संगठनों को इस बारे में खुला होना चाहिए कि वे अपने सम्मानित व्यक्तियों का चयन कैसे करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि मान्यता बाहरी प्रभावों के बजाय योग्यता पर आधारित हो। इसके अतिरिक्त, महिलाओं के पुरस्कारों के लिए, संस्थानों को इन विशिष्ट सम्मानों की प्रतिष्ठा बढ़ाने का लक्ष्य रखना चाहिए।

महिलाओं की उपलब्धियाँ समर्पित स्वीकृति की हकदार हैं-एक बाद की सोच के रूप में नहीं, बल्कि उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए एक उचित श्रद्धांजलि के रूप में। ऐसे समय में जब हमें प्रगति का जश्न मनाना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए, महिला पुरस्कारों के लिए घटता सम्मान परेशान करने वाला है। यदि हम वास्तव में विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रभाव की सराहना करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उनकी मान्यता सार्थक, विश्वसनीय हो तथा समाज में उनके योगदान की सही मायनों में प्रतिनिधित्व करती हो।

होली सिर्फ त्योहार नहीं, यह जिंदगी का उत्सव है

होली कोई साधारण त्योहार नहीं—यह रंगों का एक जीवंत उत्सव है, प्रेम की उफनती लहर है, और जीवन को उल्लास व उमंग से आप्लावित कर देने वाला एक जादुई उन्माद है। फाल्गुन की पूर्णिमा पर जब होलिका दहन की आग धधकती है, लपटों में बुराई जलकर राख हो जाती है और सत्य का सूरज उगता है। अगली सुबह, जब गलियाँ गुलाल से लाल हो उठती हैं, चेहरे रंगों से खिल पड़ते हैं, और हर दिल अपनी उदासी को ठेंगा दिखाकर मस्ती में डूब जाता है। यह पर्व सिर्फ रंगों की बौछार नहीं—यह दिलों को जोड़ने वाली वो डोर है, जो समाज को एकता के रंग में रंग देती है और हर आत्मा को उल्लास की उड़ान देती है।

होली की कहानी उस आग से शुरू होती है, जो हिरण्यकश्यप के अहंकार को भस्म कर प्रह्लाद की भक्ति को अमर कर गई। हिरण्यकश्यप, एक क्रूर राजा, जिसने खुद को भगवान से बड़ा समझा, अपने बेटे प्रह्लाद की विष्णु-भक्ति से चिढ़ता था। उसने अपनी बहन होलिका को, जिसे आग से न जलने का वरदान था, प्रह्लाद को गोद में लेकर चिता पर बैठने का हुक्म दिया। मगर भक्ति का चमत्कार देखिए—होलिका जलकर राख हो गई, और प्रह्लाद पर एक खरोंच तक न आई। यह कहानी चीख-चीखकर बताती है कि सच्चाई और प्रेम के आगे हर ताकत घुटने टेकती है। होलिका दहन की हर लपट हमें पुकारती है—अंदर की बुराइयों को जलाओ, क्रोध को राख करो, ईर्ष्या को भस्म करो, और अपने जीवन में प्रेम का दीया जलाओ। यह एक प्रतीक है, एक नई शुरुआत का, जहाँ हम अपने भीतर के राक्षसों को विदा करते हैं।

फिर आता है कृष्ण का रंगों भरा खेल, एक ऐसी

मस्ती जो मन को मोह लेती है। साँवला ठाकुर, अपने रंग से चिंतित, माँ यशोदा से पूछता है, "राधा इतनी गोरी क्यों है, माँ?" माँ ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "जा, उसके मुख पर रंग लगा दे!" और बस, यहीं से प्रेम की यह शरारत होली बनकर फूटी। ब्रज की धरती पर यह कथा आज भी साँस लेती है। बरसाने की लठमार होली में जहाँ औरतें लाठियों की बौछार करती हैं, वहीं पुरुष रंगों से पलटवार करते हैं, और हवा में प्रेम की चुलबुली फुहारें तैरती हैं। यह रंग ऐसा है जो दिलों को जोड़ता है, फासलों को मिटाता है, और जीवन को एक अनोखी चमक से भर देता है।

होली सिर्फ पौराणिक कथाओं तक नहीं सिमटी—यह जिंदगी का रंगमंच है। यहाँ पुरानी दुश्मनियाँ गुलाल में दफन हो जाती हैं, रूठे गले मिलते हैं, और टूटे रिश्ते फिर से रंग उठते हैं। गलियों में बच्चे, बूढ़े, जवान—सब एक-दूसरे पर रंग उड़ाते हैं, और हर चेहरा हँसी से खिल उठता है। रंग सिर्फ चमड़ी पर नहीं चढ़ते—ये मन को भी भिगोते हैं। हर रंग अपने साथ एक वादा लाता है—लाल जोश और जुनून लाता है, हरा सुकून बरसाता है, पीला उमंग का आलम फैलाता है, नीला विश्वास की गहराई देता है। यह रंगों का ऐसा उन्माद है जो उदासी को भस्म कर देता है, तनाव को उड़ा ले जाता है, और हर साँस को खुशी की मिठास से भर देता है। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि रंग हमारे दिमाग को तरोताजा करते हैं—तो होली क्या है? यह एक थेरेपी है, जो हमें जिंदगी को नए सिरे से जीना सिखाती है।

मगर इस रंगीले पर्व को अब नई राह चाहिए। आज के दौर में रासायनिक रंग चमकते तो हैं, पर त्वचा को जख्मी करते हैं, आँखों को चुभते हैं। क्यों न प्राकृतिक रंग अपनाएँ? हल्दी की पीली चमक, टेसू की लाल आभा, चंदन की ठंडक—ये न सिर्फ सुरक्षित हैं, बल्कि प्रकृति के साथ हमारा रिश्ता भी मजबूत करते हैं। होलिका दहन में जंगल मत जलाओ—गोबर के कंडों से बुराई को विदा करो, ताकि धरती साँस ले सके। और एक बात—होली के नाम पर जबरदस्ती, नशे का धुआँ, या बदतमीजी? यह सब इस पर्व की आत्मा को ठेस पहुँचाता है। होली प्रेम का उड़ता गुलाल है, सम्मान की बौछार है, न कि किसी को दुख देने का बहाना। हर चेहरा इस दिन मुस्कुराए, हर दिल रंगों से भरे—यही इसकी सच्ची पहचान है।

होली महज रंगों का त्योहार नहीं—यह प्रेम की विजय का उद्घोष है, सौहार्द्र का मधुर गीत है, और जिंदगी का एक अनमोल जश्न है। यह पर्व हमें पुकारता है कि पर्यावरण को सहेजें, दिलों को जोड़ें, और हर चेहरे पर मुस्कान का रंग बिखेरें। होली चीख-चीखकर कहती है—जिंदगी एक अनमोल खेल है, इसे प्रेम से खेलो, सम्मान से सजाओ। अपने आसपास के लोगों को गले लगाओ, उनकी हँसी में शरीक हो जाओ, और हर कोने में खुशियों का गुलाल उड़ाओ। यह त्योहार हमें सिखाता है कि जिंदगी की सच्ची खूबसूरती अपने रंगों को दूसरों के लिए बिखेरने में है—हर कदम पर प्यार बोने में, हर नजर में उम्मीद जगाने में। होली वह जादू है जो कहता है: रंगों से आगे बढ़ो, दिलों को जीतो, और जिंदगी को एक अनंत उत्सव बनाओ।

यह महज एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि जीवन को रंगों से सराबोर करने का बहाना है, बुराइयों की होली जलाने का अवसर है, और प्रेम को पल्लवित करने का पवित्र वादा है। इसे पूरे दिल से मनाओ, हर कोने को रंगों की छटा से भर दो, और अपने भीतर की हर आग को शीतलता से ठंडा कर दो। होली की यह रंग-बिरंगी बौछार आपके जीवन में प्रेम, उमंग और उड़ान का ऐसा समागम लाए कि हर पल एक नई शुरुआत बन जाए—यही इसका असली रंग है, यही इसकी सच्ची मंगलकामना है। तो आइए, इस होली रंगों के साथ-साथ दिलों को भी रंगों से सराबोर करें, और जिंदगी को एक ऐसा कैनवास बनाएं, जो हर नजर को सुकून दे, हर दिल को जोश से भर दे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

जिला कलक्टर ने जिले में जल जीवन

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा, । ग्रामीण क्षेत्र के प्रत्येक घर में नल से शुद्ध पेयजल पंहुचाने की योजना जल जीवन मिशन के तहत जिले में सफल क्रियान्वयन के लिये जिला जल एवं स्वच्छता समिति की मासिक समीक्षा बैठक मंगलवार को जिला कलक्टर जसमीत सिंह की अध्यक्षता में कलक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई।

बैठक मे जन स्वा.अभि. विभाग के अधीक्षण अभियन्ता धनपत राज सोनी ने जल जीवन मिशन की प्रगति के बारे में अवगत करवाया। चम्बल प्रोजेक्ट के अधीक्षण अभियन्ता विनोद कुमार गर्ग ने पीपीटी के माध्यम से वर्ष २०२४-२५ में मेजर कार्यों के अन्तर्गत नल कनेक्शन की खंड वाइज प्रगति से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि अब तक अधिक से अधिक जल नल कनेक्शन किए जा चुके है।

जिला कलक्टर सिंह ने जल जीवन मिशन के तहत चल रहे कार्यों में गुणवत्ता का पूर्ण ध्यान देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग करें तथा निर्धारित मानकों के अनुरूप कार्य किया जाये। अधीक्षण अभियंता ने जिला कलेक्टर को अवगत करवाया कि जिले में जल जीवन मिशन के तहत रोड रेस्टोरेंशन के कार्य में भी प्रगति लाई गई है एवं स्वीकृत प्रत्येक योजनाओं का विस्तृत विश्लेषण किया।

जिला कलक्टर ने निर्देश दिए कि गवर्नमेंट बिल्डिंग में एफएचटीसी बढ़ाने व गंगापुर और सहाडा प्रोजेक्ट के अलावा सभी ब्लॉक को सैचुरेटेड करने के लिए कहा और रिपोर्टेड विलेज एवं सर्टिफाइड विलेज के गैप को कम करने हेतु भी निर्देश दिए। शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए कि शेष रही आंगनवाड़ी व स्कूलों में नल कनेक्शन करवा कर शत प्रतिशत उपलब्धता निश्चित करें। एसई पीडब्ल्यूडी को निर्देश दिए की विभाग द्वारा रोड रेस्टोरेशन का कार्य किया गया उसे वेरीफाई किया जाए। एस ई एवीवीएनएल को निर्देशित किया कि पंप हाउस की पावर सप्लाई की सुचारू व्यवस्था की जाए। जिला कलक्टर ने कहा कि जेजेएम के कार्य में प्रगति लाए।

बैठक में एडीएम प्रतिभा देवटिया, मुख्य शिक्षा अधिकारी अरुणा गारू, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के अधिकारी विभाग से सीपी गोस्वामी, एस ई एवीवीएनएल के के संचेती, संयुक्त निदेशक कृषि विनोद कुमार जैन, पशुपालन ए के सिंह, उद्यान विभाग से शंकर सिंह, पीडब्ल्यूडी से एसई मनोज जोशी, आईसीडीएस से राजकुमारी खोरवाल, अधिशाषी अभियंता मयंक शर्मा, अंकित सारस्वत, केके अग्रवाल, सिद्धार्थ टॉक, रजनीश बेरवा, गणेश ठुकरान मुख्य रासायनज्ञ डॉ. इकबाल हुसैन, जिला कन्सल्टेंट डी.एस.यू. मुकेश कुमार शर्मा, आईएसए से कमलेश गुर्जर एवं जन स्वास्थ्य अभि. विभाग के सभी अभियंता सहित संबंधित सदस्य और जिला पदाधिकारी मौजूद रहें।

भगोरिया आदिवासियों का बहुत बड़ा पर्व...!

भगोरिया आदिवासियों का बहुत बड़ा पर्व,
मेला व हाट बाजार संस्कृति पर होता गर्व।
सांस्कृतिक विरासत व परम लोक-संस्कृति,
रंग और मस्ती के साथ करते हैं अभिव्यक्ति।
नव युगलों का अपना एक अलग ही रंग हैं,
कुल्फी खाती छोरियाँ रहती सब संग-संग है।

भगोरिया आदिवासियों का बहुत बड़ा पर्व,
मेला व हाट बाजार संस्कृति पर होता गर्व।
मध्य प्रदेश का झाबुआ, मंडला, खरगोन,
धार, बड़वानी, बैतूल, होशंगाबाद, उमरिया,
अनूपपुर, सीधी, शहडोल, बालाघाट, हरदा,
श्योपुर और ग्वालियर में आकर हैं ठहरता।

भगोरिया आदिवासियों का बहुत बड़ा पर्व,
मेला व हाट बाजार संस्कृति पर होता गर्व।

पर्व से अपनापन, एकजुटता का एहसास,
परंपरागत पोशाक आधुनिकता का वास।
मेले में होती है उमंग ढोल की थाप के संग,
मांदल की गूंज से खिलता जाता अंग-अंग।

भगोरिया आदिवासियों का बहुत बड़ा पर्व,
मेला व हाट बाजार संस्कृति पर होता गर्व।

होली के 7 दिन पूर्व होलाष्टक से होता शुरू,
नवयुवतियाँ झूले पर आत्ममंथन करें गुरू।
विभिन्न वेशभूषा में नाचते-थिरकते परिवार,
अलौकिक और अनोखा मनाते हैं ये त्यौहार।

संजय एम तराणेकर

शरीर में प्रोटीन की कमी

क्या आप जानते हैं की शरीर में प्रोटीन की कमी कोने-कोने से खून छीन लेती है। अगर आप शाकाहारी हैं तो आप चिकन-मटन के स्थान पर यह 10 सिम्पल सुपर फूड खाए, इससे शरीर पर मांस भी चढ़ेगा और शरीर में प्रोटीन और आयरन की कमी भी खत्म हो जायेगी :-

प्रोटीन डेफिशिएंसी से होने वाली बीमारियाँ खाने में प्रोटीन ना होने की वजह से मसल्स खत्म होने लगती हैं।

इसकी वजह से कुपोषण होता है जो एनीमिया को बढ़ाता है। दोनों समस्याओं का साथ में इलाज करने के लिए इन फूड्स का सेवन करें।

प्रोटीन की कमी से सूख जाएगा खून प्रोटीन की कमी से मरास्मस की बीमारी होती है। इसमें प्रोटीन ना लेने से कुपोषण हो जाता है। इसकी वजह से रेड ब्लड सेल्स भी कम होने लगती हैं। जो खून की कमी को बढ़ावा देती हैं। इस बीमारी में प्रोटीन देने वाला चिकन, मटन और अंडे से ज्यादा फायदेमंद दूसरे फूड होते हैं, जिनमें प्रोटीन के साथ आयरन भी होता है।

(1). पालक पालक एक हरी पत्तेदार सब्जी है जो थकान और कमजोरी मिटा देती है। यूएसडीए के मुताबिक पालक के पत्तों में आयरन और प्रोटीन दोनों होता है। यह कैल्शियम का भी स्त्रोत होता है।

(२). फलियां फलियां बेस्ट वेजिटेरियन फूड्स में से एक हैं। इसके अंदर दालें, छोले और सोयाबीन आती है। ये फूड्स मरास्मस की बीमारी दूर करने के लिए दोनों पोषक तत्व देते हैं।

(3). कद्दू के बीज अगली बार कद्दू के बीज फेंकने की गलती ना करें। इन्हें सुखाकर भून लें और खाएं।

ये छोटे से बीज शरीर में प्रोटीन के साथ आयरन की भरमार कर सकते हैं।

(4). क्विनोआ क्विनोआ एक हाई प्रोटीन फूड है। जो रेड ब्लड सेल्स का उत्पादन बढ़ाने में मदद करता है।

इसकी खिचड़ी बनाकर खा सकते हैं। सलाद और स्मूदी में भी इसे डाला जाता है।

(5). ब्रोकली ब्रोकली एक सुपरफूड माना जाता है। इसमें कैंसर से बचाने वाले गुण होते हैं। साथ ही एनीमिया, थकान, कमजोरी जैसी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है।

(6). टोफू टोफू दिखने में पनीर की तरह होता है मगर यह दूध से नहीं बनता। इसे सोयाबीन से तैयार किया जाता है। यह एक हाई प्रोटीन और हाई आयरन फूड है। लैक्टोज इनटॉलरेंट भी इसका सेवन आराम से कर सकते हैं।

(7). डार्क चॉकलेट डॉर्क चॉकलेट महिलाओं को काफी पसंद आती है। यह आयरन की कमी को दूर कर सकती है। इसमें थोड़ा प्रोटीन भी होता है। इसे खाकर मूड बेहतर बनता है। मगर डायबिटीज में इसका सेवन करने से बचें।

(8). मक्के का आटा अगर आपको मक्के की रोटी खाना पसंद है तो हम एक और कारण दे रहे हैं। यह कुपोषण और एनीमिया की बीमारी को खत्म कर सकती है।

पालक के साग के साथ इसका कॉम्बिनेशन काफी पावरफुल बनता है।

(9). ओट्स ओट्स से प्रोटीन, आयरन और फाइबर मिलता है। इस वजह से वजन कम करने के साथ आयरन और प्रोटीन की कमी में इसका सेवन करें। यह शरीर के लिए काफी हेल्दी फूड है।

(10). मटर मटर के दाने कमजोरी और थकान का इलाज कर सकते हैं। यह आपके सूखे शरीर पर मांस चढ़ाते हैं। इनमें प्रोटीन और आयरन की भरमार होती है।

कहानी : सपनों की सच्ची उड़ान

गाँव के एक छोटे से घर में रहने वाली कल्पना देवी के लिए उनका इकलौता बेटा, आरव, ही उनकी दुनिया था। पति के गुजर जाने के बाद उन्होंने अकेले ही आरव को पाल-पोसकर बड़ा किया। संघर्षों से भरी जिंदगी में उन्होंने कभी अपने बेटे की खुशी पर आँच नहीं आने दी।

आरव बचपन से ही माँ का हाथ बँटाने में विश्वास रखता था। जब उसके दोस्त खेलते, वह माँ के साथ खेतों में हाथ बँटाता। जब दोस्त ऊँचे सपने देखते, वह माँ की आँखों में छुपे दर्द को पढ़ता।

समय बीता, आरव ने अपनी पढ़ाई पूरी की और शहर में बड़ी नौकरी पा ली। गाँव में यह खबर आग की तरह फैल गई। हर कोई कह रहा था, ₹अब आरव अपने सपनों को उड़ान देगा, और माँ को आराम की ज़िंदगी मिलेगी।₹

माँ की आँखों में गर्व था, लेकिन उनके दिल में एक अनकही चिंता भी थी। बेटे की विदाई की कल्पना मात्र से ही उनकी आँखें नम हो जातीं।

एक दिन, माँ ने बेटे से कहा, ₹बेटा, अब तुझे अपनी दुनिया बसानी है। शहर जा, अपने सपनों को पूरा कर, मेरी फिक्र मत कर।₹

आरव मुस्कुराया, माँ के पास बैठकर उनके हाथ अपने हाथों में लिए और बोला, ₹माँ, मेरी दुनिया आपके बिना अधूरी है। सपने वे नहीं जो अपनों से दूर कर दें, बल्कि वे होते हैं जो अपनों के साथ पूरे किए जाएँ।"

आरव ने गाँव में ही एक नई पहल की—उसने गाँव के युवाओं के लिए एक शिक्षण संस्थान खोला, जहाँ वे मुफ्त में शिक्षा प्राप्त कर सकते थे। शहर की बड़ी नौकरी छोड़कर उसने अपने गाँव के भविष्य को संवारने का बीड़ा उठाया।

"तू अपना भविष्य क्यों बर्बाद कर रहा है?₹ लोगों ने ताने मारे। लेकिन आरव का उत्तर सधा हुआ था—₹अगर मेरी सफलता मेरे अपनों के काम नहीं आई, तो ऐसी सफलता का

कोई मूल्य नहीं।₹

समय बीता, और आरव की मेहनत रंग लाई। उसका शिक्षण संस्थान पूरे क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गया। कई गाँवों के बच्चे वहाँ आकर पढ़ने लगे। माँ उसे देखकर गर्व से भर जातीं।

एक दिन, जब माँ ने गाँव के बच्चों को पढ़ते देखा, तो उनकी आँखों में आँसू थे—गर्व और खुशी के आँसू। उन्होंने बेटे का माथा चूमा और कहा,

"बेटा, मैंने तुझे सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचते देखने का सपना देखा था, और तूने मेरी कल्पना से भी बड़ा सपना सच कर दिया।₹

आरव ने माँ के पैरों को छूते हुए कहा,

"माँ, मेरी सबसे बड़ी सफलता आपकी मुस्कान है। यह दुनिया मुझे पहचानें या न पहचानें, लेकिन जब तक आप मुझ पर गर्व करती रहेंगी, मैं खुद को दुनिया का सबसे सफल इंसान मानूँगा।₹

उस दिन माँ को एहसास हुआ कि उन्होंने अपने बेटे को सिर्फ जन्म ही नहीं दिया, बल्कि उसे इंसानियत की सबसे बड़ी सीख भी दी थी—सपने सिर्फ खुद के लिए नहीं, अपनों और समाज के लिए होने चाहिए।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

एक्स डाउन, जिंदगी ऑन!

सोमवार का दिन और अचानक 'एक्स' (ट्विटर) की सेवाएं ठप। जैसे ही लोगों ने देखा कि उनकी 'फीड' लोड नहीं हो रही, मानो सांसें अटक गईं। सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने वाले यूजर्स इस झटके से इतने हतप्रभ हो गए कि कुछ ने तो फोन रिस्टार्ट किया, वाई-फाई बदला, यहां तक कि अपना ही अकाउंट लॉगआउट-लॉगइन कर डाला—पर सब बेकार। भारत में 2,200 से ज्यादा शिकायतें दर्ज हुईं, लेकिन अमेरिका और ब्रिटेन में तो जैसे डिजिटल सुनामी आ गई—20,000 से अधिक यूजर्स ने समस्या की रिपोर्ट की। डाउनडिटेक्टर का ग्राफ चढ़ता गया, लेकिन मस्क साहब मौन रहे। सबसे मज़ेदार दृश्य यह था कि बिना ट्वीट किए भी दुनिया चलती रही। लोग ऑफिस गए, चाय की दुकानों पर बहसें जारी रहीं, और कुछ ने तो इस आपदा में अपने पुराने दोस्त से फोन पर बात भी कर ली। कुछ घंटों बाद 'एक्स' वापस चल पड़ा, तब जाकर ट्वीट प्रेमियों की आत्मा को शांति मिली। लेकिन यह घटना याद दिला गई कि स्क्रीन से परे भी एक असली दुनिया है— जहां ट्वीट नहीं, रिश्ते ट्रेंड करते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

रिश्तों के बीच बढ़ती डिजिटल दीवार

मोबाइल अब हमारे हाथ का एक साधारण उपकरण नहीं रह गया है—यह आधुनिक जीवन का सबसे गहरा और खामोश जाल बन चुका है। यह एक ऐसी चमकदार खिड़की है, जो खुलते ही हमें उस दुनिया में धकेल देती है, जहाँ अपनों की गर्माहट खो जाती है और अनजानों की भीड़ हमें घेर लेती है। घर में सब एक छत के नीचे हैं, फिर भी एक-दूसरे से मीलों दूर। हर कोई अपनी छोटी-सी स्क्रीन में कैद है—एक ऐसी आभासी दुनिया में खोया हुआ, जहाँ हज़ारों चेहरों की चमक तो है, पर अपनेपन की रोशनी नहीं। तकनीक ने हमें जोड़ने का सपना दिखाया था। कहा गया था कि दूरियाँ मिटेंगी, रिश्ते और गहरे होंगे। मगर हकीकत क्या है? दिलों के बीच ऐसी खाइयाँ बन गई हैं, जिन्हें पाटना अब किसी पहाड़ को हिलाने जितना मुश्किल लगता है। यह कैसा विकास है, जो हमें आगे ले जाने के बजाय पीछे की ओर धकेल रहा है—अकेलेपन की उस गहरी खाई में, जहाँ से निकलने का रास्ता ढूंढना हर दिन भारी पड़ता जा रहा है?

कभी घर वह पवित्र ठिकाना हुआ करता था, जहाँ शामें हंसी-खुशी से गूंजती थीं। माता-पिता बच्चों के साथ बैठकर दिनभर की बातें करते थे, दादा-दादी अपनी पुरानी कहानियों से सबको जोड़ते थे, और हर पल एक याद बनकर मन में बस जाता था। लेकिन अब वह सुकून कहाँ? माता-पिता अपने फोन में वीडियो देखने में मशगूल हैं, जैसे बच्चों की बातें अब उनके लिए बेमानी हो चुकी हों। बच्चे अपने माँ-बाप से कुछ साझा करने के बजाय किसी सोशल मीडिया स्टार की बनावटी ज़िंदगी को सच मान बैठते हैं। और बुज़ुर्ग? वे तो बस कोने में बैठे एक उम्मीद बनकर रह गए हैं—उम्मीद कि शायद कोई उनकी ओर देख ले, दो पल बात कर ले। मगर उनकी आवाज़ अब उस नोटिफिकेशन की चीख के आगे दब चुकी है, जो हर किसी के लिए "ज़रूरी" बन गया है। एक स्क्रॉल, एक वीडियो, एक मैसेज—यह सब उस स्नेह से कहीं ज़्यादा कीमती हो गया है, जो कभी परिवार की नींव हुआ करता था।

सोशल मीडिया ने रिश्तों को जोड़ने का ढोंग तो बहुत किया, मगर सच यह है कि उसने उन्हें चुपचाप तोड़ डाला। इंस्टाग्राम पर हंसते-मुस्कुराते चेहरे दिखते हैं, मगर घर की चारदीवारी के भीतर सन्नाटा पसरा रहता है। वॉट्सएप पर रिश्तेदारों को "गुड मॉर्निंग" और "हैप्पी बर्थडे" के मैसेज भेजे जाते हैं, मगर असल में उनके घर जाकर गले लगाने का वक्त किसी के पास नहीं। त्योहारों की वह रौनक, जो कभी आंगन में बच्चों की भागदौड़ और बड़ों की बातों से गूंजती थी, अब स्टेटस अपडेट और वर्चुअल इमोजी तक सिमटकर रह गई है। लोग अब अपनों के बीच कम और स्क्रीन के पीछे छिपे अनजानों के बीच ज़्यादा वक्त बिताते हैं। यह कैसी विडंबना है कि जिन रिश्तों को हम करीब से देख भी सकते हैं, उन्हें हम दूर की चमक में खो रहे हैं?

बच्चों की दुनिया तो जैसे पूरी तरह उजड़ गई है। कभी वे गलियों में खेलते थे, पेड़ों पर चढ़ते थे, मिट्टी में लथपथ होकर हंसते थे। उनकी आँखों में सपने थे, उनके कदमों में आज़ादी थी। मगर अब? अब वे कमरे की चारदीवारी में कैद हैं, स्क्रीन पर उंगलियाँ घुमाते हुए। माता-पिता इसे "सुरक्षा" का नाम देते हैं। वे खुश हैं कि उनका बच्चा बाहर की बुरी संगत से बचा हुआ है। मगर वे यह नहीं देखते कि यह आभासी दुनिया उनकी असल ज़िंदगी को निगल रही है। उनकी आँखें कमज़ोर हो रही हैं, मोटे चश्मे उनकी मासूमियत पर भारी पड़ रहे हैं। उनकी कल्पनाशक्ति, उनकी सामाजिकता, उनका बचपन—यह सब उस नीली रोशनी में जलकर खाक हो रहा है। क्या यही सुरक्षित भविष्य है, जो हम उन्हें दे रहे हैं?

युवाओं के लिए मोबाइल एक और भी गहरा जाल बन गया है। दिन-रात सोशल मीडिया पर स्क्रॉल करना, लाइक्स और कमेंट्स की चमक में अपनी कीमत तौलना, एक बनावटी पहचान को सच मान लेना—यह सब उन्हें भीतर से खोखला कर रहा है। वे हर पल इस दबाव में जीते हैं कि उनकी तस्वीर को कितने लोग पसंद करेंगे, उनके वीडियो को कितने व्यूज़ मिलेंगे। इस चक्कर में वे अपनी असल ताकत, अपनी असल खूबसूरती को भूलते जा रहे हैं। डिप्रेशन, एंग्जायटी, आत्मसम्मान की कमी, असल ज़िंदगी में बात करने की हिम्मत का खत्म होना—यह सब उस आभासी दुनिया की देन है, जिसे वे अपना सब कुछ मान बैठते हैं। क्या यह तरक्की है कि हमारी नई पीढ़ी स्क्रीन के पीछे अपनी पहचान ढूंढ रही है, जबकि असल दुनिया में वह खोती जा रही है?

और बुज़ुर्ग—उनका क्या? वे तो इस तकनीकी तूफान में पूरी तरह पीछे छूट गए हैं। कभी वे घर के सबसे सम्मानित सदस्य हुआ करते थे। उनकी बातें सुनी जाती थीं, उनके अनुभवों से सीखा जाता था, उनके स्नेह में पूरा परिवार बंधा रहता था। मगर अब वे बस "पुराने ख्यालों" वाले कहलाते हैं। उनके पास कहानियाँ हैं, जीवन का अनमोल खज़ाना है, मगर सुनने वाला कोई नहीं। उन्हें एक स्मार्टफोन थमा दिया जाता है—"लीजिए, अपना टाइम पास कीजिए"—और फिर सब अपने-अपने फोन में डूब जाते हैं। क्या हमने कभी सोचा कि उनकी वह उदासी, वह अकेलापन कितना भारी है? उनके लिए तकनीक कोई वरदान नहीं, बल्कि एक ऐसा अभिशाप है, जो उन्हें अपनों से और दूर ले जा रहा है।

क्या यही वह प्रगति है, जिसका सपना हमने देखा था? क्या यही आधुनिकता है, जहाँ माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद वॉट्सएप के मैसेज तक सिमट गया है? जहाँ हंसी-मज़ाक की जगह मीम्स ने ले ली है और भावनाएँ इमोजी में कैद हो गई हैं? मोबाइल अपने आप में कोई गलत चीज़ नहीं है। यह एक शानदार आविष्कार है, जो हमें दुनिया से जोड़ सकता है, हमारी मुश्किलें आसान कर सकता है। मगर जब यह हमारी ज़िंदगी का मालिक बन जाता है, जब यह हमारे रिश्तों से बड़ा हो जाता है, तो यह एक धीमा ज़हर बन जाता है—जो न दिखता है, न सुनाई देता है, मगर धीरे-धीरे सब कुछ तबाह कर देता है।

अब वक्त आ गया है कि हम इसे उसकी सही जगह दिखाएँ। मोबाइल को हमारा सहायक बनने दें, हमारा स्वामी नहीं। इसे बंद करें, और अपनों की ओर देखें। उनके साथ बैठें, उनकी बातें सुनें, उनकी हंसी में शामिल हों, उनकी उदासी को समझें। असल ज़िंदगी की गर्माहट को महसूस करें—वह गर्माहट जो किसी स्क्रीन की ठंडी चमक में कभी नहीं मिल सकती। क्योंकि ये रिश्ते, ये पल—ये एक बार चले गए, तो कोई नोटिफिकेशन, कोई अलार्म आपको यह नहीं बताएगा कि आपने क्या खो दिया। और जब वह खालीपन आपको घेरेगा, तो उस वक्त यह मोबाइल आपकी आँखों से बहते आँसुओं को भी नहीं पोंछ सकेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

नेकी 2.0: नेकी + कैमरा + कैप्शन = महानता

"नेकी कर, दरिया में डाल"—अब यह कहावत किताबों की कब्र में दफ़न हो चुकी है, और उसकी समाधि पर लोग सेल्फी खींचकर "नेकी कर, पोस्ट पर डाल" का तांडव कर रहे हैं। नए ज़माने का धर्मग्रंथ है सोशल मीडिया, जहाँ इंस्टाग्राम के देवता, ट्विटर के तीखे ऋषि और फेसबुक के ढोंगी महात्मा आपकी नेकी का सर्टिफिकेट बाँटते हैं—बशर्ते आपका चेहरा सही एंगल से चमके। पहले लोग चुपचाप दान करते थे, जैसे कोई पाप छिपा रहे हों। अब दान का ढोल पीटते हैं—पहले घोषणा, फिर फोटोशूट, फिर एडिटिंग में फ़िल्टर लगाओ, और सोशल मीडिया पर ठेल दो। गरीब का पेट भरे या न भरे, यह कौन देखता है? बस आपकी प्रोफाइल पर लाइक्स की बारिश हो, और कमेंट्स में "वाह, क्या दिल!" की गूँज सुनाई दे।

जमाना डिजिटल हो गया है, और नेकी अब बिना "डिजिटल तमगे" के नाजायज़ मानी जाती है। पहले भूखे को रोटी देते थे, तो नज़रें झुकती थीं। अब रोटी पकड़ो, कैमरा ऑन करो, और आँखें कैमरे की तरफ टिकाओ—मानो भूखा नहीं, बल्कि आप ही भूखे हों, तारीफ की भूख से मरे जा रहे हों। नेकी अब पेट भरने का सौदा नहीं, चेहरा चमकाने का धंधा है। और अगर गलती से कोई चुपचाप नेकी कर बैठे, तो दुनिया कहेगी—"सबूत दो, वरना झूठे!" क्योंकि बिना पोस्ट के नेकी, दरिया में डूबी मछली की तरह—न बुलबुले, न तमाशा।

अब अगर कोई सड़क किनारे भूख से बिलखता बैठा हो, तो रोटी से पहले कैमरे का लेंस उसकी ओर तन जाता है। रोशनी परफेक्ट है या नहीं, चेहरा करुणा जगाने लायक मासूम है या नहीं—ये सब जांचने के बाद ही "उदारता" का नाटक शुरू होता है। फिर उंगलियां कीबोर्ड पर दौड़ती हैं और कैप्शन उभरता है—"आज इस बेसहारा को भोजन कराकर आत्मा को सुकून मिला।" सुकून मिला या नहीं, कौन परवाह करता है? बस पोस्ट पर लाइक्स और कमेंट्स की बाढ़ आनी चाहिए—यही तो असली तृप्ति है! अब भलाई का अचूक मंत्र बन गया है: नेकी + कैमरा + कैप्शन = महानता का तमगा। इन तीनों का मेल न हो, तो समाज सेवा फीकी लगती है।

अनाथालय जाओ, तो पहले सेल्फी का जुगाड़ करो। किसी ठिठुरते गरीब को कंबल ओढ़ाओ, तो पहले उसके साथ पोज़ बनाकर फ्रेम सजाओ। फिर सोशल मीडिया पर ज्ञान की एक चाशनी टपकाओ—"हम सबको ऐसे पुण्य कार्य करने चाहिए!" ताकि दुनिया देखे कि आपकी करुणा सिर्फ़ दिल की गहराइयों में नहीं, बल्कि टाइमलाइन की चकाचौंध में भी झलकती है। अब दया का पैमाना मात्रा में नहीं, बल्कि क्लिक्स की गिनती में नापा जाता है।

सेलिब्रिटीज़ की दरियादिली तो बस कैमरे के फ्रेम तक सीमित रह गई है। जब वे किसी गरीब के सिर पर हाथ रखते हैं, तो करुणा कम और कैमरे का एंगल ज़्यादा मायने रखता है। उनकी मुस्कान में दया नहीं, बल्कि एक सुनियोजित ब्रांड प्रमोशन झलकता है—"देखिए, कितने दयालु हैं" फ़ोटोशूट पूरा होते ही यह दरियादिली हवा हो जाती है, और अगली सुर्खियों के लिए नई स्क्रिप्ट तैयार होने लगती है। असली दयालुता? बस कैमरे की फ्लैश तक सीमित।

राजनीति में भी यही खेल चलता है। जब कोई नेता किसी जन-कल्याणकारी योजना की घोषणा करता है, तो शब्दों में भावनाएँ कम और प्रचार की गणित ज़्यादा होती है—"गरीबों के लिए यह विशेष योजना...!" योजना कब ज़मीन पर उतरेगी? कितनों तक पहुँचेगी? ये सवाल महत्वहीन हैं। असली फ़ोकस इस पर होता है कि अगले दिन अख़बार में उनकी तस्वीर छपे—एक उद्धारकर्ता के रूप में, जो बस एक घोषणा से ही गरीबी दूर करने का दावा कर रहा हो।

अब दान देना सिर्फ़ मदद का जरिया नहीं, बल्कि सोशल मीडिया स्ट्रैटेजी बन गया है। चेक हाथ में लेकर मुस्कुराते हुए फोटो खिंचवाओ, उसे इंस्टाग्राम और फ़ेसबुक पर डालो, और कैप्शन लिखो—"छोटा सा योगदान समाज के लिए"। अब यह योगदान छोटा था या फोटो बड़ा, यह बहस का विषय नहीं, बल्कि पोस्ट की एंगेजमेंट का विषय है। पहले लोग मंदिर, मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारे में चुपचाप दान कर आते थे। अब दान करने से पहले कैमरा सेट किया जाता है, सही एंगल चुना जाता है, फिर "दयालु मुस्कान" के साथ मदद की जाती है। भलाई का मकसद किसी की सहायता करना नहीं रहा, बल्कि यह साबित करना हो गया है कि हम भले इंसान हैं।

अब तो 'इंस्टाग्राम स्टोरी' और 'फेसबुक लाइव' का ज़माना है। लोग नेकी करने से पहले लाइव आते हैं—"दोस्तों, आज मैं इस गरीब बच्चे को नए जूते देने आया हूँ, देखिए इसकी हालत!" फिर जूते पहनाते हैं, कैमरे में उसकी प्रतिक्रिया रिकॉर्ड करते हैं, और तुरंत वीडियो अपलोड कर देते हैं। बच्चा खुश हुआ या नहीं, उसकी ज़िंदगी बदली या नहीं, इससे किसी को फर्क नहीं पड़ता। फर्क इससे पड़ता है कि कमेंट सेक्शन में कितने लोग 'आप बहुत अच्छे इंसान हैं' लिख रहे हैं। अब नेकी करने का असली संतोष आत्मा में नहीं, लाइक्स और शेयर काउंट में मिलता है।

लेकिन सवाल यह है—क्या भलाई का असली मतलब यही रह गया है? क्या मदद का उद्देश्य सिर्फ़ अपनी छवि चमकाना भर है? शायद हाँ। क्योंकि जो चीज़ कैमरे में कैद नहीं होती, वह मानो हुई ही नहीं। अगर किसी ने चुपचाप किसी की मदद कर दी और उसका फोटो नहीं खींचा, तो यह नेकी अधूरी मानी जाएगी। बिना लाइक्स और शेयर के भलाई, भलाई कहां।

भलाई अब दिल से नहीं, कैमरे से नापी जाती है। तो अगली बार जब किसी की मदद करें, पहले यह सुनिश्चित कर लें—कैमरा ऑन हो, ताकि दयालुता का प्रामाणिक प्रमाण मिल सके। एंगल सही हो, ताकि चेहरे पर करुणा का फ़िल्टर सही ढंग से बैठे। कैप्शन इतना गूढ़ और प्रेरणादायक हो कि लोग पढ़कर आत्ममंथन करने लगें। और हाँ, पोस्ट वायरल होना अनिवार्य है, क्योंकि जब तक भलाई सोशल मीडिया की गूंज न बने, तब तक सेवा अधूरी मानी जाती है। आख़िर, आज के दौर में नेकी का असली आनंद आत्मा की शांति में नहीं, बल्कि नोटिफिकेशन बार में चमकते लाइक्स और कमेंट्स में मिलता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

नेता तोड़ रहे भाषा की मर्यादा, असली मुद्दे गायब गुड़'गोबर' हुई राजनीति

-डॉ सत्यवान सौरभ

बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास जैसी चिंताओं के बीच, एक परेशान करने वाला नया चलन सामने आया है, राजनीतिक दलों की वादा खिलाफी तथा नेताओं की अमर्यादित भाषा का। राजनीतिक दल अपने वादे पूरे करने में विफल रहे हैं और नेता अनुचित भाषा का सहारा ले रहे हैं। हमारी सड़कों की हालत बहुत खराब है; कई इलाकों में, वे बमुश्किल ही सड़कों जैसी दिखती हैं। जल प्रबंधन और सीवेज सिस्टम जैसी ज़रूरी सेवाओं का अभाव है। चिकित्सा सुविधाएँ भी इसी तरह अपर्याप्त हैं, आबादी के सापेक्ष अस्पतालों की कमी है, और जो मौजूद हैं उनमें अक्सर ज़रूरी संसाधनों की कमी होती है। ऐसा लगता है कि नेता सिर्फ़ दिखावटी बनकर रह गए हैं, जो असली मुद्दों को हल करने की उपेक्षा कर रहे हैं। अतीत में, राजनेता अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करते थे, और राजनीति में जो संस्कृति, सभ्यता और शालीनता की भावना थी वो अब गायब हो गई है। आजकल, नेता अक्सर व्यक्तिगत हमलों में शामिल होते हैं, विमर्श की सीमा को पार करते हैं। राजनीति में भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है; लोकतंत्र में, एक नेता की शक्ति भाषा पर उसके नियंत्रण से बहुत हद तक जुड़ी होती है। स्वतंत्रता के बाद से, राजनीतिक परिदृश्य नाटकीय रूप से बदल गया है, साथ ही राजनेताओं के आरोपों के लहज़े और शैली में भी बदलाव आया है। आज कुछ नेता अपने विरोधियों के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी करते हैं, जबकि अन्य आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल करते हैं। क्या हमारे राजनीतिक क्षेत्र में गरिमा की कोई भावना बची है? ऐसी भाषा का सहारा लेने से पहले, ये राजनेता देश और उसके नागरिकों के लिए संभावित नतीजों से बेखबर लगते हैं। अपने विरोधियों को कमतर आंकने की कोशिश में, नेता अक्सर ऐसे बयान देते हैं जो न केवल निरर्थक होते हैं बल्कि आपत्तिजनक भी होते हैं। ऐसी टिप्पणियाँ स्वस्थ और रचनात्मक राजनीति के आदर्शों को धूमिल करती हैं। क्या ये नकारात्मक प्रभाव हमारी राजनीतिक व्यवस्था में स्वीकार्य हैं? ये बयान स्वस्थ्य और अच्छी राजनीति की परिकल्पना पर दाग भी लगाते हैं. फिर भी इन पर कोई कार्रवाई नहीं की जाती. क्या राजनीति में ये दाग अच्छे हैं?

हरियाणा विधानसभा में नेताओं द्वारा ₹गोबर पीने वाले₹ जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। चुनाव नजदीक आते ही राजनीतिक दल अक्सर स्वीकार्य भाषा की सीमाओं को लांघ देते हैं। पार्टी नेता अपनी बात बेबाकी से कहते हैं, अक्सर मुखर होकर बोलते हैं। चुनाव के मंच पर आरोप-प्रत्यारोप के अलावा व्यक्तिगत हमले अब संसद और विधानसभाओं में भी होने लगे हैं। उदाहरण के लिए, जब विधायक राजकुमार गौतम ने गोहाना में मिलावटी जलेबी बनने की बात कही, तो गोहाना के विधायक और कैबिनेट मंत्री अरविंद शर्मा ने पलटवार करते हुए कहा कि गौतम तो गोबर भी पीते हैं, उन्होंने कहा कि उन्हें जलेबी की गुणवत्ता की चिंता नहीं करनी चाहिए। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसे लोग सार्वजनिक धन की कीमत पर तुच्छ काम कर रहे हैं। हमें सोचना चाहिए कि हमारे देश के भविष्य को आकार देने वालों की भाषा कितनी खराब हो गई है। जागरूक मतदाताओं से ही राजनीतिक विमर्श में सुधार हो सकता है। तर्क-वितर्क और भ्रांतियों के बीच शब्दों के अर्थ विकृत होते जा रहे हैं, जो एक बड़ी चिंता का विषय है। यह स्पष्ट है कि आज के राजनीतिक परिदृश्य में भाषा के सम्मान की अवहेलना की जा रही है, और यह सब उन्हीं सदनों में हो रहा है जो लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए बने हैं। नेताओं द्वारा शब्दों का चयन कई सवाल खड़े करता है। उन्हें यह समझना चाहिए कि उनके अनुयायी उनकी बयानबाजी को ही दोहराएंगे। यह कोई अकेली घटना नहीं है; कई नेताओं ने पहले भी विवादित टिप्पणियों से राजनीतिक क्षेत्र को कलंकित किया है। राजनीतिक मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन वे तेजी से स्पष्ट कलह में बदल रहे हैं। नेताओं को याद रखना चाहिए कि दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे लोगों में सबसे कटु बात का उत्तर शालीनता से देने का कौशल था।

भाषा की टूटती मर्यादा आज के समय में घटते राजनीतिक मानकों का पैमाना है। एक नेता की असली क्षमता अक्सर उसके शब्दों के चयन में झलकती है। अगर राजनीतिक नेता यह पढ़ रहे हैं, तो उन्हें यह पहचानना चाहिए कि भाषा का सम्मान उनके कद को बढ़ाता है, जबकि अशिष्टता इसे कम करती है। समर्थक भले ही व्यक्तिगत चुटकुलों का स्वागत करें, लेकिन समझदार मतदाता- जो स्वतंत्र रूप से सोचते हैं- एक ऐसे नेता की स्थायी छाप बनाते हैं जो बाद में चाहे कितनी भी सकारात्मक बातें क्यों न कही जाएं, अपरिवर्तित रहता है। राजनीति में भाषा के बिगड़ने से सवाल करने की क्षमता खत्म हो गई है, क्योंकि नेता अपने बयानों को पूर्ण सत्य के रूप में देखते हैं। अटल बिहारी और इंदिरा गांधी जैसी हस्तियों की वाक्पटुता आज भी लोगों को प्रभावित करती है। दुर्भाग्य से, विरोधी दलों पर तीखे हमले समाज में केवल कलह और अशांति पैदा करते हैं। चुनाव आयोग के लिए ऐसे मानक स्थापित करना महत्वपूर्ण है जो अनुचित टिप्पणी करने वाले नेताओं पर सख्त दंड लगाते हैं। जनता को यह भी सोचना चाहिए कि क्या ऐसा नेता जो ऐसी कठोर और अपमानजनक भाषा का सहारा लेता है, लोकतंत्र के मंदिर में जगह पाने का हकदार है। लोकतंत्र में नेता अपनी शक्ति और अधिकार जनता से प्राप्त करते हैं, जिसका वे प्रयोग भी कर सकते हैं और दुरुपयोग भी कर सकते हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: फॉरेंसिक साइंस और साइबर सुरक्षा में क्रांति (साक्षात्कार: साइबरशाला और डॉ. महिपाल सिंह संखला के बीच बातचीत)

डॉ. महिपाल सिंह संखला
सहायक प्रोफेसर, फॉरेंसिक विज्ञान विभाग, चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली, पंजाब।

साइबरशाला: नमस्कार डॉ. महिपाल सिंह संखला, आज हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के फॉरेंसिक साइंस और साइबर सुरक्षा में योगदान पर चर्चा करने जा रहे हैं। कृपया हमें बताएं कि AI कैसे आधुनिक अपराध जांच में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: नमस्कार! AI आज फॉरेंसिक साइंस और साइबर सुरक्षा में एक क्रांतिकारी भूमिका निभा रहा है। अपराधों की जांच पहले समयसाध्य और जटिल हुआ करती थी, लेकिन AI के आने से अब विश्लेषण तेजी से और सटीकता से हो रहा है।

साइबरशाला: क्या आप बता सकते हैं कि फॉरेंसिक साइंस में AI किन-किन प्रमुख तरीकों से मदद कर रहा है?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: हां, निश्चित रूप से! AI निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों में मदद कर रहा है:

1. फिंगरप्रिंट और चेहरे की पहचान: AI-आधारित एल्गोरिदम फिंगरप्रिंट और चेहरे की पहचान को अधिक सटीक बनाते हैं, जिससे अपराधियों को ट्रैक करना आसान हो जाता है।
2. डीएनए प्रोफाइलिंग: AI डीएनए सैंपल का मिलान तेज़ी से करता है, जिससे लंबित मामलों की जांच में तेजी आती है।
3. क्राइम सीन विश्लेषण: AI का उपयोग घटनास्थल के डिजिटल पुनर्निर्माण और पैटर्न विश्लेषण में किया जाता है, जिससे अपराध की जड़ तक पहुँचना आसान हो जाता है।
4. डॉक्यूमेंट फॉरेंसिक्स: AI हस्तलिखित या डिजिटल दस्तावेज़ों की सत्यता की जांच कर सकता है और जालसाजी की पहचान कर सकता है।
5. ऑडियो और वीडियो विश्लेषण: AI गहरी नकली (deepfake) वीडियो और संशोधित ऑडियो को पहचानने में मदद करता है।

साइबरशाला: साइबर सुरक्षा में AI का क्या योगदान है, खासकर डिजिटल अपराधों की बढ़ती संख्या को देखते हुए?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: साइबर अपराधों से निपटने में AI का उपयोग अत्यधिक प्रभावी साबित हो रहा है। इसके कुछ प्रमुख योगदान इस प्रकार हैं:

1. साइबर हमलों की पहचान और रोकथाम: AI संदिग्ध ऑनलाइन गतिविधियों को ट्रैक करता है और संभावित साइबर हमलों की भविष्यवाणी करता है।
2. फिशिंग और मैलवेयर डिटेक्शन: AI ईमेल और वेबसाइट्स को स्कैन कर फिशिंग प्रयासों और मैलवेयर हमलों का पता लगाता है।
3. डेटा रिकवरी और एनालिसिस: AI साइबर क्राइम की जांच के लिए हटाए गए या एनक्रिप्टेड डेटा को पुनः प्राप्त करने में मदद करता है।
4. बॉट डिटेक्शन: AI बॉट्स और ऑटोमेटेड साइबर हमलों को पहचानकर सिस्टम की सुरक्षा करता है।
5. फॉरेंसिक लॉग विश्लेषण: AI लॉग डेटा की जांच करके संभावित सुरक्षा खतरों का विश्लेषण करता है।

साइबरशाला: क्या AI का उपयोग न्याय प्रणाली में निर्णय लेने में किया जा सकता है?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: हां, AI डेटा विश्लेषण के माध्यम से न्यायिक प्रक्रिया में सहायता कर सकता है। हालांकि, अंतिम निर्णय मानव विशेषज्ञों द्वारा ही लिया जाता है। AI केवल जाँच प्रक्रिया को तेज़ करने और पैटर्न पहचानने में मदद करता है।

साइबरशाला: अंत में, आप कैसे देखते हैं कि भविष्य में AI अपराध जांच में और क्या नया कर सकता है?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: भविष्य में, AI और अधिक उन्नत होगा। यह अपराधों की भविष्यवाणी करने, अपराधियों की मानसिकता को समझने, और साइबर हमलों को रोकने के लिए अधिक बुद्धिमान प्रणाली विकसित करने में सक्षम होगा। AI का उपयोग रोबोटिक फॉरेंसिक्स, लाइव क्राइम सीन विश्लेषण, और स्वचालित केस स्टडी के लिए भी किया जाएगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: फॉरेंसिक साइंस और साइबर सुरक्षा में क्रांति

(साक्षात्कार: साइबरशाला और डॉ. महिपाल सिंह संखला के बीच बातचीत)

AI: अपराध जांच में नई क्रांति

साइबरशाला: डॉ. महिपाल सिंह संखला, आज अपराध जांच में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की भूमिका लगातार बढ़ रही है। आप इसे किस रूप में देखते हैं?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: AI अब अपराध जांच का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। पारंपरिक तरीकों की तुलना में AI न केवल तेज़ी से डेटा प्रोसेस करता है, बल्कि पैटर्न विश्लेषण और संभावित अपराधों की भविष्यवाणी करने में भी मदद करता है। डिजिटल फॉरेंसिक्स, बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन, साइबर अपराधों की जांच और न्याय प्रणाली में AI का उपयोग लगातार बढ़ रहा है।

साइबरशाला: क्या आप विस्तृत रूप से बता सकते हैं कि AI फॉरेंसिक साइंस के किन-किन क्षेत्रों में मदद कर रहा है?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: बिल्कुल! AI के कई प्रमुख उपयोग इस प्रकार हैं:

CyberShala
Engage Educate Empower

1. बायोमेट्रिक विश्लेषण: AI का उपयोग उंगलियों के निशान (फिंगरप्रिंट), चेहरे की पहचान (Facial Recognition), और आईरिस स्कैनिंग के लिए किया जाता है। AI सिस्टम बड़ी मात्रा में डेटा को तेज़ी से स्कैन करके संदिग्धों की पहचान करने में मदद करता है।
2. डीएनए प्रोफाइलिंग: AI-आधारित एल्गोरिदम डीएनए सैंपल की तुलना करते हैं और संभावित संदिग्धों को चिह्नित करने में मदद करते हैं।
3. डिजिटल फॉरेंसिक्स: AI हटाए गए डेटा को पुनर्प्राप्त करने, साइबर अपराधों का विश्लेषण करने और साइबर सुरक्षा खतरों की पहचान करने में सक्षम है।
4. अपराध दृश्य पुनर्निर्माण (Crime Scene Reconstruction): AI की मदद से घटनास्थल का डिजिटल पुनर्निर्माण किया जाता है, जिससे अपराध के दौरान क्या हुआ होगा, इसका अनुमान लगाया जा सकता है।
5. गहरी नकली (Deepfake) पहचान: अपराधी AI-जनित नकली वीडियो और ऑडियो का उपयोग कर रहे हैं। AI एल्गोरिदम इन्हें पहचानने में कारगर साबित हो रहे हैं।

साइबरशाला: साइबर सुरक्षा के संदर्भ में AI किस तरह से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: डिजिटल युग में साइबर अपराध बढ़ रहे हैं, और AI इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

1. साइबर हमलों की पहचान: AI लगातार इंटरनेट पर गतिविधियों की निगरानी करता है और संदिग्ध साइबर हमलों का पता लगाकर सुरक्षा अलर्ट भेजता है।
2. फिशिंग और मैलवेयर डिटेक्शन: AI-आधारित सिस्टम फर्जी वेबसाइटों, ईमेल स्कैम और मैलवेयर को पहचानने में सक्षम हैं।
3. डेटा सुरक्षा: AI डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करके डेटा लीक और संभावित खतरों की भविष्यवाणी करता है।
4. रियल-टाइम साइबर मॉनिटरिंग: AI साइबर हमलों को रोकने के लिए मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करता है।

भविष्य में AI की भूमिका

साइबरशाला: क्या आपको लगता है कि भविष्य में AI अपराध जांच को और अधिक प्रभावी बनाएगा?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: निश्चित रूप से! भविष्य में AI और भी उन्नत होगा।

- x रोबोटिक फॉरेंसिक्स: AI-नियंत्रित रोबोट घटनास्थल पर जाकर सबूत इकट्ठा करेंगे।
- x ऑन-स्पॉट DNA विश्लेषण: AI से लैस पोर्टेबल डिवाइसेस मौके पर ही डीएनए का विश्लेषण कर सकेंगी।
- x साइबर क्राइम प्रेडिक्शन: AI बड़े डेटा का विश्लेषण करके संभावित साइबर हमलों की भविष्यवाणी करेगा।
- x क्राइम पैटर्न एनालिसिस: AI अपराध के पैटर्न को समझकर कानून प्रवर्तन एजेंसियों को अलर्ट करेगा।

साइबरशाला: डॉ. संखला, यह चर्चा बहुत ही रोचक रही! आपकी राय में, AI और फॉरेंसिक साइंस का मिलन भविष्य में किस दिशा में जाएगा?

डॉ. महिपाल सिंह संखला: AI और फॉरेंसिक साइंस का संयोजन अपराध जांच को अधिक सटीक, तेज़ और प्रभावी बना रहा है। यह तकनीक अपराधियों को पकड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और न्याय प्रणाली को और अधिक मजबूत बनाएगी।

साइबरशाला: बहुत-बहुत धन्यवाद, डॉ. संखला! आपकी जानकारी से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला।

डॉ. महिपाल सिंह संखला: धन्यवाद!

दारुत्तानी घाट पर सिलसिलेवार हादसे, एक की मौत, तीन गंभीर रूप से घायल

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : लंबे अंतराल के बाद मयूरभंज जिले के बांगिरीपोशी थाने से गुजरने वाली राष्ट्रीय राजमार्ग 49 की बाईपास सड़क एक बार फिर खून से रंग गई। विभिन्न दुर्घटनाओं में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई तथा तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए।जानकारी के अनुसार, कोयला लदा ट्रक (ओडी01एल 6444) झारसुगुड़ा से कोलकाता कोयला लेकर जा रहा था, तभी ब्रेक फेल होने के कारण उसने पहले एक कार और बाइक को टक्कर मारी और सड़क किनारे पलट गया।दुर्घटना में झारखंड राज्य के बीरभूम क्षेत्र के ट्रक चालक सैयद मियां (२४) और खलासी खड़गपुर क्षेत्र के रामपदी पाल (२२) गंभीर रूप से घायल हो गए। साथ में मौजूद ट्रक चालक का भाई मोहित मियां दुर्घटना के डर से ट्रक से कूद गया और सड़क किनारे कंक्रीट की बाड़ से टकराने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई।दूसरी ओर, बिशोई की ओर जा रहे चंदुआ थाना क्षेत्र के बाइक सवार सनातन सोरेन (30) भी दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को बांगिरीपोशी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में प्राथमिक उपचार के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग एम्बुलेंस द्वारा पीआरएम मेडिकल कॉलेज भेज दिया गया है। सूचना मिलने पर बांगिरिपोशी पुलिस मौके पर पहुंची, शव को बरामद कर बांगिरिपोशी अस्पताल ले गई तथा दुर्घटना में शामिल वाहन को जब्त कर जांच जारी रखी।

झारखंड का गैंगस्टर अमन साव रायपुर से रांची लाते वक्त एनकाउंटर में ढेर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, आतंक का साम्राज्य खड़ा कर पुलिस के सिरदर्द बना झारखंड का गैंगस्टर अमन साव को पुलिस ने रायपुर जेल से रांची लाते वक्त हुई हमले के बाद एनकाऊंटर कर मार गिराया है।

झारखंड समेत आस पास के सटे राज्यों में अपराध, फिरौती हत्या का नेटवर्क लीडर के रूप में डॉन लॉरेंस बिश्नोई का एक गैंग्स्टर अमन साहु बताया जाता है। एनटीपीसी के डीजीएम की हत्या में अमन साहू का नाम नाम उभरकर सामने आने एवं जेल से काम को अंजाम देने की जानकारी झारखंड पुलिस मुख्यिा ने एक बयान में उद्गार व्यक्त करने के बाद मामला राजनीति मोड़ ले ही रहा था कि आज यह वारदात हुई।

अमन एनकाउंटर घटना मंगलवार की सुबह पलामू जिले की है। रायपुर के शंकर नगर इलाके में एक व्यापारिक साझेदार के घर के बाहर फायरिंग की घटना के बाद से रायपुर पुलिस उसे पकड़ा था। उधर कोरबा में हुए गोलीकांड के बाद रायपुर पुलिस ने उसके 4 गैंग सदस्यों को गिरफ्तार किया था।

जेल में बंद अमन को पूछताछ के लिए रिमांड पर मंगलवार झारखंड पुलिस रांची ला रही थी। इसी दौरान पुलिस की वाहन पलामू में दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद अमन साहू पुलिस से हथियार छीनकर भागने लगा। जहां उसके गैंग ने मौके पर फायरिंग कर दी। यहां पुलिस की टीम में मौजूद एनकाउंटर स्पेशलिस्ट प्रमोद कुमार सिंह ने मौके पर मोर्चा संभाल उसे मार गिराया। इस क्रम में झारखंड पुलिस की एक जवान भी घायल होने की खबर है।पुलिस को जेल से अपराधिक गैंग संचालित करने के अलावे कुछ घंटे पहले फेसबुक प्रोफाईल बदलने की पुख्ता जानकारी पुलिस को थी।

झारखंड के डीजीपीत तथा संबंधित एस पी की तरफ से भी यह जानकारी दी गई है कि अमन साहू की गैंग जेल से सक्रिय थी, झारखंड के कई कांडों में इसका नाम शामिल था, उसकी गैंग लगातार कई घटनाओं को अंजाम दे रही थी। रांची के अलावा हाल ही में हजारीबाग में एनटीपीसी के डीजीएम हत्याकांड में भी उसका नाम सामने आया था।

अपराध की दुनिया का अमन का इतिहास बताता है कि वह आई टी आई पास कर के बाद एक मोबाइल दुकान खोला था। जहां उसका परिचय कुछ अपराधियों के साथ हुई। यही से उसने अपराध की दुनिया में कदम रखा, वह जेमर लेकर चलता था तथा मोबाइल अपने पास नहीं रखता था।2020 में गिरफ्तारी के समय रांची पुलिस को उसने अपनी भविष्य के विषय में बताया था कि आने वाले समय मे वह सर्वाधिक मामला दर्ज कराने वाला अपराधी बनने का सपना पाले हुए हैं ताकि लोग / पुलिस उसके नाम से डरें। संभवत यही वजह रहा कि बड़े अपराधी विश्नोई गैंग के साथ संपर्क होने की बात कही जा रही है। जेल के अंदर से गैंग संचालित कर गत दिनों डी जी एम एन टी पी सी की हत्या अब सरकार के लिए चुनौती बन चुकी थी।उधर राजनीति गलियारे में अमन एनकाउंटर पर बयानबाजी होना आरंभ हो चुका है।

गैंगस्टर अमन एनकाउंटर पर सदन में मंत्री से सरयू ने पूछे सवाल

कानुन से बड़े बनेंगे तो सरकार सख्ती से निपटेगी : मंत्री सुदिव्य

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट- हेड झारखंड

रांची। झारखंड विधानसभा में गैंगस्टर अमन साव के एनकाउंटर पर सवाल पुछे गये. जदयू विधायक सरयू राय ने इस मामले पर सरकार से सपष्टीकरण मांगा है. उन्होंने कहा कि सरकार को यह बताना चाहिए कि कैसे उसका एनकाउंटर हुआ, इसकी पूरी डिटेल्स जानकारी सदन में रखनी चाहिए.इसपर मंत्री ने कहा कानून व्यवस्था से ऊपर उठने वालों को हमारी पुलिस सख्ती से निपटेगी. सदन में जमशेदपुर पश्चिमी से विधायक सरयू राय ने कहा कि आज के सभी मीडियो चैनलों में प्रमुखता से खबर आयी कि अपराधी अमन साव को पुलिस ने एनकाउंटर में मार गिराया. सरकार को इस पूरी घटना पर स्पष्ट जानकारी देनी चाहिए. वहीं, इस मामले पर मंत्री सुदिव्य सोनू ने कहा कि झारखंड में कानून का राज है. पुलिस अपने तरीके से लड़ रही है. आत्मरक्षा में गोली चलाना गलत नहीं है. जो कानून व्यवस्था से बड़े बनेंगे, उसे हमारी पुलिस और सरकार सख्ती से निपटेगी.उधर बाबूलाल मरांडी समेत अन्य अनेकों ने झारखंड पुलिस एवं डी जी पी की मीडिया के सामने सराहना की है. सनद रहे कि अमन साव का नाम हाल ही में रांची के कोयला कारोबारी विपिन मिश्रा और हजारीबाग एनटीपीसी के डीजीएम कुमार गौरव पर हुई गोलीबारी में आया था. इसी सिलसिले में उससे पूछताछ के लिए रांची लाया जा रहा था. हालांकि अभी तक इस पूरे मामले में पुलिस के किसी अधिकारी का बयान सामने नहीं आया है.

"बुरा न मानो, होली है" मस्ती और ठिठोली का त्योहार होली।

-डॉ. सत्यवान 'सौरभ'

रंगों के त्यौहार के रूप में जाना जाने वाला यह जीवंत त्योहार, लोगों को एक-दूसरे पर ख़ुशी से रंगीन पाउडर और पानी फेंकने का है। ब्रज में, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के मथुरा-वृंदावन क्षेत्र में होली का उत्सव कृष्ण के बचपन और राधा और कृष्ण की कहानियों से गहराई से जुड़ा हुआ है, जिसमें कई दिनों तक जीवंत उत्सव मनाया जाता है। पंजाब के आनंदपुर साहिब में, होली के अगले दिन उत्सवों से भरा होता है, जिसमें सिख समुदाय के एक समूह द्वारा नकली लड़ाई और तीरंदाजी और तलवारबाजी की प्रतियोगिताएँ शामिल हैं। सबसे उत्साही और हर्षोल्लासपूर्ण हिंदू त्योहारों में से एक के रूप में, होली भारत में सभी क्षेत्रों के लोगों को एक साथ लाती है। कई भारतीय त्यौहारों की तरह होली का भी धार्मिक महत्व है। इस उत्सव से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध कहानी हिरण्यकश्यप की बहन होलिका की कहानी है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार, हिरण्यकश्यप एक राक्षस था जो भगवान विष्णु का विरोधी था, फिर भी उसका बेटा प्रह्लाद भगवान विष्णु का समर्पित भक्त था। अपने बेटे को ख़त्म करने के लिए हिरण्यकश्यप ने होलिका के साथ साज़िश रची, जिसके पास एक वरदान था जिससे वह आग से बच सकती थी। हालाँकि, इसका नतीजा हिरण्यकश्यप के इरादों के विपरीत था। जब होलिका प्रह्लाद के साथ आग में गई, तो वह जलकर मर गई जबकि प्रह्लाद सुरक्षित बच गया। इस घटना ने होली उत्सव की शुरुआत की। पौराणिक कथाओं में, भगवान कृष्ण को अक्सर काले रंग के साथ दिखाया जाता है, जबकि उनकी दोस्त राधा को गोरे रंग की बताया जाता है। इस अंतर के कारण कृष्ण को राधा से थोड़ी ईर्ष्या होने लगी और वह अक्सर अपनी माँ यशोदा से अपनी चिंताएँ व्यक्त करते थे। एक दिन यशोदा ने सुझाव दिया कि कृष्ण को राधा के चेहरे पर वह रंग लगाना चाहिए जो उन्हें पसंद हो। इसलिए, होली के दिन, कृष्ण ने राधा को अपनी पसंद का रंग पहनाया। तब से होली का त्यौहार कृष्ण के गृहनगर मथुरा और ब्रज में एक जीवंत उत्सव है। होली पूरे भारत में मनाई जाती है, लेकिन उत्तर में इसका विशेष महत्व है, जहाँ यह बुराई पर अच्छाई की जीत और प्रेम की दिव्य प्रकृति का प्रतीक है, जो भाईचारे और सद्भाव को बढ़ावा देता है। "बुरा न मानो" की भावना दिलों में भर जाती है जब दोस्त मेल-मिलाप करते हैं, गलतफहमियों को दूर करते हैं। यह सामूहिक क्षमा का समय है, जहाँ लोग प्यार को गले लगाते हैं और पिछली शिकायतों को भूल जाते हैं। होली से पहले के दिनों में, लोग अलाव के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा करते हैं, जश्न मनाने के लिए आग में डालने के लिए अनाज, नारियल और छोले जमा करते हैं और नृत्य का अभ्यास करते हैं। होलिका के पुतले बनाए जाते हैं और मुख्य उत्सव से एक रात पहले छोटी होली पर होलिका को जलाने से पहले गुझिया, मठरी और मालपुआ जैसे स्वादिष्ट मौसमी व्यंजन तैयार किए जाते हैं। हालाँकि, "छोटी" और "बड़ी" होली के उत्सव पूरे देश में अलग-अलग तरीके से मनाए जाते हैं। भारत की विशालता के कारण, प्रत्येक क्षेत्र के अपने अलग-अलग रीति-रिवाज और परंपराएँ हैं। उदाहरण के लिए, जो क्षेत्र ख़ुद को भगवान विष्णु का जन्मस्थान मानते हैं, वे दो सप्ताह से अधिक समय तक उत्सव मना सकते हैं, जबकि अन्य क्षेत्रों में, महिलाएँ पुरुषों की अस्थायी ढालों पर लाठी से प्रहार करती हैं और कुछ स्थानों पर, मज़ेदार चुनौती के लिए छाछ के बर्तन सड़कों पर ऊँचे लटकाए जाते हैं।

होली के दौरान, पुरुष और लड़के छाछ के बर्तन तक पहुँचने के लिए मानव पिरामिड बनाते हैं और जो इसे सबसे ऊपर उठाता है, उसे "होली का राजा" की उपाधि मिलती है। इस बीच, महिलाएँ और लड़कियाँ बाल्टी से पानी छिड़क कर उनका ध्यान भटकाने की कोशिश करती हैं। कई प्रतिभागी पुराने कपड़े पहनते हैं, सड़कों पर अबीर फैलाते हैं और ख़ुशी से "बुरा न मानो, होली है" या "नाराज मत हो, होली है" गाते हैं। होली एक ऐसा उत्सव है जो एकता और आनंद की भावना को दर्शाता है। हालाँकि यह त्यौहार मौज-मस्ती के लिए है, लेकिन इसे सम्मानजनक और अभद्रता से मुक्त रहना चाहिए। आजकल, कुछ युवा अनुचित व्यवहार करके होली के असली सार को छिपा रहे हैं। रासायनिक रंगों और गुब्बारों के इस्तेमाल ने त्यौहार की सुंदरता को कम कर दिया है और दुर्भाग्य से इस दौरान शराब पीना एक आम बात हो गई है। होली एक पवित्र अवसर है जो हमें खुशियाँ मनाने के लिए आमंत्रित करता है, इसलिए आइए सुनिश्चित करें कि यह किसी की ख़ुशी को कम न करे। होली को ऐसे सुरक्षित तरीके से मनाएँ जो आपके आस-पास के लोगों को आकर्षित करे। अपने उत्सव को जीवंत और प्राकृतिक रंगों से भरपूर बनाएँ।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023